वार्षिक प्रतिवेदन
2014–15

"It is education which is the right weapon to cut the social slavery and it is education which will enlighten the downtrodden masses to come up and gain social status, economic betterment and political freedom."

Dr BR Ambedkar

Ambedkar University Delhi

Ambedkar University Delhi
Annual Report 2014-15

Published by
The Registrar
Ambedkar University Delhi
Lothian Road, Kashmere Gate, New Delhi-110 006

Designed & Printed at
Amar Ujala Publications Limited
C-21, Sector-59, Noida-201301
Website: www.amarujala.com

अंतर्वस्तु

विश्वविद्यालय	5
विश्वविद्यालय की अध्ययनशालाएँ	22
विश्वविद्यालय के केन्द्र	71
एयूडी की अंतरराष्ट्रीय सहभागिता/साझेदारियाँ	95
प्रकाशन	98
विश्वविद्यालय के छात्र	108
विश्वविद्यालय की भौतिक परिसम्पत्तियाँ	112
परिशिष्ट	120

विश्वविद्यालय

अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली (एयूडी), राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली सरकार द्वारा 2007 में पारित विधानमंडल के अधिनियम द्वारा स्थापित किया गया। इसे जुलाई 2008 में अधिसूचित किया गया। डॉ० अम्बेडकर के विचारों समानता और सामाजिक न्याय सम्बन्धी निदेशन से प्रेरित यह विश्वविद्यालय समाज विज्ञान, मानविकी में शोध और अध्यापन को केन्द्र में रखते हुए अध्यादेशित है। एयूडी उच्च शिक्षा तक पहुँच एवम् सफलता के बीच सतत् और प्रभावी संपर्क निर्धारित करने को अपना लक्ष्य समझता है। एयूडी मानवता, गैर–पद्सोपानीकरण, सामूहिक कार्य और सृजनात्मकता को परिपोषित करने के लिये प्रतिबद्ध है। वर्तमान में यह कश्मीरी गेट में लोथियान रोड पर स्थित परिसर से अपने सभी कार्य संचालित कर रहा है। इस परिसर को यह गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय एवं इंदिरा गाँधी महिला तकनीकी विश्वविद्यालय दिल्ली के साथ बांटता है।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के उच्च शिक्षा विभाग ने एयूडी को परिसर– निर्माण के लिए दो स्थानों पर भूमि प्रदान की है। इसमें से एक रोहिणी सेक्टर–3 (7.02 हक्टेयर) में और दूसरी धीरपुर फेज–1 (20 हक्टेयर) में स्थित है। दोनों स्थानों पर परिसर बनाने का कार्य जारी है।

सभी अकादमिक गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय ने अध्ययनशालाओं एवं केन्द्रों के साथ विकेंद्रीकृत संरचना को अपनाया है। इसने अपने अध्ययनशालाओं, केन्द्रों एवं कार्यक्रमों की कल्पना नयी संभावनाओं को तलाशने के लिए की है। इन संभावनाओं को आकार देने के लिए इन्होनें एक ऐसे प्रारूप को अपनाया है जो अंतर्विषयक पद्धतियों के साथ अनिवार्य रूप से कार्य करें। साथ ही अध्ययनशाला की अवधारणा को इस प्रकार से निरुपित किया गया है कि इसका प्रत्येक कार्यक्रम अंतर्विषयक रूप में संरचित हो। हालाँकि अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्रों की संकल्पना शोध परियोजना, अधिवक्तृत्व नीति, प्रशिक्षण, अभियन्त्रीकरण और गृह–कार्य समाशोधन के अनुरुप की गयी है ताकि समकालीन महत्त्व के क्षेत्रों को और अधिक बढ़ावा मिल सके।

संकल्पना

विश्वविद्यालय ललित कलाओं, मानविकी और समाज विज्ञानों पर विशेष ध्यान के साथ उच्चतर शिक्षा में अध्ययनों, शोधों और विस्तार कार्य को बढ़ावा देने के प्रति प्रतिबद्ध है। यह समाज के स्थायित्व और समाज के विसंतुलन के कारकों का विश्लेषण करना और इसका पता लगाना चाहता है कि सामाजिक विकास किस प्रकार एक ऐसे परिवार का मार्ग प्रशस्त कर सकता है जिसमें लोग अपना पूर्ण मानवीय विभव प्राप्त कर सकें।

दर्शन

समता, सामाजिक न्याय व उच्च गुणवत्ता अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली के दर्शन और मूल्यों के सुदृढ़ आधार का निर्माण करते हैं। एक सार्वजनिक संस्थान के रूप में, एयूडी स्वयं को सामाजिक परिवर्तन के उपकरण के रूप में देखता है और सभ्य (सिविल) समाज व राज्य के अंतराफलक पर सामाजिक क्रियाकलाप पर ध्यान देता है।

लक्ष्य

विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञानों और मानविकी में उच्चतर शिक्षा की उच्च गुणवत्ता के प्रति प्रयासरत है। उच्चतर शिक्षा की सुविधा और सफलता के बीच एक स्थायी और प्रभावशील कड़ी का निर्माण करना एयूडी का मुख्य लक्ष्य है। एयूडी मानववाद, गैर–सोपानिकता और महाविद्यालयीय कार्यकलाप, सामूहिक कार्य और सृजनात्मकता के पोषण से द्योतित सांस्थानिक संस्कृति के सृजन के प्रति प्रतिबद्ध है।

उद्देश्य

विश्वविद्यालय को ललित कलाओं, मानविकी और समाज विज्ञान पर ध्यान के साथ उच्च गुणवत्तापूर्ण व्यापक उच्चतर शिक्षा विकसित और प्रदान करने का दायित्व सौंपा गया है। इसे दूरस्थ और सतत् शिक्षा के संचालन का अधिदेश दिया गया है। उच्च गुणवत्ता का पालन करने वाले किसी अन्य विश्वविद्यालय की तरह, इससे भी उन्नत अध्ययनों का आयोजन करने और शोध को बढ़ावा देने, व्याखानमालाओं, परिसंवादों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और सम्मेलनों का आयोजन करते हुए ज्ञान व कार्य प्रक्रियाओं का वितरण करने और भारत व अन्य देशों में उच्चतर शिक्षण एवं शोध संस्थाओं से

संपर्क करने की अपेक्षा की जाती है। इससे शोध विनंबंधों, प्रबंधों, पुस्तकों, प्रतिवेदनों और पत्रिकाओं के प्रकाशन की अपेक्षा जाती है। उद्देश्यों को विस्तार देने के साथ ही, इससे सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने की अपेक्षा भी की जाती है।

शैक्षिक संरचना

एयूडी की एक संकाय (प्राध्यापक वर्ग) संरचना है जिसमें पूर्णकालिक, नियमित, मुख्य प्राध्यापक और अंशकालिक, अतिरिक्त, अतिथि और मानद प्राध्यापकों का प्रावधान है। इस विस्तृत प्राध्यापक–वर्ग में शिक्षण सहायकों के रूप में वरिष्ठ स्नातकोत्तर एवं शोध छात्र भी शामिल हैं। विश्वविद्यालय की शिक्षा कार्मिक नीति इसकी योजना अभिव्यक्ति में उल्लिखित सरोकारों को कई भारतीय विश्वविद्यालयों की संरचनाओं एवं प्रक्रियाओं की तुलना में अधिक प्रभावशाली ढंग से परिलक्षित करने हेतु तैयार की गई है। अपने सभी कार्मिकों में साझा शासन की भावना को प्रोत्साहित करने और विश्वविद्यालय के बीजीय मूल्यों और दर्शन को बल और स्थायित्व प्रदान करने वाली कार्य संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु यह सुनिश्चित करना विश्वविद्यालय का कार्य होगा कि कार्यकलापों का संचालन एक पारदर्शी, क्रमबद्ध, समुचित एवं न्यायसम्मत ढंग से हो। आरक्षणों के लिए संविधान में अधिदेशित प्रावधानों–उपबंधों का पालन करते हुए, यह सभी के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने, और विशेष रूप से बहाली में लैंगिक–संवेदनशीलता की एक अग्र–सक्रिय नीति लागू करने का प्रयास भी करेगा।

विश्वविद्यालय का शासन

विश्वविद्यालय प्राधिकारियों को संगठनात्मक ढांचा

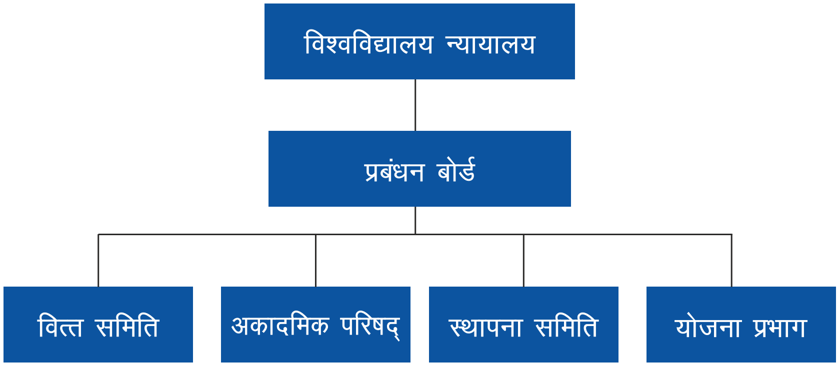

* प्रस्तावित

निर्णायक मंडल के सदस्य

श्री नजीब जंग, कुलाधिपति
प्रोफेसर श्याम बी मेनन, कुलपति
प्रोफेसर एसआर हाशिम, जीएनसीटीडी द्वारा नामित
डॉ. किरण कार्णिक, जीएनसीटीडी द्वारा नामित
प्रोफेसर दीपक नय्यर, जीएनसीटीडी द्वारा नामित
प्रोफेसर के सच्चिदानंदन, जीएनसीटीडी द्वारा नामित
न्यायमूर्ति लीला सेठ, जीएनसीटीडी द्वारा नामित
प्रधान सचिव, वित्त, जीएनसीटीडी
सचिव, उच्चतर शिक्षा एवं टीटीई, जीएनसीटीडी
सचिव, कला और संस्कृति, जीएनसीटीडी
प्रोफेसर उमेश राय, प्रतिनिधि, यूजीसी
श्री राजीव काले, कुल सचिव, गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय
प्रोफेसर जतिन भट्ट, कुल सचिव (कार्यवाहक) एवं सचिव, निर्णायक मंडल

विश्वविद्यालय का संगठनात्मक ढांचा

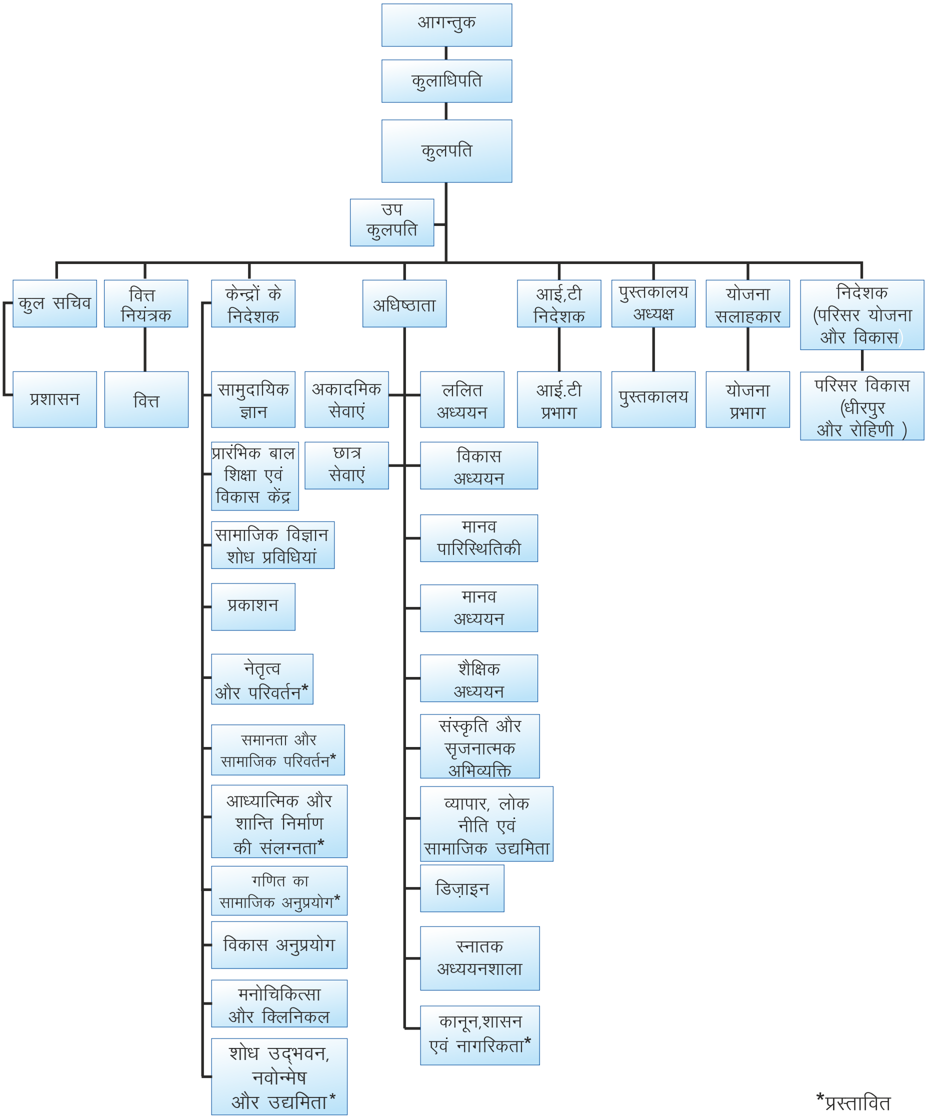

*प्रस्तावित

प्रबंधन मंडल के सदस्य

प्रोफेसर श्याम बी मेनन, कुलपति
प्रोफेसर अर्मेती देसाई, जीएनसीटीडी द्वारा नामित
प्रोफेसर एनआर माधव मेनन, जीएनसीटीडी द्वारा नामित
डॉ. किरण दातार, जीएनसीटीडी द्वारा नामित
प्रोफेसर कुरियाकोस ममकूट्टम, कुलपति द्वारा नामित
प्रोफेसर चंदन मुखर्जी, कुलपति द्वारा नामित
प्रोफेसर अशोक नागपाल, कुलपति द्वारा नामित
प्रधान सचिव, वित्त, जीएनसीटीडी
सचिव, उच्चतर शिक्षा एवं टीटीई, जीएनसीटीडी
प्रोफेसर जतिन भट्ट, कुल सचिव (कार्यवाहक) एवं सचिव, प्रबंधन मंडल

अकादमिक परिषद् के सदस्य (एसी)

प्रोफेसर श्याम बी मेनन, कुलपति
प्रोफेसर अशोक चटर्जी, जीएनसीटीडी द्वारा नामित
प्रोफेसर के रामचंद्रन, जीएनसीटीडी द्वारा नामित
डॉ राजा मोहन, जीएनसीटीडी द्वारा नामित
डॉ. मैथ्यू वर्गीस, जीएनसीटीडी द्वारा नामित
डॉ. अनुराधा कपूर, जीएनसीटीडी द्वारा नामित
प्रोफेसर एके शर्मा, यूजीसी द्वारा नामित
प्रोफेसर अशोक नागपाल, कुलपति द्वारा नामित
प्रोफेसर डेनिस पी , कुलपति लेइटन द्वारा नामित
प्रोफेसर गीता वेंकटरमन, कुलपति द्वारा नामित
संकायाध्यक्ष, व्यवसाय अध्ययनशाला, सार्वजनिक नीति और सामाजिक उद्यमिता
संकायाध्यक्ष, संस्कृति एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययनशाला
संकायाध्यक्ष, विकास अध्ययन अध्ययनशाला
संकायाध्यक्ष, डिजाइन अध्ययनशाला
संकायाध्यक्ष, शिक्षा अध्ययन, अध्ययनशाला

संकायाध्यक्ष, मानव पारिस्थितिकी अध्ययनशाला
संकायाध्यक्ष, मानव अध्ययन, अध्ययनशाला
संकायाध्यक्ष, ललित कला अध्ययनशाला
संकायाध्यक्ष, स्नातक अध्ययनशाला
डॉ. सुमंगला दामोदरन, कुलपति द्वारा नामित
डॉ. प्रवीण सिंह, कुलपति द्वारा नामित
प्रोफेसर सलिल मिश्र, संकायाध्यक्ष, अकादमिक सेवाएँ एवं समन्वयक, अकादमिक परिषद्
प्रोफेसर जतिन भट्ट, कुल सचिव (कार्यवाहक) एवं सचिव, अकादमिक परिषद्

वित्त समिति के सदस्य (एफसी)

प्रोफेसर श्याम बी मेनन, कुलपति
सचिव, उच्चतर शिक्षा एवं टीटीई विभाग, जीएनसीटीडी
प्रधान सचिव, वित्त विभाग, जीएनसीटीडी
डॉ. किरण दातार, प्रबंधन बोर्ड द्वारा नामित
प्रोफेसर चंदन मुखर्जी, प्रबंधन के नामित बोर्ड
वित्त नियंत्रक, पदेन सदस्येतर सचिव

स्थाापना समिति के सदस्य (ईसी)

प्रोफेसर श्याम बी मेनन, कुलपति
डॉ. किरण दातार, प्रबंधन बोर्ड द्वारा नामित
प्रोफेसर अशोक नागपाल, कुलपति द्वारा नामित
प्रोफेसर चंदन मुखर्जी, कुलपति द्वारा नामित
प्रोफेसर जतिन भट्ट, कुल सचिव (कार्यवाहक) एवं सचिव, स्थापना समिति

सांविधिक निकायों/प्राधिकारियों की बैठक

निर्णायक मंडल की चौथी बैठक	18.12.2014
प्रबंधन मंडल की 16वीं बैठक	04.04.2014
प्रबंधन मंडल की 17वीं बैठक	07.10.2014
अकादमिक परिषद् की 6ठी बैठक	24.06.2014
वित्त समिति की 11वीं बैठक	21.07.2014
स्थापना समिति की 11वीं बैठक	04.07.2014
स्थापना समिति की 12वीं बैठक	15.12.2014

अध्ययन मंडल

विश्वविद्यालय ने निम्नलिखित अध्ययनशालाओं के लिए अध्ययन मंडल का गठन किया है:

- व्यवसाय, सार्वजनिक नीति और सामाजिक उद्यमिता अध्ययनशाला
- संस्कृति एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययनशाला
- डिजाइन अध्ययनशाला
- विकास अध्ययनशाला
- शैक्षिक अध्ययनशाला
- मानव पारिस्थितिकी अध्ययनशाला
- मानव अध्ययनशाला
- ललित अध्ययनशाला
- स्नातक अध्ययनशाला

अध्ययनशाला एवं केंद्र

विश्वविद्यालय में विस्तृत स्तर पर अध्ययनशाला और केंद्रों का गठन किया गया है। यह शिक्षा और व्यावसायिक विशेषज्ञताओं पर ध्यान देता है जो हमारे संदर्भ में सार्थक हैं और फिर भी देश के अन्य विश्वविद्यालय इन हिस्सों पर पर्याप्त बल नहीं देते।

एयूडी में संप्रति नौ अध्ययनशालाएं हैं, जहाँ समाज विज्ञान, कला, मानविकी, गणित विज्ञान और ललित कला अध्ययन में स्नातक, स्नातकोत्तर और शोध कार्यक्रमों की शिक्षा का प्रावधान है। ये अध्ययनशाला इस प्रकार हैं :

- व्यवसाय, लोक नीति एवं सामाजिक उद्यमिता अध्ययनशाला
- संस्कृति एवं सर्जनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययनशाला
- डिजाइन अध्ययनशाला
- विकास अध्ययनशाला
- शिक्षा अध्ययनशाला
- मानव पारिस्थितिकी अध्ययनशाला
- मानव अध्ययनशाला
- ललित अध्ययनशाला
- स्नातक अध्ययनशाला

अल्प ज्ञात अथवा उपेक्षित क्षेत्रों शोध व ज्ञान के प्रसार को सरल करने हेतु विश्वविद्यालय ने कई केंद्रों की स्थापना की है। एयूडी के केंद्र परियोजना आधारित शोध, नीति प्रतिपालन, क्षमता–निर्माण और समुदाय के साथ संपर्क–तंत्र के लिए विशिष्ट स्थलों के रूप में जाने जाते हैं। एयूडी में संप्रति निम्नलिखित केंद्र कार्यरत हैं :

- सामुदायिक शिक्षा केंद्र
- विकास प्रणाली केंद्र
- शिशु शिक्षा एवं विकास केंद्र
- मनोचिकित्सा एवं नैदानिक शोध केंद्र
- प्रकाशन केंद्र
- समाज विज्ञान शोध प्रणाली केंद्र

इन अध्ययनशालाओं एवं केंद्रों में स्नातक के सात, स्नातकोत्तर के सत्रह, स्नातकोत्तर डिप्लोमा के दो, एम फिल के पाँच और पीएच.डी. के नौ कार्यक्रमों का प्रावधान है।

नामांकन प्रक्रिया

बीए एवं एमए कार्यक्रमों के नामांकन की प्रक्रिया मई–जून में और एम फिल व पीएच.डी. की जुलाई–अगस्त में आरंभ होती है।

सीटों का आरक्षण

सभी नामांकनों में टीएच, यूएलएचवीएचएमएच के आरक्षण के मानकों का पालन किया जाता है।

विदेशी छात्रों का नामांकन

प्रत्येक कार्यक्रम में विदेशी छात्रों के लिए कुछ सीटें आरक्षित हैं।

शुल्क

एयूडी के एक कार्यक्रम से दूसरे कार्यक्रम की शुल्क संरचना में अंतर होता है। शुल्क सीमा प्रति शाख 1000/– रुपये से 2000/– रुपये के बीच होता है। इसके अतिरिक्त, छात्र कल्याण कोष हेतु 500/– रुपये प्रति सत्र और नामांकन के समय जमानती राशि के रूप में 500/– रुपये की एक प्रतिदेय राशि ली जाती है।

शुल्क माफी एवं छात्रवृत्तियाँ

छात्रों की आर्थिक पृष्ठभूमि के मद्देनजर विश्वविद्यालय में जरूरतमंद छात्रों की सहायता के लिए शुल्क की पूर्ण माफी अथवा आंशिक शुल्क का प्रावधान है। छात्रों से लिए गए शुल्क का बीस प्रतिशत अधित्याग और छात्रवृत्तियों के रूप में आर्थिक रूप से वंचित छात्रों को वापस कर दिया जाता है। इस शैक्षणिक वर्ष में कई छात्रों को शुल्क में माफी दी गई है, इनमें ज्यादातर पूर्ण शुल्क की माफी है।

छात्रों का चयन

योग्यता मानदंड और चयन प्रक्रियाएँ कार्यक्रम पर निर्भर करती हैं। बीए कार्यक्रमों के लिए छात्रों का चयन मेधा (योग्यता) पर और एमए, एम फिल तथा पीएच.डी. कार्यक्रमों के लिए चयन लिखित परीक्षा व साक्षात्कार के आधार पर होता है।

द्वितीयक (पूरक/आनुषंगिक) प्रवेश समिति

यह समिति अध्ययन के किसी कार्यक्रम में पूरक (आनुषंगिक) प्रवेश की प्रक्रिया को सरल बनाती है।

छात्र कल्याण कोष

छात्रों के कल्याण से जुड़ी विभिन्न जरूरतों, जैसे आकस्मिक चिकित्सा सहायता, पुस्तकों और अध्ययन सामग्री की खरीद, एयूडी की छात्रावास सुविधाओं की राशि के समतुल्य भोजन एवं आवास व्यय और छात्रों की किसी भी अन्य तुल्य जरूरत को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय में एक छात्र कल्याण कोष का गठन किया गया है।

छात्रों से प्रति सत्र 500/– रुपये की राशि ली जाती है और इतनी ही राशि का योगदान विश्वविद्यालय भी करता है। कोष का प्रबंध और निगरानी एक समिति करती है, जिसमें छात्र समुदाय का एक नामित छात्र शामिल होता है।

शुल्क संरचना और छूटों के जरिए, एयूडी अपने छात्रों के बीच समाज के प्रति संवेदनशीलता का संचार करता है ताकि उनके विशेषाधिकारों का सम्मान हो तथा वे भविष्य में अपनी व्यावसायिक क्षमताओं का समाज को योगदान दे सकें।

छात्रावास सुविधाएँ

पुरुष छात्रावास

एयूडी के पुरुष छात्रों के लिए छात्रावास की वर्तमान में कोई सुविधा नहीं है।

महिला छात्रावास

छात्राओं के लिए एयूडी को आइजीडीटीयूडब्ल्यू के ईस्ट हॉस्टल का 45 छात्रों की क्षमता वाला ऊपरी तल दिया गया है। इस छात्रावास की देखरेख आइजीडीटीयूडब्ल्यू के वॉर्डेन करते हैं।

शैक्षिक वर्ष 2014–15 के दौरान, इस छात्रावास में 44 छात्राओं का दाखिला किया गया था। सीटों के आवंटन में आरक्षण नीति का दृढ़ता से पालन किया गया।

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के जिन योग्य छात्राओं ने छात्रावास के लिए आवेदन किया था, उन्हें यह सुविधा दी गई। किंतु, इस वर्ग की छात्राओं की अनुपलब्धता की स्थिति में सीटें सामान्य वर्ग की छात्राओं को प्रदान की गईं। वर्ग–वार छात्रों को सीटों के वितरण का विवरण इस प्रकार है :

वर्ग	संख्या
सामान्य	27
अनुसूचित जाति	05
अनुसूचित जनजाति	10
अन्य पिछड़ा वर्ग	02

रैगिंग–रोधी प्रणाली

सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशानुसार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्मित रैगिंग–रोधी विनियमों के अनुरूप, विश्वविद्यालय ने एक रैगिंग–रोधी समिति और एक रैगिंग–रोध दस्ते का गठन किया। इसका विस्तृत विवरण नीचे प्रस्तुत है।

रैगिंग—रोधी समिति

नाम	पद नाम	ई—मेल आइडी
जतिन भट्ट	कुल सचिव (कार्यवाहक) अध्यक्ष	*registrar@aud.ac.in*
हनी ओबेरॉय वहाली	प्रोफेसर एवं डीन, एसएचएस	*honey@aud.ac.in*
सलिल मिश्र	प्रोफेसर	*salil@aud.ac.in*
कर्तिक दवे	सहयोगी प्रोफेसर	*kartik@aud.ac.in*
बेनिल विश्वास	सहायक प्रोफेसर	*benil@aud.ac.in*

रैगिंग—रोधी दस्ता

नाम	पद नाम	ई—मेल आइडी
अस्मिता काबरा	डीन, एसएचई	*asmita@aud.ac.in*
सुचित्रा बालासुब्रह्मण्यम	सहयोगी प्रोफेसर	*suchitra@aud.ac.in*
गोपालजी प्रधान	सहयोगी प्रोफेसर	*gopalji@aud.ac.in*
धीरेंद्र दत्त डंगवाल	सहयोगी प्रोफेसर	*dhirendra@aud.ac.in*
के वैलेंटिना	सहायक प्रोफेसर	*valentina@aud.ac.in*
मनीष जैन	सहायक प्रोफेसर	*manish@aud.ac.in*
ममता करोलिल	सहायक प्रोफेसर	*mamatha@aud.ac.in*
बेनिल विश्वास	सहायक प्रोफेसर	*benil@aud.ac.in*
नीतू सरीन	सहायक प्रोफेसर	*neetu@aud.ac.in*
तनुजा कोठियाल	सहायक प्रोफेसर एवं वार्डेन	*tanuja@aud.ac.in*

मानव संसाधन विभाग

एयूडी प्रशासन के एक सीधे और सरल ढाँचे का पालन करता है। विश्वविद्यालय में कर्मचारी वर्ग की संरचना और कर्मचारियों की नियुक्ति के मानक विभागों में सोपानों एवं

तलों की बजाय कार्य एवं परिणाम उन्मुखी हैं। ज्यादातर कर्मचारियों से बहुविध कार्यों में प्रशिक्षित होने की अपेक्षा की जाती है। विश्वविद्यालय वरिष्ठ वर्ग की अपनी अधिकांश नियुक्तियों के लिए कार्यकाल नियत रखने का प्रयास करता है। दो–तिहाई नियुक्तियाँ संविदात्मक अथवा प्रतिनियुक्ति के आधार पर और सभी स्तरों पर कम से कम एक–तिहाई नियुक्तियाँ नियमित करने का विचार है। प्रशासनिक संरचना के प्रति विश्वविद्यालय की नीतियों और पदों की समीक्षा सामान्यतः तीन वर्षों में एक बार की जाती है।

आरटीआई सूचना के पदाधिकारी

प्रथम अपीलीय प्राधिकारी एवं सार्वजनिक सूचना पदाधिकारी इस प्रकार हैं :

प्रथम अपीलीय प्राधिकारी	:	जतिन भट्ट, कुल सचिव (कार्यवाहक)
सार्वजनिक सूचना पदाधिकारी	:	पुनीत गोयल, सहायक कुल सचिव (योजना)
संपर्क पदाधिकारी	:	डायमंड ओबेरॉय वहाली, सहयोगी प्रोफेसर, एसएलएस

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए संपर्क पदाधिकारी

विश्वविद्यालय में नियुक्तियों एवं प्रवेशों में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के हित में आरक्षण नीति के प्रभावशील क्रियान्वयन हेतु, एयूडी में एसएलएस के सहयोगी प्रोफेसर डायमंड ओबेरॉय वहाली को नामित किया गया है।

पाठ्येतर गतिविधियाँ

महाविद्यालयों में छात्रों के सांस्कृतिक एवं पाठ्येतर जीवन को समृद्ध करने के ध्येय से एयूडी में कतिपय छात्र सभाओं/मंचों का गठन किया गया है। छात्र रंगमंच, खेल–कूद, वाद–विवाद में और साहित्य सभा के साथ सक्रियता से भाग लेते हैं। अर्थशास्त्र सभा और दृश्य संस्कृति भी सक्रिय हैं। छात्रों के लिए नियमित रूप से वार्ताओं, व्याख्यानों, प्रदर्शनों एवं अभिनय प्रस्तुतियों का आयोजन किया गया।

एयूडी / सिटी 2014

वर्ष 2011 से एयूडी / सिटी 2014 नामक अंतर–विश्वविद्यालय उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। समस्त दिल्ली के छात्र रंगमंच, रंगोली, चित्रकला, नृत्य, वाद–विवाद, फोटाग्राफी, प्रश्नोत्तरी, शोध प्रस्तुति आदि की प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं। इन कार्यक्रमों में बहु–व्यंजनी भोजन के स्टॉल इनकी शोभा को और बढ़ा देते हैं।

स्पोर्ट्स / एयूडी

एयूडी के जीवन के वार्षिक आकर्षणों के रूप क्रीड़ा समिति खेल–कूद कार्यक्रमों की एक श्रृंखला तैयार कर रही है। क्रीड़ा समिति छात्रों के साथ कार्य करती है जो खेल–कूद कार्यक्रमों की योजना और आयोजन में सक्रियता से भाग लेते हैं। क्रीड़ा समिति की सामान्य सभा क्रीड़ा मंडल में एयूडी के विभिन्न अध्ययनशालों से निर्वाचित छात्र सदस्यों को प्रतिनिधि के रूप में शामिल किया जाता है। खेल–कूद गतिविधियों में सहायता करने, छात्रों को प्रशिक्षण देने और एयूडी का प्रतिनिधित्व करने हेतु छात्रों का चयन करन के लिए एयूडी पेशेवर प्रशिक्षकों की एक सूची भी तैयार कर रहा है।

करिअर प्रकोष्ठ

एयूडी जीवन चर्या (करिअर) प्रकोष्ठ (एयूडीसीसी) की स्थापना छात्रों और बाहरी विश्व के बीच अन्योन्य क्रिया हेतु की गई है। एयूडीसीसी छात्रों को प्रशिक्षण देने वाली विभिन्न संस्थाओं की पहचान, और छात्रों के विभिन्न हितों के अनुरूप, छात्र एवं इन संस्थाओं के बीच संपर्क सूत्र का कार्य करता है।

पूर्व छात्र संस्था

यद्यपि कुछ अध्ययनशालाओं/कार्यक्रमों ने भूतपूर्व छात्रों के लिए अपने स्तर पर संगठन बना दिये हैं, फिर भी एयूडी एक विश्वविद्यालय–व्यापी पूर्व छात्र संगठन की स्थापना की तैयारी कर रहा है।

छात्र गतिविधियाँ

भाषा प्रकोष्ठ

हालाँकि एयूडी में अध्यापन का माध्यम अंग्रेजी है, फिर भी एयूडी के विभिन्न कार्यक्रमों में विभिन्न भाषा–भाषी छात्रों को प्रवेश हेतु आवेदन के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। छात्रों के उनके अंग्रेजी में पठन, लेखन एवं बोध कौशलों में सुधार में सहायता हेतु एक भाषा प्रकोष्ठ का गठन किया गया है।

परामर्श (संरक्षण) एवं सलाह

एयूडी का लक्ष्य छात्रों को उनकी पृष्ठभूमि के परे न केवल उच्चतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुलभ कराना है बल्कि यह देखना भी है कि सभी छात्र उच्चतर शिक्षा की प्रक्रियाओं से सरलता एवं सफलतापूर्वक अवगत हों। विश्वविद्यालय प्रत्येक छात्र/छात्रा के विश्वविद्यालय के शैक्षिक एवं सामाजिक विस्तार में पड़ावों की तलाश में संघर्ष करने में उसकी सहायता का प्रयास करता है। इसे सुकर करने हेतु विश्वविद्यालय में परामर्श एवं सलाह की एक प्रणाली का गठन किया गया है।

छात्र प्रकोष्ठ

छात्र प्रकोष्ठ छात्र सेवाओं एवं छात्रों के बीच एक संपर्क सूत्र के रूप में काम करता है। यह छात्रों के समक्ष आने वाली कठिनाइयों को दूर करने में उनकी सहायता करता है और हर संभव तरीके से उन्हें सहायता उपलब्ध कराता है।

व्यवसाय, लोक नीति (सार्वजनिक नीति) एवं सामाजिक उद्यमिता अध्ययनशाला

एसबीपीपीएसई की स्थापना शोध एवं व्यावसायिक शिक्षा तथा प्रबंधन, लोक नीति व सामाजिक उद्यमिता में प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई है। एसबीपीपीएसई का प्रयास समाज व अर्थव्यवस्था के बृहत्तर संदर्भ के भीतर व्यवसाय एवं लाभ की एक सर्वांगीण पद्धति का विकास करना है। अध्ययनशाला जुलाई 2012 से व्यवसाय प्रबंधन में दो वर्ष का (पूर्णकालिक) स्नातकोत्तर (एमबीए) और वर्ष 2014 से सामाजिक उद्यमिता में दो वर्ष का (पूर्णकालिक) स्नातकोत्तर (एमएएसई) का कार्यक्रम प्रदान कर रहा है। वर्ष 2013 से अध्ययनशाला प्रकाशन में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पीजीडीपी) का कार्यक्रम भी प्रदान कर रहा है। अध्ययनशाला ने एयूडी आरंभन, नवाचार एवं उद्यमिता केंद्र की स्थापना की पहल शुरू की है जो कंपनी अधिनियम (2013) के तहत एक लाभ निरपेक्ष कंपनी के रूप में गठन की प्रक्रिया में है।

एमबीए (दो–वर्षीय, पूर्णकालिक)

दो–वर्षीय (पूर्णकालिक) एमबीए कार्यक्रम का अभिप्रेत भविष्य के प्रबंधकों को व्यावसायिक शिक्षा देना, इस कार्य में पहले से ही रत कार्मिकों के ज्ञान एवं कौशलों का उत्थान व नवीकरण करना और नए उद्यम आरंभ करने हेतु भागीदारों में ज्ञान एवं कौशलों का विकास करना है। कार्यक्रम धन प्रबंधन के साथ–साथ धन सृजन पर ध्यान केंद्रित करता है। कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व के सरोकारों को पूरा करने हेतु भविष्य/वर्तमान के प्रबंधकों को ज्ञान और पेशा जन्य कौशल प्रदान करते हुए कार्यक्रम बृहत्तर सामाजिक–आर्थिक सरोकारों के प्रति संवेदनशीलता, उद्यम संरचना (और रोजगार सृजन) के महत्व पर जागरूकता का संचार करने का प्रयास करता है।

दो वर्षीय (पूर्णकालिक) एमबीए कार्यक्रम का पाठ्यक्रम नवोन्मेषी पाठ्यक्रम संरचना पर आधारित है, जिसमें प्रबंधन शिक्षा में नवीनतम विकासक्रम को शामिल किया गया है।

नवीन प्रबंधन के सभी सिद्धांत और अवधारणाएँ प्रदान करते समय, एमबीए कार्यक्रम की विशिष्टता बृहत्तर समाज एवं अर्थव्यवस्था के समग्र संदर्भ के भीतर व्यवसाय एवं लाभ के प्रति उसका आग्रह है। पाठ्यक्रम की रूपरेखा छात्रों के आसपास के जगत के प्रति उनकी सोच, कार्य एवं समझ में मूलभूत परिवर्तन लाने के ध्येय से तैयार की गई है। सैद्धांतिक अवधारणाओं की शिक्षा और अनुप्रयोग कौशलों का एक वातावरण तैयार करने के अतिरिक्त, कार्यक्रम व्यावहारिक कौशलों (लौकि कौशल) के महत्व पर ध्यान देता है।

ग्रीष्मावकाश के दौरान, छात्रों को 8 से 10 सप्ताह का एक प्रशिक्षण दिया जाता है। शिक्षक वर्ग के सदस्यों के मार्गदर्शन में किसी विषय पर छात्र जो अनुभवमूलक शोध शुरू करते हैं उस पर आधारित एक परियोजना प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की उनसे अपेक्षा की जाती है। एमबीए कार्यक्रम के सभी छात्रों को उनके अध्ययन दौरान एक अतिरिक्त भाषा (विदेशी) की शिक्षा दी जाती है।

एमए सामाजिक उद्यमिता (दो वर्षीय, पूर्णकालिक)

अध्ययनशाला की दूरदर्शिता का अनुसरण करते हुए और सामाजिक उद्यमिता के बढ़ते महत्व के मद्देनजर, वर्ष 2014 में अध्ययनशाला ने सामाजिक उद्यमिता (एमएएसई) में एमए का एक दो वर्षीय (पूर्णकालिक) कार्यक्रम शुरू किया। कार्यक्रम का पहला वर्ष एमबीए के पहले वर्ष के समान है, जबकि दूसरे वर्ष में अवधारणाओं, समस्याओं और सामाजिक उद्यमिता की कार्य प्रणालियों पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है और उन्हें एयूडी आरंभन, नवाचार एवं उद्यमिता केंद्र की गतिविधियों से जोड़ा जाता है।

कार्यक्रम के छात्रों को विक्रय, विपणन, संचालन, मानव संसाधन प्रबंधन एवं रणनीतिक प्रबंधन में कोर व्यवसाय प्रबंधन कौशल प्रदान किए जाते हैं, जो सार्वजनिक, निजी या विकास क्षेत्र में सभी संगठनों के प्रबंध के लिए आवश्यक हैं। साथ ही, कार्यक्रम हमारे समाज के समक्ष खड़ी समकालीन समस्याओं के प्रति गहरी संवेदनशीलता और समझ का विकास करने का प्रयास करता है और छोटे व मझोले उद्यमों की भूमिका पर ध्यान देता है, जो हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। सबसे बढ़कर, एमएएसई भागीदारों को सृजनात्मक एवं नवोन्मेषी समाधानों का पता लगाते हुए नए व्यवसाय शुरू करने के लिए अपेक्षित, खास कर सामाजिक क्षेत्र में, विशिष्ट कौशलों का पता लगाने के योग्य बनाता

है। कार्यक्रम की संरचना मुख्य व्यवसाय कौशलों का निर्माण एवं संवर्धन करने, सामाजिक–राजनीतिक एवं पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता पैदा करने और समस्या समाधान हेतु सृजनात्मक सोच, सामाजिक नवाचार एवं उद्यमी पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए की गई है। यहाँ प्रयास व्यवसायों में ऐसे नवोन्मेषी कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने का किया जाता है, जो लाभार्थ एवं लाभ–निरपेक्ष संगठनों के माध्यम से सामाजिक प्रभाव का विस्तार कर सकें।

अधिगम सामाजिक सरोकारों से जुड़े विषयों के अध्ययन–पठन, गतिविधियों व अनुरूपणों पर मिश्र अनुचिंतनों और सामाजिक उद्यमियों और उद्यमों के ज्वलंत मामलों की गंभीर चर्चा–परिचर्चाओं पर आधारित है। सामूहिक कौशल के प्रोन्नयन हेतु अभीष्ट परस्पर एवं समूह शिक्षा पर बल दिया जाता है। सैद्धांतिक अवयवों को व्यावहारिक प्रशिक्षण से जोड़ा जाता है, और छात्रों को क्षेत्र आधारित परियोजनाओं के माध्यम से कक्षा की शिक्षा को यथार्थ जीवन की स्थितियों में उतारने को प्रोत्साहित किया जाता है। छात्रों को अध्ययन निधान का निर्माण और शोध के मौजूदा क्षेत्र में योगदान करने को प्रेरित किया जाता है। छात्रों को उनके आसपास के सामाजिक सरोकारों से अवगत कराने के लिए कार्यशाला/परिसंवाद पाठ्यक्रमों के रूप में पहले वर्ष तीन पाठ्यक्रम प्रदान किए जाते हैं।

प्रकाशन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (एक–वर्षीय)

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (एनबीटी) के सहयोग से, एसबीपीपीएसई ने जुलाई 2013 में एक एक–वर्षीय 'प्रकाशन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा' शुरू किया। यह प्रकाशन उद्योग में तेजी से आ रहे बदलावों को देखते हुए, 21वीं सदी में प्रकाशन के क्षेत्र के प्रति नवागंतुकों को आकर्षित और मौजूदा प्रकाशन व्यवसायियों को 'पुनर्प्रशिक्षित' करने हेतु आवश्यक है। ध्यातव्य यह भी है कि तेजी से बदलते इस उद्योग ने प्रकाशन में 'व्यवसाय' तत्व के महत्व को और आगे बढ़ा दिया है। इस हेतु, एयूडी कार्यक्रम का लक्ष्य अध्यवसायियों का एक वर्ग तैयार करना है, जो कुशल और उद्यमशील हों। आशा की जाती है कि प्रकाशन में जीवन वृत्त की संभावनाओं और व्यवसाय अवसरों के संदर्भ में कार्यक्रम संवर्धित मूल्य का सृजन करेगा।

एयूडी उद्भवन, नवोन्मेषन एवं उद्यमिता केंद्र (एसीआईआईई)

एयूडी की विस्तृत दूरदर्शिता की परिधि के भीतर, एयूडी के अन्य अध्ययनशालाओं और केंद्रों के सहयोग से, एसबीपीपीएसई ने एक उद्भवन, नवोन्मेषन एवं उद्यमिता केंद्र (एसीआईआईई) की स्थापना का कार्य शुरू किया है। केंद्र से एयूडी के विभिन्न अध्ययनशालाओं के शैक्षिक कार्यक्रमों को पूरा करने में सहायता की आशा की जाती है। उद्भवन केंद्र का लक्ष्य दोहरे उद्देश्य की पूर्ति करना है : (1) सैद्धांतिक एवं संकल्पनात्मक शिक्षा को समाज के लिए उपयोगी प्रणाली का रूप देना; और (2) समाज के सुविधा वंचित तबकों तक पहुँचना है, जिन्हें संभव है कि नई शिक्षा और समकालीन कार्यप्रणालियों की कोई अन्य सुविधा न हो।

केंद्र एयूडी और एयूडी के बाहर के छात्रों से नवोन्मेषी संकल्पनाएँ आमंत्रित कर उन्हें यथार्थ व्यवसाय कंपनियों का रूप देने हेतु परामर्श और नए छोटे उद्यमों या उद्यमियों में निवेश करने वालों (एंजेल इन्वेस्टर्स)/उद्यम पूँजीवादियों से वित्तीय सहायता संगठित/सुलभ कर उनका विकास करेगा। यह उन लोगों को अवसर मुहैया कराएगा जो सामाजिक उद्यमिता में निजी व्यवसाय शुरू करना चाहते हों। यह किसी अल्प–लागत वाले व्यवसाय की रूपरेखा तैयार कर उसकी स्थापना करने के लिए

अपेक्षित कौशलों की शिक्षा और नई संकल्पनाओं के विकास एवं परीक्षण हेतु अवसर सुलभ कराएगा। यह विभिन्न क्षेत्रों के अनुभवी सलाहकारों के कार्य की सफलता की कहानियों को साझा करने की संभावना प्रदान करता है। केंद्र एमए सामाजिक उद्यमिता कार्यक्रम के छात्रों के लिए, विशेष रूप से उनके अध्ययन के दूसरे वर्ष के दौरान, आश्रय स्थल का कार्य करेगा।

सहयोग

प्राध्यापक वर्ग व छात्रों के आदान–प्रदान को सरल करने के लिए एयूडी एवं सान फ्रैंसिस्को राज्य विश्वविद्यालय के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इसी आशय से इंग्लैंड के नौर्थंप्टन विश्वविद्यालय के साथ भी एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए है। अन्य देशों से सहयोग हेतु अध्ययनशाला अन्य विश्वविद्यालयों से भी विचार–विमर्श कर रहा है।

शोध परियोजनाएँ

दवे, कार्तिक, प्रधान अनुसंधाता। ''रेस्त्राँ उद्योग में सेवा गुणवत्ता : उत्तर भारत के चुनिंदा राज्यों का एक शोध''। आईसीएसएसआर द्वारा वित्त पोषित (500,000, जारी)।

कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

गुप्ता, अंशु ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग शिक्षा कर्मचारी महाविद्यालय (यूजीसी–अकादमिक स्टाफ कॉलेज), जामिया मिलिया इस्लामिया में आयोजित (12 मई से 2 जून 2014) बुनियादी विज्ञान (अंतर्विषयक) के तीन सप्ताह के पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भाग लिया।

नियोजन सहायता

बाहरी विश्व से नियमित रूप से पारस्परिक व्यवहार सुलभ कराने और गरमी के दिनों में दिए जाने वाले प्रशिक्षणों तथा विद्यालय से बाहर कार्यों का पता लगाने में छात्रों को सक्षम बनाने हेतु छात्र प्रकोष्ठ और नियोजन समिति के जरिए विद्यालय का एक क्रियाशील उद्योग सहबंध है। छात्र प्रकोष्ठ और नियोजन समिति में कार्यक्रमों के छात्रों के द्वारा निर्वाचित छात्र प्रतिनिधि होते हैं जिनकी सहायता प्राध्यापक वर्ग के सलाहकार करते हैं।

संस्कृति एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययनशाला (एससीसीई)

एससीसीई को एक ऐसे स्थल के रूप में देखा जाता है जो देश में कला शिक्षा एवं कार्य प्रणाली की एक नई परिकल्पना को व्यवहार में उतारे। दृश्य कला, साहित्य कला, अभिनय कला एवं फिल्म कला में नई और भिन्न कला प्रणालियों एवं सैद्धांतिक सूक्ष्म दृष्टियों के विकास हेतु विद्यालय एक प्रशिक्षण मंच मुहैया कराता है।

अध्ययनशाला अग्रलिखित विषयों में स्नातकोत्तर कार्यक्रम उपलब्ध कराता है : (ग) दृश्य कला (2) साहित्य कला : सृजनात्मक लेखन (3) अभिनय अध्ययन एवं (4) फिल्म अध्ययन। इन कार्यक्रमों में ऐतिहासिक और सैद्धांतिक शिक्षा प्रदान करते हुए शोध उन्मुखी एवं प्रायोगिक अभ्यासों पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिनमें विवेचनात्मक अध्ययन–पठन और अभ्यास अनिवार्य होते हैं। इन कार्यक्रमों में सृजनात्मकता के संबद्ध क्षेत्रों में भी शिक्षा और कौशल प्रदान किए जाते हैं। शैक्षिक वर्ष 2014–15 में, संस्कृति एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति विद्यालय (एससीसीई) ने तीन विधाओं में पीएच.डी. कार्यक्रम शुरू किए – (1) दृश्य कला (2) साहित्य कला : सृजनात्मक लेखन और (3) फिल्म अध्ययन। विद्यालय भारत में पहली बार अभ्यास–नीत पीएच.डी. कार्यक्रम प्रदान कर रहा है।

प्रतिष्ठा (ऑनर्स) / उपलब्धियाँ

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने संयुक्त प्रवेश परीक्षा (मुख्य) 2015 (अप्रैल 2015) के संचालन के लिए विश्वास, बेनिल विश्वास को आमंत्रित किया।

शिवरमण, दीपन ने क्राकोव, पोलैंड में डिवाइन कॉमेडी (बोस्का कॉमेडिया) अंतरराष्ट्रीय रंगमंच उत्सव (दिसंबर 2014) में निर्णायक मंडल के एक सदस्य के रूप में अपनी सेवा दी।

एस, संतोष को भारत की क्षेत्रीय / स्थानीय बोलियों में कला लेखन पर प्रकाशन परियोजनाओं के लिए एशिया कला अभिलेखागार (एएए), नई दिल्ली, भारत द्वारा मानद संपादक के रूप में नियुक्त किया गया।

प्रस्तुतियाँ

विश्वास, बी (2014, दिसंबर), कला विश्वविद्यालय, हेलसिंकी, ''डॉक्युमेंटिंग एशियन आर्ट एंड परफारमेंस : एंबॉडीड नॉलेज, वर्चुएलिटी एंड दि आर्काइव'' सम्मेलन में प्रस्तुत पत्र : आर्किटेक्टॉनिक्स ऑफ एन आर्काइव : प्रिपेरेशन टु परफारमेंस एंड बियांड।

कृष्णन, आर (2014, जून), वरिष्ठ तमिल लेखक अशोकमित्रन, चेन्नई की कृतियों पर ''रीडिंग अशोकमित्रन'' शीर्षक एक परिसंवाद में प्रस्तुत पत्र : वरलर्रुक्कु अप्पल अनरादम : अशोकमित्रन अशगियाल कात्तुम मीची (एवरीडे बियांड हिस्ट्री : दि रिडेंप्टिव एस्थेटिक्स ऑफ अशोकमित्रण)।

——, (2015, फरवरी), एशिया समाज विज्ञान शोध कला अभिलेखागार एवं केंद्र, कोलकाता द्वारा आयोजित ''आर्ट ऑफ डिसेमिनेशन : राइटिंग कल्चर्स'' में प्रस्तुत पत्र : पैरिस / कलकत्ता : दि टोपोलॉजी ऑफ माडर्निटी एं एन्क्लोजर्स ऑफ डिफरेंस।

एस, संतोष (2014, अगस्त), डॉ. भाउ दाजी लाड संग्रहालय, मुंबई में प्रस्तुत पत्र : कंटेंपोरेरी क्रिटिकल थ्योरिज़।

——, (2015, फरवरी), एशिया समाज विज्ञान शोध कला अभिलेखागार एवं केंद्र, कोलकाता द्वारा आयोजित ''आर्ट ऑफ डिसेमिनेशन : राइटिंग कल्चर्स'' में प्रस्तुत पत्र : एन (इंडियन) एक्सपेरिमेंट विद क्राफ्ट''।

शिवरमन, डी (2014 जुलाई), बंगाल सांस्कृतिक मंत्रालय, कोलकाता के सहयोग से मिनर्वा रेपर्टरी कंपनी द्वारा आयोजित नेशनल थिएटर सेमिनार (राष्ट्रीय रंगमंच संगोष्ठी) में प्रस्तुत पत्र : दि थिएटर ऑफ सेंस।

——, (2015, फरवरी), हैदराबाद में इब्सेन अवॉर्ड (इब्सेन पुरस्कार) के सहयोग से सरोजिनी नायडू कला एवं संचार विद्यालय, हैदराबाद विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय इब्सेन सम्मेलन (इंटरनेशनल इब्सेन कॉन्फेरेंस) में प्रस्तुत पत्र : डाइरेक्टिंग पीअर जिंट इन ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी इंडिया।

——, (2015, फरवरी), अंतरराष्ट्रीय रंगमंच उत्सव—बीआरएम, दिल्ली के एक अंग के रूप में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा), दिल्ली द्वारा आयोजित वर्ल्ड थिएटर फोरम ब्रेकिंग दि बैरियर्ज में प्रस्तुत पत्र : दि थिएटर ऑफ सीनोग्राफी एंड पोस्ट ड्रैमेटिक टर्न इन इंडियन थिएटर।

कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

फिल्म अध्ययन

विश्वास, बेनिल, अभिनेता, संगीतकार और ग्राफिक डिजाइनर, इट्'स कोल्ड इन हियर (अगस्त 2014) और कैबिनेट ऑफ डॉ. कलिगरी (फरवरी 2015) की टीम के सदस्य रहे।

विश्वास, बेनिल ने पश्चिम बंगाल के कोलकाता स्थित मिनर्वा नाट्यसंस्कृति चर्चा केंद्र द्वारा आयोजित ''राष्ट्रीय रंगमंच संगोष्ठी'' (नेशनल थिएटर सेमिनार) (16–20 जुलाई 2014) में भाग लिया।

विश्वास, बेनिल ने आदिशक्ति नाट्य कला एवं शोध प्रयोगशाला, (आदिशक्ति लैबोरेटॅरी फॉर थिएटर आर्ट्स एंड रिसर्च), पुदुचेरी में अभिनेताओं के लिए आयोजित कार्यशाला ''सोर्स ऑफ परफारमेंस एनर्जी'' (एसओपीई) (15–25 जून 2014) में भाग लिया।

शिवरमन, दीपन ने पीएस कलेक्टिव, दिल्ली के सहयोग से ''इट्'स कोल्ड इन हियर'' शीर्षक एक नाट्य प्रस्तुति तैयार कर उसका निर्देशन किया (अगस्त 2014)।

शिवरमन, दीपन ने पीएस कलेक्टिव, दिल्ली के सहयोग से ''दि कैबिनेट ऑफ डॉ. कलिगरी'' शीर्षक एक नाट्य प्रस्तुति तैयार कर उसका निर्देशन किया (जनवरी 2015)।

शिवरामन, दीपन ने कलाकार विवान सुंदरम के साथ सीनोग्राफर के रूप में रंगमंच निर्देशक अनुराधा कपूर के सहयोग से आईजीएनसीए में एक संयुक्त नाट्य/दृश्य कला परियोजना ''409 रामकिंकर'' का संचालन किया (मार्च 2015)।

एस, संतोष ने भारतीय समकालीन कला संस्थान (फाउंडेशन ऑफ इंडियन कंटेंपोरेरी आर्ट), नई दिल्ली द्वारा आयोजित कलाकार वसुधा थोज़र की वार्ता इंस्टिट्युशनलाइजिंग प्रैक्टिस एंड प्रैक्टिसिंग दि इंस्टिट्यूशन का संचालन किया (6 सितम्बर 2014)।

जैन, शेफाली को दिल्ली कला महाविद्यालय, नई दिल्ली के छात्रों के साथ परिचर्चा में सलाहकार के रूप में आमंत्रित किया गया (मार्च 2015)।

दृश्य कला

लाइटनिंग टेस्टिमनीज प्रदर्शनी देखने के लिए किरण नादर कला संग्रहालय (किरण नादर म्यूजियम ऑफ आर्ट) का दौरा (8 अगस्त 2014)।

शुक्ला, सावंत, जेएनयू, नई दिल्ली, ने दि पैस्टोरल रिप्रेजेंटेशन ऑफ दि लैंडस्केप एंड दि प्लेस ऑफ संथाल्स : नंदलाल बोस एंड रवींद्रनाथ टैगोर पर एक वार्ता प्रस्तुत की (3 सितम्बर 2014)।

एंटवर्प विश्वविद्यालय के पाओलो, फेवेरो ने बियांड दि फ्रेम : रिफ्लेक्शंस ऑन दि मीनिंग ऑफ इमेजेज इन दि एज ऑफ डिजिटल मीडिया प्रैक्टिसेज पर एक वार्ता प्रस्तुत की (12 सितंबर 2014)।

कलाकार शेख, नीलिमा ने अपनी कृति और कार्य प्रणाली प्रस्तुत की (26 सितम्बर 2014)।

एससीसीईई के छात्रों के लिए पूजा चौहान (मूर्तिकार, नाट्य कलाकार एवं कला प्रेरक के साथ परिचर्चा (अक्टूबर 2014)।

विश्व भारती में कला इतिहास के प्रोफेसर कुमार, आर शिव ने रामकिंकर बैज पर एक वार्ता प्रस्तुत की (10 अक्टूबर 2014)।

कलाकार और कार्यकर्ता अग्रवाल, रवि ने चित्र प्रस्तुति के साथ एक वार्ता प्रस्तुत की। (17 अक्टूबर 2014)।

आईजीएनसीए में सम ऐस्पेक्ट्स ऑफ प्रोमेनेड थिएटर पर प्रो. अनुराधा कपूर की एक प्रस्तुति (29 अक्टूबर 2014)।

चिन्नन ने वेब आर्ट एंड नेट–बेस्ड आर्ट प्रैक्टिसेज पर एक कार्यशाला का संचालन किया (अक्टूबर–नवंबर 2014)।

जिनियालॉजीज ऑफ दि उत्सव एंड रवींद्रनाथ टैगोर्स कोरियॉग्राफी ऑफ पार्टिसिपेशन इन परफॉरमेंस पर रिमली भट्टाचार्य की वार्ता (7 नवंबर 2014)।

एससीसीईई के छात्रों के लिए ऑडियो–विजुअल–सेंसरी एथनोग्राफी ऑफ अर्बन स्पेस पर एंटवर्प विश्वविद्यालय के डॉ. पाओलो फेवेरो की कार्यशाला (जनवरी 2015)।

कलाकार वाल्सन कूर्मा कोलेरी की उनकी कृतियों एक कार्य प्रणालियों पर एक प्रस्तुति (28 जनवरी 2015)।

कलाकार रायोटा कुवाकुबो की एक प्रस्तुति (26 मार्च 2015)।

एन इंटरनेशनल विजन ऑफ दि दलित सिचुएशन पर गैरी माइकल तर्ताकोव की एक वार्ता।

एआईआईएस एथनोम्युज़िकॉलोजी अभिलेखागार एवं शोध केंद्र का दौरा तथा निदेशक डॉ. शुभा चौधरी से परिचर्चा (11 मार्च 2015)।

आईजीएनसीए में जानेमाने कलाकार विवान सुंदरम के मार्गदर्शन में परियोजना (409 रामकिंकर) की प्रस्तुति एवं प्रदर्शनी का आयोजन (मार्च 2015)।

फोटोग्राफी : आइडेंटिटी एंड रिप्रेजेंटेशन पर गौरी गिल द्वारा पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन (मार्च 2015)।

साहित्यिक कला

अशोक वाजपेयी द्वारा एक व्याख्यान सह कविता पाठ सत्र (22 अगस्त 2014)।

मंगलेश डबराल द्वारा एक व्याख्यान सह कविता पाठ सत्र (5 सितंबर 2014)।

''पॉल सेलान एंड दि फ्यूचर ऑफ दि पोएम'' पर डॉ मानष आर्य की वार्ता (19 सितंबर 2014)।

कविता लेखन पर सुदीप सेन द्वारा पांच दिवसीय कार्यशाला (27 सितंबर–4 अक्टूबर 2014)।

सुदीप सेन द्वारा एक व्याख्यान सह कविता पाठ सत्र (31 अक्टूबर 2014)।

ड्रैमेटिक राइटिंग पर सबरीना धवन द्वारा एक तीन–दिवसीय कार्यशाला (2, 4 और 9 फरवरी 2015)।

कथा–साहित्येतर आख्यान (नैरेटिव नॉन–फिक्शन) पर उर्वशी बुटालिया द्वारा एक कार्यशाला (छह–सप्ताह) का आयोजन (14 फरवरी – 28 मार्च 2015)।

नई दिल्ली स्थित ऑक्सफर्ड पुस्तक भंडार (ऑक्सफर्ड बुक स्टोर) में अंतिम वर्ष के छात्रों द्वारा बुक, लाइन एंड लिंकर का आयोजन (12 मई 2015)।

अभिनय (नाट्य) अध्ययन

एससीसीईई के अभिविन्यास (अभिमुखीकरण) के एक अंग के रूप छात्रों द्वारा इट्स कोल्ड इन हियर शीर्षक एक नाटक मंचन किया गया (04–09 अगस्त 2014)।

जेएनयू के प्रोफेसर रुस्तम बरुचा द्वारा दि आफ्टरमैथ – रिफ्लेक्शंस ऑन टेरर एंड परफॉरमेंस पर एक व्याख्यान सह पुस्तक प्रस्तुति (24 सितम्बर 2014)।

कंटेक्स्ट, कोरियॉग्राफी एंड कंटेंपोरेरी पर दिल्ली स्थित गति डांस फोरम के मनदीप रेखी का व्याख्यान (14 नवंबर 2014)।

दि ट्रांसपरेंट परफॉरमर पर जुलेखा अल्लाना पारदर्शी कलाकार पर जुलेइखा अल्लाना (अभिनय कला निर्माता/परफर्मिंस मेकर और प्रकाश डिजाइनर) का व्याख्यान (21 नवंबर 2014)।

दि कैबिनेट ऑफ डॉ कैलिगरी, जर्मन क्लासिक मूक फिल्म पर आधारित स्थल–लक्षित नाट्य प्रदर्शन (5–10 जनवरी 2014)।

परफॉरमेंस साइट्स/साइंस – फ्रेमिंग दि डांसर्स पर जवाहर लाल विश्वविद्यालय, दिल्ली की डॉ उर्मिला सरकार का व्याख्यान (13 फरवरी 2014)।

एक्स्पीरियंसिंग कोरियोग्राफी पर डॉ उर्मिला सरकार द्वारा एक कार्यशाला का आयोजन (14 फरवरी 2015)।

कविता प्रदर्शन, परफॉरमिंग दि रिर्टन, जर्मनी के हाइक फीड्लर द्वारा एक कार्यशाला का आयोजन (20 फरवरी 2015)।

परफॉरमेंस एंड हिस्टीरिया पर गोल्डस्मिथ कॉलेज के एन्न फर्से द्वारा एक कार्यशाला का आयोजन (02–09 मार्च 2015)।

पाठ्येतर गतिविधियाँ

सह–पाठ्यक्रम गतिविधि समिति के एक अंग के रूप में बेनिल विश्वास ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों एयूडी/सिटी (2014) एवं बार्दीसिखला (2015) का आयोजन किया।

'इलेक्ट्रॉनिक सिटी' और 'दि फ्लिक' के प्रदर्शन में बेनिल विश्वास ने एयूडी थिएटर एनसेंब्ल का मार्गदर्शन किया।

डिजाइन अध्ययनशाला (एसडीईएस)

एयूडी का एसडीईएस अपनी संकल्पना में विशिष्ट है – भारत में यह पहली बार है कि डिजाइन शिक्षा को मानविकी एवं समाज विज्ञान के क्षेत्र में संस्थागत रूप से सन्निहित और संबद्ध किया गया है। डिजाइन की मुख्य विशषताओं को सामाजिक स्तर पर जटिल समस्याओं, आवश्यकताओं एवं क्षेत्रों से जोड़ने की दृष्टि से विद्यालय का मानविकी एवं समाज विज्ञान विश्वविद्यालय के भीतर अपना एक विशिष्ट स्थान है। वस्तु–केंद्रित डिजाइन को पुनः ''सामाजिक'' पर केंद्रित कर, डिजाइन विद्यालय नए परिणामों, सेवाओं, प्रणालियों, अंतराफलकों (*interface*) और दृश्य–विधानों के जरिए सुशिक्षित, संवेदनशील, सशक्त और संतुलित समुदायों के निर्माण का विचार रखता है। तेजी से बदलते, परस्पर गहरे तक जुड़े स्थानीय एवं वैश्विक भूदृश्य से मिली नानाविध चुनौतियों को सृजनात्मक ढंग से पूरा करने के लिए यह विन्यास डिजाइन शिक्षा एवं कार्यप्रणाली की पुनर्कल्पना का एक अवसर प्रदान करता है। वहीं, डिजाइन विद्यालय, डिजाइन के माध्यम से, सामाजिक कार्यकलाप के जरिए समतामूलक, न्यायविहित एवं स्थायी समाज के निर्माण के एयूडी के अधिदेश को आगे बढ़ाने का प्रयास करता है।

विद्यालय इसे समस्त विश्व में डिजाइन शिक्षा एवं प्रणाली के भीतर प्रचलित विशेषताओं के प्रति प्रश्न पूछने, चालू पाठ्यक्रम संरचनाओं एवं अध्यापन विधियों की पड़ताल करने और भारतीय संदर्भ में डिजाइन की एक बृहत्तर भूमिका एवं संभावना पर विचार करने के एक अवसर के रूप में देखता है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली पर ध्यान के साथ–साथ, विद्यालय का लक्ष्य डिजाइन के छात्रों को दिल्ली शहर के लिए नई सेवाओं, प्रणालियों, अंतराफलकों, उत्पादों और उद्यमों की संकल्पना की चुनौतियों को दूर करने हेतु तैयार करना है।

एसडिज की कल्पना डिजाइन शिक्षा को स्नातक स्तर से एम. फिल्. / पी. एच. डी. स्तर तक पहुँचाने के लिए एक अभ्यास एवं शोध आधारित स्कूल दोनों रूपों में की जाती है। आरंभ में यह समाज डिजाइन (समाज अभिकल्प) में एम ए के पाठ्यक्रम प्रदान करता है। भविष्य में इसका विचार सेवा डिजाइन, डिजाइन समीक्षा, डिजाइन सिद्धांत, डिजाइन इतिहास और अन्य संबद्ध क्षेत्रों में कार्यक्रम तथा उसके अनंतर स्नातक कार्यक्रम और अंततः एमफिल / पीएच.डी. कार्यक्रम प्रस्तुत करना है।

एमए सोशल डिजाइन (समाज अभिकल्प)

समाज अभिकल्प का एमए कार्यक्रम ढाई वर्षों का एक पूर्णकालिक कार्यक्रम है, जो कि एक गहन, अभ्यास एवं अनुप्रयोग उन्मुखी कार्यक्रम, जिसके केंद्र में समाज है। भागीदारी एवं सह–सर्जना विधियों के माध्यम से समावेशन, पहुँच, समानता और अवसरों के गंभीर मुद्दों के सृजनात्मक ढंग से निदान हेतु इसमें अभिकल्प विधाओं की विशिष्ट विधियों, उपकरणों और पद्धतियों का समाज विज्ञान की विधियों, उपकरणों और पद्धतियों को सम्मिलित किया जाता है। समाज की गंभीर समस्याओं (समानता, पहुँच, सहभागिता, समावेशन एवं अवसर), जो समुदायों, संस्थाओं, संगठनों व राज्यों में सन्निहित हो सकती हैं, के निदान हेतु कार्यक्रम में आवश्यक उद्यमिता क्षमताओं एवं नेतृत्व गुण के साथ छात्रों को तैयार करने पर बल दिया जाता है।

सहयोजन

ब्रिटिश काउंसिल नॉलेज ग्रांट से सहायता प्राप्त ''इवॉल्विंग बेस्ट प्रैक्टिसेज फॉर पोस्टग्रेजुएट टीचिंग अबाउट डिजाइन, कल्चर एंड सोसाइटी : डिवेलपिंग करिकुलम, पेडागॉज़ी एंड टीचिंग मटिरियल्स थ्रू कोलैबोरेटिव, क्रॉस–कल्चरल पार्टनरशिप'' शीर्षक परियोजना पर अभिकल्प विद्यालय ने रॉयल कॉलेज ऑफ आर्ट, लंदन के साथ मिलकर काम किया। एक वर्ष तक चले इस सहकार्य में ''डिजाइन एंड अनसर्टेनिटी इन दि ग्लोबल प्रेजेंट'' विषय पर दो कार्यशालाओं में गवेषण किया गया – एक मई 2014 में लंदन में और दूसरी सितंबर 2014 में दिल्ली में। सहभागियों में प्राध्यापक वर्ग के छह सदस्यों (प्रत्येक संस्था से तीन) का एक दल और रॉयल कॉलेज ऑफ आर्ट्स के 13 तथा एयूडी के 20 छात्र शामिल थे।

शोध परियोजनाएँ

भट्ट, जतिन, प्रधान अन्वेषक ''बाय डिजाइनः सस्टेनिंग कल्चर इन लोकल एन्वायरन्मेंट, लर्निंग फ्रॉम दि इंडियन हैंडिक्राफ्ट्स सेक्टर'' इंटरनेशनल पार्टनरशिप एंड मोबिलिटी स्कीम (अंतरराश्ट्रीय भागीदारी एवं गतिशीलन योजना) – आइपीएम 2014, ब्रिटिश अकादमी, सह प्रस्ताव डॉ. ईलुनेड मेयर एड्वड्र्स, नॉटिंघम ट्रेंट विश्वविद्यालय।

बालासुब्रमण्यन, सुचित्रा एवं अबीर गुप्ता (भारत कला संस्थान एवं राष्ट्रीय संग्रहालय/इंडियन फाउंडेशन फॉर दि आट्र्स एंड नेशनल म्यूजियम), नई दिल्ली। राष्ट्रीय संग्रहालय के साथ एक वर्ष से भी अधिक सहकार्य, जिसमें शोध, संग्रह एवं प्रदर्शन के माध्यम से एनएम संग्रह से प्राप्त जरी के 80 थानों पर कार्य किया गया।

प्रस्तुति

गुप्ता, अबीर (2014, सितंबर), दि विजुअल एंड मटिरियल कल्चर ऑफ इस्लाम इन लद्दाख। पत्र विद्वानों एवं व्यवसायियों के लिए दृश्यश्रव्य मानव विज्ञान पर नेशनल रिसर्च यूनिवर्सिटी हायर स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स इन दि स्कोप ऑफ दि डेज ऑफ एथनोग्राफिक सिनेमा (मॉस्को) में आयोजित बारहवीं अंतरराष्ट्रीय परिसंवाद ''ट्रेडिशनल कल्चर इन पोस्ट–ट्रेडिशनल सोसाइटी : क्वेश्चन्स ऑफ एडैप्टेशन'' में प्रस्तुत।

विकास अध्ययनशाला (एसडीएस)

अंबेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली के एसडीएस का उद्‌देश्य समाजशास्त्र, मानव शास्त्र, राजनीति विज्ञान एवं अर्थशास्त्र विधाओं के आधार पर अंतर्विषयक पद्धतियों के जरिए समाज विज्ञान की शिक्षा एवं शोध की व्यवस्था को सशक्त करना है। अंबेडकर विश्वविद्यालय की विस्तृत, बहुविषयक शिक्षा को प्रोत्साहन की समग्र संकल्पना से इसका विशेष संबंध है, जिसका समाज की आवश्यकताओं से गहरा संबंध है। यह इस समझ के अनुरूप चलता है कि विकास सिद्धांत, विकास के अनुभव, अस्मिता एवं भेदभाव के सरोकारों, पर्यावरण के सरोकारों और विकास प्रबंध के अन्य स्वरूपों का, आज के संदर्भ में, संचालन एक अंतर्विषयक पद्धति से अधिक प्रभावशील ढंग से किया जा सकता है। विद्यालय का लक्ष्य संकटग्रस्त, उपेक्षित और वंचित समूहों को ध्यान में रखते हुए राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक मुद्‌दों, क्रियाकलापों और यथार्थताओं के क्षेत्र में नवोन्मेषी एवं उच्च शोध को प्रोत्साहन देना है। अपने एमए कार्यक्रम के जरिए अपने शिक्षक वर्ग के माध्यम से और शिक्षा जगत तथा व्यवहार जगत के विशेषज्ञों की सलाह के अनुरूप यह 2009 से विकास की अंतर्विषयक पद्धतियों की शिक्षा प्रणाली के सृजन में रत है। इसके पाठ्‌यक्रम सैद्धांतिक एवं वैचारिक संकल्पनात्मक ज्ञान को वास्तविक क्षेत्र–आधारित शिक्षा से जोड़ते हैं, जिसमें स्नातकोत्तर स्तरों पर शोध केंद्रित शोध–निबंध लेखन पर विशेष बल दिया जाता है।

प्रस्तुतियाँ

दामोदरन, एस (2014, मई), आर्टिकुलेटरी डिवाएंस पत्र साइप्रस के निकोसिया विश्वविद्यालय में ''स्क्रिप्ट्स ऑफ डिफाएंस'' में प्रस्तुत।

——, (2014, अगस्त), क्राइसिस ऑर रिसिलिएंस : दि इंडियन केस। पत्र दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में रोजा लक्ज़ेमबर्ग फाउंडेशन में आयोजित कार्यशाला ''कैपिटलिज्म क्राइसिस एंड लेफ्ट रिस्पांसेज में प्रस्तुत।

——, (2014, अक्टूबर), दि रेडिकल इंपल्स : म्यूजिक–पोएट्री कोलैबोरेशंस बिटवीन इंडिया एंड साउथ अफ्रीका पत्र दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला पोएट्री अफ्रीका ऑन टुअर वर्कशॉप में प्रस्तुत।

——, (2015, जनवरी), दि रेडिकल इंपल्स : म्यूजिक एंड पॉलिटिक्स ऑफ ट्रेडिशन ऑफ आइपीटीए भारतीय समकालीन कला संस्थान और कला एवं सौंदर्य विद्यालय, जेएनयू द्वारा आयोजित द्वितीय ईला डालमिया स्मृति व्याख्यान।

धर, आइ (2014, नवंबर), डीसेंट्रलाइज्ड गवर्नैंस एंड रीथिंकिंग गाँधियन पीस : वीमेन ऐज चेंज एजेंट्स पत्र केरल स्थित केरल स्थानीय प्रशासन संस्थान में आयोजित ''गाँधी, ग्राम स्वराज एंड डिमोक्रेटिक डीसेंट्रलाइजेशन'' शीर्षक एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत।

नायक, एन (2015, फरवरी), राइट्स, रेसिस्टैंस एंड सिटिजेनशिप : क्लेमिंग दि राइट टु वर्क इन साउथ वेस्ट मध्य प्रदेश पत्र अंबेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली के मानव पारिस्थितिकी विद्यालय द्वारा आयोजित एक सम्मेलन ''मार्जिनल इकॉलॉजीज : ए कॉनफरेंस ऑन ह्यूमन इकॉलॉजी'' में प्रस्तुत।

——, फ्रॉम 'बेनेफिशरी' टु 'वर्कर' एंड बैक : दि वैरीड पॉलिटिक्स ऑफ इंप्लिमेंटेशन ऑफ दि नेशनल रूरल इंप्लॉयमेंट गारंटी ऐक्ट इन इंडिया पत्र नॉर्वे के बर्जेन विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित एक सम्मेलन ''डमोक्रेटाइजिंग इंडियन डेमोक्रेसी? सोशल मूवमेंट्स एंड दि स्टेट इन कंटेंपोरेरी इंडिया'' में प्रस्तुत।

——, (2014, नवंबर) फ्रॉम 'बेनेफिशरी' टु 'वर्कर' एंड बैक : दि वैरीड पॉलिटिक्स ऑफ इंप्लिमेंटेशन ऑफ दि नेशनल रूरल इंप्लॉयमेंट गारंटी एक्ट इन इंडिया पत्र आइजीआइडीआर, मुंबई में आयोजित सम्मेलन ''दि पॉलिटिकल इकॉनॉमी ऑफ कंटेंपोरेरी इंडिया में प्रस्तुत।

कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

विद्यालय ने पैनल परिचर्चा, फिल्म प्रदर्शन और सांस्कृतिक संध्याओं समेत परिसंवाद रीथिंकिंग डिवेलपमेंट का आयोजन किया (12–13 फरवरी 2015)।

धर, आइवी ने एक आमंत्रित विशेषज्ञ मांजरिका सेवक के साथ ''ऐक्टिव लिसनिंग एंड डायलॉग : स्किल्स फॉर कॉन्फ्लिक्ट ट्रांसफॉर्मेशन'' शीर्षक कार्यशाला का आयोजन किया। (17 मार्च 2015)।

डीडी न्यूज पर ''वीमेन : इंप्लॉयड ऑर इंपॉवर्ड'' पर आइवी धर के साक्षात्कार का प्रसारण किया गया (6 जुलाई 2014)।

इंटर–एशिया बिएनाले फोरम, कोच्ची–मुजिरिस बिएनाले में दामोदरन, सुमंगला को पैनेलिस्ट (सूचीकार) के रूप में आमंत्रित किया गया (फरवरी 2015)

अनौपचारिक क्षेत्र एवं श्रम शोध केंद्र, जेएनयू द्वारा आयोजित ''क्रॉस–क्लास एलाएंस इन इंडिया'' शीर्षक सम्मेलन में दामोदरन, सुमंगला को विमर्षकार के रूप में आमंत्रित किया गया (मार्च 2015)।

आर्थिक शोध एवं योजना केंद्र, जेएनयू द्वारा आयोजित यंग स्कॉलर्स सेमिनार में दामोदरन, सुमंगला अध्यक्ष एवं विमर्षकार रहीं (मार्च 2015)

यूएन–वीमन, नई दिल्ली में इंपैक्ट ऑफ दि यूनियन बजेट ऑन वीमन पर चर्चा हेतु दामोदरन सुमंगला को पैनेलिस्ट (सूचीकार) के रूप में आमंत्रित किया गया (मार्च 2015)।

हेग सोशल शोध संस्थान के मानद प्रोफेसर सेठ, अश्वनी ने ''एमडीजीएस आर डेड, लांग लिव दि एसडीजएस! डीपॉलिटिसाइजिंग एंड डंबिंग–डाउन डिवेलपमेंट डिस्कोर्स'' (2 फरवरी 2015) पर और ''अनकंडिशनल ग्रांट्स फॉर ऑल : ट्रांस्फॉर्मेटिव पॉलिसी ऑर ग्लोबल पैनेकिया?'' (18 मार्च 2015) पर विशेष व्याख्यान दिए।

एक नियमित संगोष्ठी शृंखला के एक अंग के रूप में प्रस्तुत व्याख्या :

पांडे, अमृता – इंटोरोगेटिंग कॉमर्सियल सरोगेसी इन इंडिया।

डे, निखिल – राइट टु वर्क, फाइट टु लिव : डिस्कसिंग राइट्स–बेस्ड लेजिस्लेशन इन इंडिया।

चक्रवर्ती, उमा – थिंकिंग कास्ट, थिंकिंग जेंडर : अनरैवेलिंग इनइक्वलिटी इन इंडियन सोसाइटी।

कुमार, मधुरेश – जल, जंगल, जमीन : फ्रॉम लाइसेंस राज टु ऑर्डिनेंस राज।

सहगल, राखी – मेकिंग सेंस ऑफ लेबर लॉ चेंजेज इन इंडिया।

मंदर, हर्ष – इनइक्वलिटी, प्रेज्युडिस एंड इनडिफरेंस : दि चैलेंज ऑफ राइजिंग इनइक्वलिटी इन इंडिया।

14 फरवरी 2015 को पूर्व छात्रों की दूसरी सभा का आयोजन का अयोजन किया गया।?

शैक्षिक अध्ययनशाला (एसईएस)

एसईएस की स्थापना एक विधा एवं प्रणाली के रूप में शिक्षा द्वारा प्रस्तुत विभिन्न चुनौतियों को समझने, उनका विश्लेषण एवं उन्हें दूर करने के ध्येय से की गई थी। अधिकृत शोध व अभ्यास के माध्यम से शिक्षा को उसके ऐतिहासिक एवं समकालीन संदर्भों में समझने के लिए एसईएस के अध्ययनकर्ताओं और इस दिशा में प्रयासरत विद्वानों के एक समुदाय के रूप में विकसित होने की अपेक्षा की जाती है। विद्यालय का लक्ष्य अपनी विभिन्न अवस्थितियों में शिक्षा के सिद्धांत और अभ्यास के बीच के अंतर को दूर करना है – इस हेतु यह एक सामाजिक अभिप्राय के रूप में शिक्षा के अध्ययन और अध्ययनकर्ता शिक्षकों की तैयारी के बीच बृहत्तर योजना स्थल के विकास का प्रयास करता है। शिक्षक शिक्षा, अध्यापन, पाठ्यक्रम, नीति, योजना और प्रशासन के अतिरिक्त विश्लेषण व शोध के लिए यह एक परिशुद्ध अभ्यास आधारित सैद्धांतिक परिदृश्य के विकास के प्रति कार्य करता है।

अपनी संकल्पना के अनुरूप, एसईएस ने वर्ष 2012 में अपना पहला कार्यक्रम, एमए शिक्षा, शुरू किया। आरम्भिक शिशु शिक्षा एवं विकास केंद्र (सेंटर फॉर अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन एंड डिवेलपमेंट/सीईइसीईडी) के सहयोग से विद्यालय ने वर्ष 2014 में एमए शिक्षा (शिशु देखभाल एवं शिक्षा) कार्यक्रम शुरू किया। निकट भविष्य में यह शिक्षा में एमफिल/पीए.डी., प्राक्–सेवा (प्री–सर्विस) शिक्षक शिक्षा और सर्टिफिकेट/डिप्लोमा कार्यक्रम शुरू करना चाहता है।

एमए शिक्षणशास्त्र

एमए अध्ययन कार्यक्रम में शिक्षा में स्नातकोत्तर उपाधि के उदार और पेशेवर दोनों पहलुओं को केंद्र में रखा जाता है। आधारिक क्षेत्रों और विभिन्न सैद्धांतिक परिदृश्यों तथा वाद–विवादों के अतिरिक्त, छात्र कार्यक्रम संरचना में एसईएस के भीतर और बाहर अपनी रुचि के अनुरूप क्षेत्रों और दिशाओं में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए वैकल्पिक पाठ्यक्रम का चयन कर सकते हैं। किसी मनोविश्लेषी परिदृश्य तथा अध्यवसायी के साथ परिचय और सहभागिता इस कार्यक्रम की अहम विशेषता है। दूसरी खास विशेषता इस शिक्षा के उन स्थलों से इसका संबंध है, जो स्कूली और गैर–स्कूली दोनों हैं। क्षेत्रों

से इस संरचनाबद्ध साक्षात की सराहना हुई है क्योंकि इसने राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् द्वारा अनुमोदित एमएड के साँचे को अपनाया है।

एमए शिक्षा (ईसीसीई) कार्यक्रम बहुविध विषयों – बाल विकास, समाजशास्त्र, इतिहास, मनोविश्लेषी संरचना, मानव विज्ञान, गंभीर अध्यापन और प्रबंधन – का उपयोग करते हुए शिशु देखभाल एवं शिक्षा का गहरा ज्ञान प्रदान करता है। कार्यक्रम में छात्र विभिन्न व्यावसायिक दिशाओं का चयन कर सकते हैं जैसे शिक्षक शिक्षा, शोध, पाठ्यक्रम विकास व सामाजिक उद्यमिता। कार्यक्रम का लक्ष्य ईसीसीई के क्षेत्र में पाठ्यक्रम निर्माताओं, सामाजिक उद्यमियों और शिक्षक अध्यापकों की बढ़ती माँग को पूरा करना है।

प्रतिष्ठा / उपलब्धियाँ

कौल, विनीता को जेवीसी की अनुशंसा 8 और 12 की जाँच और उनके क्रियान्वयन की अनुशंसा करने हेतु एनसीटीई द्वारा गठित समिति की अध्यक्ष बनाया गया। अप्रैल 2014 में एनसीटीई के आग्रह पर उन्होंने उत्तर प्रदेश संयुक्त समीक्षा अभियान का नेतृत्व भी किया। उन्होंने एनसीटीई परिषद् की एक सदस्य के रूप में कार्य किया और वर्ष 2014 में स्कूल–पूर्व शिक्षा में डिप्लोमा के मानकों और मापदंडों के विकास हेतु एनसीटीई द्वारा गठित समिति की अध्यक्षता करने के लिए उन्हें आमंत्रित किया गया।

कौल विनीता, मनीष जैन और गुंजन शर्मा ने राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् (एनसीटीई) द्वारा गठित राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा विनियमन संघटन में भाग लिया।

शर्मा, गुंजन ने एनसीटीई द्वारा गठित तीन उप–समितियों के सदस्य सचिव के रूप में कार्य किया। इन उप–समितियों में एक दो–वर्षीय एमएड पाठ्यक्रम और एक 3–वर्षीय समेकित बीएड–एमएड पाठ्यक्रम विकास उप–समिति; वर्तमान शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, 2013–14 समीक्षा उप–समिति; और एमएड (मुक्त दूरस्थ शिक्षा), 2014 मानक एवं मापदंड विकास विशेषज्ञ समूह शामिल थे। उन्होंने एनसीटीई में 'क्षेत्रीय परामर्श' के पक्षकारों के विचारों एवं विभिन्न राज्यों में राज्य स्तरीय प्रचार–प्रसार व अभिमुखीकरण के प्रलेखन और परितुलन के स्रोत विशेषज्ञ का कार्य भी किया।

जैन, मनीष ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी), नई दिल्ली के तमिलनाडु राज्य शिक्षक शिक्षा संयुक्त मिशन के सदस्य के रूप में कार्य किया (2014)

वह एनसीटीई की 2013–14 में दो–वर्षीय बीएड पाठ्यक्रम उप–समिति में भी शामिल रहे।

जैन, मनीष भारतीय तुलनात्मक शिक्षा सभा (कंपैरेटिव एजुकेशन सोसाइटी ऑफ इंडिया (सीईएसआई)), दिल्ली विश्वविद्यालय के 16 से 18 नवंबर तक चले पाँचवें वार्षिक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की आयोजन समिति के सदस्य भी रहे।

शोध परियोजनाएँ

डे, एम सह–प्रधान शोधकर्ता ''अर्ली चाइल्डहुड डिवेलपमेंट फॉर दि पुअर : इंपैक्टिंग ऐट स्केल'' नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ हेल्थ (एनआइएच), वाशिंगटन डीसी द्वारा वित्त पोषित एवं येल विश्वविद्यालय तथा इंस्टिट्यूट ऑफ फिस्कल स्टडीज (आइएफएस), लंदन द्वारा उड़ीसा में आयोजित एक शोध।

——, सह–प्रधान शोधकर्ता ''इंपैक्ट इवैल्यूएशन ऑफ मोबाइल क्रेश'' ग्रैन चैलेंज कनाडा द्वारा वित्त पोषित।

——, पश्चिम बंगाल आइसीडीएस को तकनीकी सहायता, पश्चिम बंगाल के यूएनआइसीईएफ से सहायता प्राप्त।

प्रस्तुतियाँ

जैन, एम (2014, अप्रैल), कास्ट एंड एजुकेशनल इनइक्वलिटी इन कॉलोनियल इंडिया। व्याख्यान बेंगलुरु स्थित अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में प्रस्तुत।

——, (2014, मई), एजुकेटिंग दि पुअर गर्ल चाइल्ड : ए फेमिनिस्ट पर्स्पेक्टिव ऑन एजुकेशन एंड जेंडर इक्वलिटी शिक्षा–समानता एवं न्याय (एजुकेशन–इक्वलिटी एंड जस्टिस) पर परिसंवाद व्याख्यान पुडुचेरी एवं चेन्नई स्थित अजीम प्रेमजी संस्थान (अजीम प्रेमजी फाउंडेशन) में प्रस्तुत।

——, (2014, जून), एजुकेशन पॉलिसीज समर टीचर फेलोशिप कार्यक्रम, 2014, आरआरसीई, दिल्ली विश्वविद्यालय में व्याख्यान आमंत्रित किया।

——, (2014, जून), हिस्ट्री ऑफ टीचर्स इन कॉलोनियल एंड पोस्टकॉलोनियल इंडिया व्याख्यान समर टीचर फेलोशिप कार्यक्रम, 2014, आरआरसीई, दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रस्तुत।

——, (2014, जुलाई), करिकुलम इन इंडियाः अरिजोना विश्वविद्यालय जा रहे शिक्षक अध्यापकों के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी), दिल्ली द्वारा आयोजित कार्यक्रम इन–स्टेप में प्रस्तुत व्याख्यान।

——, (2014, सितंबर), रीडिंग एजुकेशन पॉलिसीज विद फोकस ऑन दि कोठारी कमीशन शैक्षिक शोध विभाग, शिक्षा संकाय, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली में विस्तार व्याख्यान (एक्स्टेंशन लेक्चर) प्रस्तुत।

——, (2014, सितंबर), दलित ऑटोबायॅग्राफी एंड एजुकेशन : सोशियॅलॉजिकल पर्स्पेक्टिव ऑफ दलित लिटरेचर पत्र इंटररिलेशनशिप ऑफ अंबेडकरिज्म एंड इंडियन दलित लिटरेचर (अंबेडकरवाद एवं भारतीय दलित साहित्य के परस्पर संबंध) पर राष्ट्रीय परिसंवाद में प्रस्तुत भारतीय दलित शोध संस्थान, नई दिल्ली।

——, (2014, नवंबर), कन्फ्लिक्ट, वॉयलेंस एंड एजुकेशन इन कंधमाल, पत्र भारतीय तुलनात्मक शिक्षा सभा (कंपैरेटिव एजुकेशन सोसाइटी ऑफ इंडिया (सीईएसआई), दिल्ली विश्वविद्यालय के वार्षिक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत।

——, (2015, फरवरी), पर्स्पेक्टिव ऑन सिटिजेनशिप एंड एजुकेशन व्याख्यान दिल्ली विश्वविद्यालय के माता सुंदरी कॉलेज में प्रस्तुत।

——, (2015, मार्च), स्कूल्स, क्वालिटीज एवं सिटिजेनशिप इन देल्ही पत्र अंबेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली, भारत में एजुकेशन इन देल्ही : मार्जिनेलाइजेशन, डायवर्सिटी एंड स्कूल्स सम्मेलन में प्रस्तुत।

कौल, वी (2014, नवंबर), ईपीए एंड इट्स लिंकेजेस विद हायर एजुकेशन पत्र दिल्ली स्थित लेडी इर्विन कॉलेज में आयोजित यूएनईएससीओ संगोष्ठी में प्रस्तुत।

माओ, एके (2015, मार्च), एक्स्पेरिएंसेज एंड लर्निंग ऑफ दि फील्ड एटैचमेंट कंपोनेंट्स इन दि एमए एजुकेशन प्रोग्राम इन दि स्कूल ऑफ एजुकेशन स्टडीज, एयूडी पत्र इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, भारत के शिक्षा विभाग के शिक्षकों के पेशेवर विकास (यूजीसी नेशनल सेमिनार ऑन क्वालिटी इश्यूज एंड प्रैक्टिसेज इन प्रोफशनल डिवलपमेंट ऑफ टीचर्स) के विशिष्ट मुद्दों और कार्यप्रणालियों पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय परिसंवाद में प्रस्तुत।

शर्मा, जी (2015, मार्च), चाइल्डहुड इन ए स्लम–स्पेस इन देल्ही : निगोशिएशंस, ऐस्पिरेशंस एंड स्ट्रेटीजिज पत्र अंबेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली, भारत में आयोजित एजुकेशन इन देल्ही : मार्जिनलाइजेशन, डाइवर्सिटी एंड स्कूल्स सम्मेलन में प्रस्तुत।

कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

''एजुकेशन इन देल्ही : मार्जिनलाइजेशन, डाइवर्सिटी एंड स्कूल्स'' पर एक तीन दिवसीय राष्ट्र स्तरीय सम्मेलन का आयोजन किया गया (18–20 मार्च 2015)।

एसईएस ने अमेरिका के यूटा स्थित ब्रायम (ब्रिघम) यंग विश्वविद्यालय के एजुकेशनल रिसर्च थ्यॉरी एंड मेथडॉलॉजी (शैक्षिक शोध सिद्धांत एवं प्रणाली विज्ञान) के प्राध्यापक प्रोफेसर स्टीवेन हाइट के फुल–ब्राइट फेलोशिप के कार्यकाल (जनवरी–अप्रैल 2015) के दौरान उनके भोजन–आवास का प्रबंध किया। प्रोफेसर हाइट ने एमए शिक्षा कार्यक्रम के दूसरे सत्र में आरंभिक शोध प्रणाली पाठ्यक्रम में एक मॉड्यूल मापांक की शिक्षा दी। ''कंटुअर्स ऑफ एजुकेशन स्कॉलरशिप इन न्यू देल्ही'' शोध अध्ययन के लिए एसईएस के प्राध्यापक वर्ग के दो सदस्यों ने उनके साथ कार्य किया है।

एमए शिक्षा कार्यक्रम के अंग के रूप में, कई छात्रों को एकलव्य, प्रथम, अमन बिरादरी और आधारशिला जैसे जानेमाने गैर–सरकारी संगठनों में नियुक्त हुए। स्कूल पूर्व अनुभागों की कक्षा कार्यप्रणालियों का अवलोकन करने हेतु छात्रों को क्षेत्र भ्रमण के लिए ईसीसीई के प्रथम बालवाड़ियों, आँगनवाड़ियों, सचल क्रेशों, डीसीसीडब्ल्यू पालना, जस्ट किड्ज क्रेश, आई आई टी नर्सरी स्कूल एवं लेडी इर्विन कॉलेज बाल शोध केंद्र जैसे विभिन्न केंद्रों के साथ–साथ डीपीएस द्वारका, सेंट मेरी स्कूल और शिक्षांतर जैसे स्कूलों में ले जाया गया। उनके स्व–विकास कार्यशालाओं के एक अंग के रूप में उन्होंने गुड़गाँव स्थित नॉस्टिक केंद्र का भ्रमण भी किया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग, रामजस कॉलेज और एनएमआरसी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा भारत में शिक्षा में आधुनिक परिवर्तन एवं चुनौतियों पर आयोजित वार्षिक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में ''हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन एंड दि क्वेश्चन ऑफ इनइक्वलिटी'' विषय पर जैन, मनीष ने एक विमर्शकार के रूप में कार्य किया (नवंबर 2014)।

साप्ताहिक परिसंवादों में प्रस्तुत व्याख्यान :

''शिवछत्रपति – कल्चरल वीव ऑफ ए पेडैगोजिकल टूल'', किशोर दराक, स्वतंत्र शोधकर्ता।

''ह्यूमेनाइजिंग एजुकेशन : आर्ट्स ऐज एन इनैबलिंग रिसोर्स'', डॉ. आशा सिंह, लेडी इर्विन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

''इग्जैमिनिंग दि कन्स्ट्रक्शन एंड आर्टिकुलेशन ऑफ चिल्ड्रेंस आइडेंटिटीज इन दि एवरीडे लाइफ ऑफ ए स्टेट–रन स्कूल'', डॉ. ज्योति दलाल, इंस्टिट्यूट ऑफ होम इकॉनॉमिक्स (गृह अर्थशास्त्र संस्थान), दिल्ली विश्वविद्यालय।

''कन्फिगरेशंस, मीनिंग एंड इंप्लिकेशंस ऑफ 'निगलेक्ट' इन स्टेट स्कूलिंग'', डॉ. राधिका मेनन, माता सुंदरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

''हैंड प्रिफरेंस एंड टेक्टाइल कॉग्निशन : ए डिवेलपमेंटर पर्सपैक्टिव'', प्रोफेसर मिरियम इत्तियेरा, इंस्टिट्यूट ऑफ कम्यूनिकेशन एंड कॉग्निटिव न्यूरोसाइंसेज (संचार एवं ज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान संस्थान), केरल।

''अर्ली चाइल्डहुड 2014 : करेंट ट्रेंड्स एंड मूविंग फॉरवर्ड'', डॉ. जॉन लोंबार्डी, बाल विकास के अंतरराष्ट्रीय विशषज्ञ, संप्रति ईसीडी सलाहकार (ईसीडी एडवाइजर), बर्नार्ड वान ल्वेर फाउंडेशन, दि नीदरलैंड्स (हॉलैंड)।

''लैंग्वेज एंड एजुकेशन'', प्रोफेसर कृष्ण कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय।

''कैन एक्सपोजर टु वर्क–कंटेक्स्ट्स क्रिएट आपॉरच्यूनिटिज फॉर मैथेमैटिक्स लर्निंग? –– ए केस ऑफ आउट–ऑफ–स्कूल मेजरमेंट नॉलेज'', डॉ. अरिंदम बोस, एचबीसीएसई, मुंबई।

''मिथ्स एंड फैक्ट्स ऑफ ईसीई इन इंडिया : ए हिस्टॉरिकल एनैलिसिस'', डॉ. बलजीत कॉर।

''दि एन्शिएंट साइंस ऑफ चाइल्ड डिवेलपमेंट'', सुश्री साक्षी भारद्वाज, प्रबंधक एवं राष्ट्रीय समन्वयक, आद्या परम योग पीठ।

मानव पारिस्थितिकी अध्ययनशाला (एसएचई)

एसएचई का लक्ष्य सामाजिक और प्राकृतिक विज्ञानों के परिदृश्यों से युक्त पर्यावरण सरोकारों के एक गहरे और बहुआयामी ज्ञान का विकास करना है। विद्यालय अपने छात्रों से सामाजिक समता, अकादमिक पकड़ और पारिस्थितिकी सतता के संतुलन को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण सरोकारों का विश्लेषण और समाधान करने के लिए इस ज्ञान और कौशलों के साथ स्नातक होने की अपेक्षा रखता है। एसएचई में क्षेत्र आधारित शिक्षा और क्षेत्र शोध को बढ़ावा दिया जाता है, जिसमें सिद्धांत को प्रयोग से जोड़ा जाता है। पर्यावरण एवं विकास में एमए (एमएईडी) और मानव पारिस्थितिकी में पीएच.डी. कार्यक्रम एसएचई के प्रमुख कार्यक्रम हैं। इन कार्यक्रमों में मानव समाज के आपसी सरोकारों और ग्लोबल साउथ के अनुभवों में निहित परिदृश्यों के साथ–साथ जैवभौतिकी पर्यावरण की अंतर्विषयक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाता है।

पर्यावरण एवं विकास में एमए

पर्यावरण एवं विकास में एमए (एमएईडी) कार्यक्रम अपने विन्यास एवं क्षेत्र में भारत में विशिष्ट है। कार्यक्रम इस संकल्पना से प्रेरित है कि सामाजिक–राजनीतिक एवं जैवभौतिकी कारकों के एक दूसरे पर जटिल प्रभाव के फलस्वरूप वायुमंडल में प्रदूषण,

संसाधन में कमी और पर्यावरण प्रणालियों तथा जैवविविधता के समक्ष संकट जैसी चुनौतियाँ सामने आती हैं। इस कार्यक्रम के अध्यापन में क्षेत्र आधारित शिक्षा, छात्रों को व्यक्तिगत परामर्श और पाठ्यक्रम के विशेषज्ञों की सलाह तथा छात्रों के मत पर आधारित नियमित मूल्यांकन पर बल दिया जाता है। पर्यावरण एवं विकास में एमए कर चुके छात्र सरकारी संस्थाओं, शिक्षा जगत, गैर–सरकारी संगठनों, सलाहकार कंपनियों, नागर समाज के कार्यों और संचार माध्यमों रोजगार पाने में बहुत सफल रहे हैं।

सहयोजन

एसएचई ने हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले में कृषि विकास पर एक शोध हेतु सितंबर 2014 से अगस्त 2015 तक के लिए लंदन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स के मानव–विज्ञान विभाग के डॉक्टोरेट प्राप्त (पोस्टडॉक्टोरल) शोधकर्ता रिचर्ड एक्सेलबी को आमंत्रित किया। खेतिहर परिवारों के जीविकोपार्जन के उपायों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, उनका शोध इस बिंदु पर केंद्रित है कि विकास की प्रक्रियाओं के अंग के रूप में आर्थिक अवसरों में सुधार कैसे हो।

भारत में सतत् विकास की अंतर्विषयक पद्धतियों पर ध्यान के साथ, 14 अक्टूबर 2014 को एसएचई ने दि ऑक्स्फोर्ड इंडिया सेंटर फॉर सस्टेनेबल डिवेलपमेंट (ओआइसीएसडी) के आल्फ्रेड गाथोर्न–हार्डी की मेजबानी की।

14 अक्टूबर 2014 को एसएचई ने इंडियन स्कूल ऑफ बिजिनेस, हैदराबाद के डॉ. अश्विनी छत्रे की मेजबानी की। सहयोग कायम करने के उद्देश्य से, उन्होंने भारत में वर्षा पोषित खेती के सामाजिक पहलुओं पर अपना शोध साझा किया। इसमें सहायक एवं प्रधान आँकड़ों की सुविधा, क्षेत्र–कार्य के लिए स्थलों की सुलभता और क्षेत्र–कार्य हेतु फेलोशिप के संदर्भ में छात्रों और शिक्षक की सहायता करना शामिल है।

1 दिसंबर, 2014 को एसएचई ने डॉ. पैट्रिक ऑस्कर्सन के साथ पारस्परिक कार्य का आयोजन किया, जिन्होंने पूर्व में अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में एक सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्य किया और मध्य व दक्षिण भारत में औद्योगिकीकरण एवं खनन की राजनीतिक अर्थव्यवस्था तथा उपेक्षित वर्गों के उनके पक्ष का मंतव्य के सुने जाने की संभावनाओं पर नागरिक समाज समूहों के साथ सहयोगपूर्ण शोध कार्य किया।

उपलब्धियाँ / प्रतिष्ठा / पुरस्कार

स्नातक के प्रथम वर्ष के जिन छात्रों को एक अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में पर्यावरण का अध्ययन करना है, उनके लिए, अस्मिता काबरा विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र, नई दिल्ली को उनकी सामग्री पर सलाह देने हेतु सीबीएसई यूजीनेट कार्यक्रम के सलाहकार बोर्ड में शामिल हुईं।

रोहित नेगी बांगडुंग सम्मेलन के 60 वर्षों के स्मृति समारोह की एक कार्यक्रम श्रृंखला बांगडुंग +60 की वैज्ञानिक समिति में शामिल हुए।

सुरेश बाबू भारतीय पर्यावरण अर्थशास्त्र सोसाइटी (आइएनएसईई) की कार्यकारी समिति में शामिल हुए।

शोध परियोजनाएँ

व्यक्तिगत परियोजनाएँ :

ओइनम हेमलता देवी, प्रधान शोधकर्ता ''कल्चर एंड इकॉलॉजी ऑफ सैक्रेड ग्रूव्ज एंड टेंपल्स इन मणिपुर'' आइसीएसएसआर द्वारा वित्त पोषित (एक वर्ष, 4 लाख रुपये)।

सुरेश बाबू, प्रधान शोधकर्ता ''इकॉलॉजिकल रिस्टोरेशन ऑफ डिग्रेडेड लैंडस्केप इन बोलानी आइरन ओर माइन्स ऑफ एसएआइएल : ए मॉडल फॉर सस्टेनेबल डिवेलपमेंट, बायॉडाइवर्सिटी कंजर्वेशन एंड सीओ2 मिटिगेशन स्ट्रेटीजी'' स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड द्वारा वित्त पोषित (3 वर्ष, जारी, 75 लाख रुपये)।

सहयोगी परियोजनाएँ :

प्रवीण सिंह, रोहित नेगी और अस्मिता काबरा ''मैपिंग सोशियो–इकॉलॉजिकल वल्नरेबिलिटी'' आइसीएसएसआर द्वारा वित्त पोषित (3 वर्ष, जारी, 21.88 लाख रुपये)।

सुरेश बाबू, रोहित नेगी और अस्मिता काबरा ब्रिटिश काउंसिल के साथ एक अंतर–विश्वविद्यालय सहयोगी परियोजना ''ई–क्वाल : एनहैंसिंग अंडरगेजुएट एजुकेशन इन इंडिया'' यूरोपियन यूनियन द्वारा वित्त पोषित (4 वर्ष, 132.6 लाख रुपये)।

प्रस्तुतियाँ

बाबू, एस (2014, सितंबर), रिस्टोरेशन इकॉलॉजी : साइंस एंड प्रैक्टिस फॉर फ्यूचर, महाकौशल विज्ञान परिषद, जबलपुर द्वारा आयोजित जेआइजीवाइएएसए (जिज्ञासा) के एक अंग के रूप में प्रस्तुत व्याख्यान।

——, (2015, फरवरी), रिस्टोरिंग वेटलैंड्स : चैलेंजेज एंड ऑपरट्युनिटीज वार्ता भारतीय लोक प्रशासन संस्थान में आयोजित सम्मेलन मार्जिनल इकॉलॉजीज में प्रस्तुत।

——, (2015, मार्च), पेडागॉजिकल चैलेंजेज इन इंटरडिसिप्लिनरी टीचिंग—लर्निंग वार्ता नेहरू ''पेडागॉजिकल चैलेंजेज इन दि इंटरडिसिप्लिनरी'' पर आइआइपीए में आयोजित कार्यशाला में प्रस्तुत।

——, (2015, मार्च), मार्जिनैलिटी, सुनामी—ऐड एंड ट्रांस्फॉर्मेशन इन दि निकोबार आइलैंड्स वार्ता नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय में इकॉलॉजी एंड सोसाइटी (पारिस्थितिकी एवं समाज) पर आयोजित कार्यशाला के एक अंग के रूप में प्रस्तुत।

बाबू, एस एवं सहगल, एस (2014, दिसंबर) इंटेग्रेटिंग मल्टिपल स्टेकहोल्डर्स इन दि इकॉलॉजिकल रिस्टोरेशन ऑफ एन आइरन ओर माइन इन ओडिशा, इंडिया पत्र अमेरिका के वाशिंगटन डीसी में ईकोसिस्टेम सर्विसेज (एसीईएस/पारिस्थितिकी प्रणाली सेवा) पर आयोजित सम्मेलन में प्रस्तुत।

हेमलता देवी, ओ (2014, मई) एथ्नोमेडिसीन : एन इनसाइट इन्टु कल्चरल कोहेजन एंड एथ्निक आइडेंटिटी पत्र भारतीय चिकित्सा मानव—विज्ञान सोसाइटी, मैसूर, कर्नाटक और कृषि एवं उद्यानकृषि विश्वविद्यालय शिमोगा द्वारा आयोजित चैलेंजेज ऑफ ट्रेडिशनल हीलिंग सिस्टेम एंड हीलर्स इन इंडिया : सोशियो—कल्चरल, लीगल, एथिकल, हैबिटैट कंजर्वेशन एंड फार्माकोलॉजिकल डाइमेंशंस के चौथे सम्मेलन में प्रस्तुत।

——, (2014, नवंबर), ह्यूमन ईकोलॉजी थ्रू एन एंथ्रोपॉलॉजिकल लेंस व्याख्यान दिल्ली विश्वविद्यालय के मानव—विज्ञान विभाग में आयोजित परिसंवाद सेलिब्रेटिंग दि स्पिरिट ऑफ एंथ्रोपॉलॉजी में प्रस्तुत।

——, (2015, मार्च), ईश्यूज एंड चैलेंजेज ऑफ नॉर्थ—ईस्ट इंडिया : एन इनसाइडर्स पर्स्पेक्टिव व्याख्यान दिल्ली विश्वविद्यालय के सीआइई में प्रस्तुत।

काबरा ए (2014, नवंबर), पॉवर, कास्ट एंड मोबिलिटी, पत्र आइआइएफएम भोपाल में आयोजित नेटवर्क ऑफ रूरल एंड एग्रेरियन स्टडीज (एनआरएएस) की तीसरी कार्यशाला में स्टडीइंग दि रूरल शीर्षक पैनेल में प्रस्तुत।

——, (2015, मार्च), डिस्प्लेसमेंट, पॉवर एंड इकॉनॉमिक मोबिलिटी अमंग रीसेट्लर्स : लेसंस फॉर पॉलिसी, पत्र संयुक्त राज्य अमेरिका के पिट्सबर्ग में सोसाइटी फॉर एप्लाइड एंथ्रोपॉलॉजी की वार्षिक बैठक में प्रस्तुत।

——, (2015, मार्च), दि टेकिंग स्टेट : इनवॉलंटरी डिस्प्लेसमेंट एंड दि एवरीडे पॉलिटिक्स ऑफ लिवीहुड रिस्क्स एंड रेसिस्टैंस, व्याख्यान ब्लूमिंगटन स्थित इंडयाना विश्वविद्यालय के ज्यॉग्राफी कॉलोक्वियम में आमंत्रित।

नेगी, आर (2014, मई), कॉपर्स मैटिरिएलिटी एंड दि मेकिंग ऑफ अर्बन स्पेस, व्याख्यान नई दिल्ली स्थित दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान संकाय में प्रस्तुत।

——, (2015, मार्च), नोट्स ऑन कंटेंपोरेरी पॉलिटिकल इकॉनॉमी ऑफ इंडिया, व्याख्यान तुरीन विश्वविद्यालय में प्रस्तुत।

सिंह, पी (2015, मार्च), बाढ़ से अनुकूलन की परंपराएँ : एक प्रारंभिक विश्लेषण, व्याख्यान नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय में सोसाइटी एंड हिस्ट्री शीर्षक व्याख्यानमाला में प्रस्तुत।

कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

संप्रति चालू परियोनजा ई–क्यूयूएएल (ई–क्वाल) के एक अंग के रूप में, मानव पारिस्थितिकी पर स्नातक की एक प्रस्तावित अंतरविषयक पाठ्यक्रम सामग्री के निर्धारण और विमर्श हेतु 8 मई, 2014 को एक एक–दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। ई–क्वाल (भारत में अंतर स्नातक शिक्षा गुणवत्ता, सुलभता एवं शासन संवर्धन) ब्रिटिश काउंसिल, नई दिल्ली की सहायता से शुरू की गई एक 4 वर्षीय अंतर–संस्थागत सहयोगी परियोजना है, जिसमें चार भारतीय और दो यूरोपीय विश्वविद्यालय भागीदार हैं। एयूडी मानव पारिस्थितिकी–विज्ञान के क्षेत्र में अग्रसर होकर कार्य कर रहा है, जिसे परियोजना के चार महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक के रूप में स्थान दिया गया है।

दिल्ली स्थित भारतीय लोक प्रशासन संस्थान में मार्जिनल ईकोलॉजीस पर 27 फरवरी से 1 मार्च 2015 तक एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में भारतीय राज्य,

अर्थव्यवस्था और शैक्षिक ज्ञान सृजन के उपेक्षित क्षेत्रों में पर्यावरण और समाज के संबंध पर कार्य करने वाले विद्वान एवं कार्यकर्ता एक स्थल पर एकत्र हुए। नितिन सेठी (सहयोगी संपादक, बिजिनेस स्टैंडर्ड) का सारगर्भित व्याख्यान एनर्जी, इन्वायरन्मेंट एंड पॉवर्टी : इंटेरोगेटिंग मल्टीपल डिलेमाज।

एसएचई (शी) में मानव पारिस्थितिकी–विज्ञान में पीएचडी विद्वानों के जारी शोध पर अक्टूबर–नवंबर 2014 के दौरान एक शृंखलाबद्ध संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस शृंखलाबद्ध संगोष्ठी के दौरान एसएचई के सभी पीएच.डी. विद्वानों ने अपने जारी शोध पर प्रस्तुतियाँ दीं।

दि लैंड एक्विजिशन ऑर्डिनेंस 2014 : ए क्रिटिकल रिव्यू पर मल्टिपल रिसर्च ग्रुप की स्वतंत्र कानूनी सलाहकार एवं पूर्व–निदेशक आभा सिंघल जोशी ने एक व्याख्यान दिया (9 फरवरी 2015)।

अमेरिका के विस्कॉन्सिन स्थित इंटरनेशनल क्रेन फाउंडेशन की ऐनी लेसी ने चैलेंज ऑफ कन्जर्वेशन ऑफ सैंडहिल क्रेन्स इन विस्कॉन्सिन (सैंडहिल क्रेन्स के संरक्षण की चुनौतियों) और किसानों व संरक्षणवादियों के बीच संघर्ष पर नियंत्रण की सफल रणनीतियों पर एक व्याख्यान दिया (21 अक्टूबर 2014)।

इंटरनेशनल क्रेन फाउंडेशन एंड नेचर कंजर्वेशन फाउंडेशन के गोपी सुंदर केएस ने भारत के मानव प्रभुत्व वाले भूभागों में कृषि क्षेत्रों में संकटग्रस्त सारस क्रेन के संरक्षण की चुनौतियों पर एक व्याख्यान दिया (17 अक्टूबर 2014)।

अमेरिका के विस्कॉन्सिन स्थित इंटरनेशनल क्रेन फाउंडेशन जूली लांगेनबर्ग ने क्रेन्स एंड ग्लोबल इनिशिएटिव्स फॉर कंजर्वेशन (सारस एवं संरक्षण के वैश्विक प्रयास) पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया (21 नवंबर 2014)

प्रिंसटन विश्वविद्यालय के पीएच.डी. प्राप्त विद्वान नितिन शेखर ने टाइगर, ट्राइब्स एंड ब्योरोक्रैट् : पर्सुएडिंग आदिवासीज टु वॉलंटैरिली रिलोकेट फॉर कंजर्वेशन पर एक व्याख्यान दिया (20 फरवरी 2015)।

एसएचई–एयूडी की एसएआइएल (सेल) परियोजना के शोध सहायक शशांक भारद्वाज ने रिक्रिएटिंग लाइवलीहुड्स अमंग कन्जर्वेशन रिफ्यूजिस थ्रू ईकॉलॉजिकल रिस्टोरेशन पर एक व्याख्यान दिया (24 फरवरी 2015)।

कंटेंपोरेरी इंडिया एरिया स्टडीज (आइएनडीएएस / समकालीन भारत क्षेत्रीय शोध) के सहयोग से शिव नादर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित इंटरनेशनल कॉन्फेरेंस,

पर्स्पेक्टिव्स, डायलॉग्स एंड चैलेंज : इंडिया, जापान एंड दि मेकिंग ऑफ मॉडर्न एशिया सम्मेलन के दौरान अस्मिता काबरा ने ''नेटवर्क्स एंड इंटेग्रेशन'' सत्र की अध्यक्षता की (13 –15 दिसंबर 2014)।

''लेबरिंग वीमेन : सम मेजर कन्सर्न्स ऐट दि करेंट जंक्चर'' पर सीआइएसएलएस–यूएनडब्ल्यूओएमईएन (सीआइएसएलएस–अनवीमेन) इंटरनेशनल कॉन्फेरेंस में वीमेन एंड कॉमन प्रॉपर्टी रिसोर्सेज सत्र में अस्मिता काबरा विमर्शकार रहीं (31 जुलाई–1 अगस्त 2014)।

हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद, भारत में इंडो–यूरोपियन यूनियन (भारत–यूरोपीय संघ) परियोजना के लिए ''नेशनल रिसोर्सेज, एन्वायरन्मेंट एंड सस्टेनेबल डिवेलपमेंट'' पर आयोजित राष्ट्रीय परिसंवाद में अस्मिता काबरा ने एयूडी का प्रतिनिधित्व किया (8–9 अप्रैल 2014)।

भारत–यूरोपीय संघ की सहयोगी परियोजना ई–क्वाल के लिए अस्मिता काबरा ने अंबेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली में ''ह्यूमन ईकॉलॉजी (मानव पारिस्थितिकी–विज्ञान)'' पर एक राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया और उसमें सहभागिता की (8 मई 2014)।

बेंगलुरु में स्टूडेंट कॉन्फेरेंस ऑन कन्जर्वेशन साइंस (संरक्षण विज्ञान छात्र सम्मेलन) में ''रिसर्च एन्वायरन्मेंटल इश्यूज विद ह्यूमन सब्जेक्ट्स : एन इन्ट्रोडक्शन टु मिक्स्ड मेथड्स ऐप्रोचेज'' पर अस्मिता काबरा ने एक कार्यशाला का आयोजन किया (25–28 सितम्बर 2014)।

अस्मिता काबरा ने भारतीय लोक प्रशासन संस्थान में मार्जिनल ईकॉलॉजीज शीर्षक सम्मेलन का आयोजन और पैनेल की अध्यक्षता की (27 फरवरी–1 मार्च 2015)।

अस्मिता काबरा ने मानव पारिस्थितिकी–विज्ञान विद्यालय, एयूडी में मार्जिनल ईकॉलॉजी पर एक सम्मेलन में ''स्टेट, मार्केट एंड एग्रेरियन ट्रांजिशन इन सेंट्रल इंडिया'' पर एक पैनल की अध्यक्षता की (27 फरवरी–1 मार्च 2015)।

अस्मिता काबरा ने नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय, तीन मूर्ति में ''शहर और पर्यावरण (सिटीज एंड एन्वायरन्मेंट)'' पर एक पैनल परिचर्चा की अध्यक्षता की (5 जून 2014)।

अस्मिता काबरा ने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, नई दिल्ली के लिए कंजर्वेशन ऑफ सोसाइटी (अप्रैल 2014), डिवेलपमेंट इन प्रैक्टिस (फरवरी 2015) एंड करेंट साइंस (फरवरी 2015) की पांडुलिपियों की समीक्षा की।

ओइनम हेमलता देवी ने ''डिवेलपमेंट ऑफ पार्टिक्यूलरली वल्नरेबल ट्राइबल ग्रुप्स (पीवीटीजी) पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया (22—26 सितम्बर)।

ओइनम हेमलता देवी ने मानव—विज्ञान शिक्षकों के लिए ''एंथ्रोपॉलॉजी एंड म्यूजियम'' पर आयोजित आइजीआरएमएस कार्यशाला में भाग लिया (7—9 जनवरी 2015)।

पुलक दास ने शिव नादर विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश में एक ई—क्वाल परियोजना सम्मेलन ''इनेबलिंग पेडागोजीस इन हायर एजुकेशन इन इंडिया'' में भाग लिया (26—27 मार्च 2015)।

पुलक दास ने नई दिल्ली ''दि क्लाइमेट रिएलिटी प्रॉजेक्ट, क्लाइमेट रिएलिटी लीडरशिप कॉर्प्स ट्रेनिंग'' में भाग लिया (22—24 फरवरी 2015)।

पुलक दास ने भारतीय लोक प्रशासन संस्थान में मार्जिनल ईकॉलॉजीज शीर्षक सम्मेलन का आयोजन और एक पैनल की अध्यक्षता की (27 फरवरी—1 मार्च 2015)।

पुलक दास ने स्प्रिंगर जर्नल एन्वायरन्मेंटल मॉनिटरिंग एंड एसेसमेंट के लिए पांडुलिपि का पुनर्विलोकन किया (जनवरी 2015)।

पुलक दास ने हैदराबाद विश्वविद्यालय के लिए एन्वायरन्मेंट, नेचुरल रिसोर्सेज एंड सस्टेनेबल डिवेलपमेंट (पर्यावरण, प्राकृतिक संसाधन एवं सतत विकास) पर पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार करने में सहायता की (फरवरी 2015)।

रोहित नेगी ने जापान के क्योटो स्थित दोशिशा विश्वविद्यालय में अफ्रीका—एशिया इन्टैंग्लमेंट्स इन पास्ट एंड प्रेजेंट पर सम्मेलन में भाग लिया (26—27 जुलाई 2014)।

रोहित नेगी ने हॉलैंड (दि नीदरलैंड्स) के डेल्फ्ट प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में अर्बन नॉलेज नेटवर्क एशिया परिसंवाद में भाग लिया (5 जून 2014)।

रोहित नेगी ने नई दिल्ली में अर्बन अनसर्टेनिटी, एलएसई—सिटीज, पर परिसंवाद में भाग लिया (9 नवंबर 2014)

रोहित नेगी ने इटली के बोलोना विश्वविद्यालय में ''एनहैंसिंग क्वॉलिटी, ऐक्सेस एंड गवर्नेंस ऑफ अंडरग्रेजुएट एजुकेशन इन इंडिया'' पर ऑल पार्टनर्स मीटिंग में भाग लिया (21—23 मई 2014)।

रोहित नेगी ने मेलॉन फाउंडेशन, कोलंबिया विश्वविद्यालय की ई–क्वाल परियोजना के तहत, 'अर्बन डेमोक्रेसी : इन्फॉर्मैलिटी, प्रिकैरिटी, मोड्स ऑफ सर्वाइवल' आइआइएएस, मुंबई में ब्रिटिश काउंसिल द्वारा समन्वित भारत–यूरोपीय संघ के सहयोजन में कार्यशाला में भाग लिया (10–11 दिसंबर 2014)।

रोहित नेगी ने भारतीय लोक प्रशासन संस्थान में मार्जिनल ईकॉलॉजी शीर्षक सम्मेलन का आयोजन और पैनल की अध्यक्षता की (27 फरवरी–1 मार्च 2015)।

रोहित नेगी एंटिपोड, जांबिया सोशल साइंस जर्नल, पैसिफिक अफेअर्स के निर्णयकर्ता (रेफरी) और फुलब्राइट–नेहरू फेलोशिप 2014 के निर्णायक मंडल के सदस्य रहे।

सुरेश बाबू ने इटली के बोलोना विश्वविद्यालय में ब्रिटिश काउंसिल द्वारा समन्वित भारत–यूरोपीय संघ की सहयोगी परियोजना ई–क्वाल के तहत ''एनहैंसिंग क्वॉलिटी, ऐक्सेस एंड गवर्नेंस ऑफ अंडरग्रेजुएट एजुकेशन इन इंडिया'' पर ऑल पार्टनर्स मीटिंग में भाग लिया (21–23 मई 2014)।

सुरेश बाबू ने भारत के हैदराबाद स्थित हैदराबाद विश्वविद्यालय में 'नेचुरल रिसोर्सेज, एन्वायरन्मेंट एंड सस्टेनेबल डिवेलपमेंट' पर आयोजित परिसंवाद में एयूडी का प्रतिनिधित्व किया (8–9 अप्रैल 2014)।

सुरेश बाबू ने अंबेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली में भारत–यूरोपीय संघ की सहयोगी परियोजना ई–क्वल के एक अंग के रूप में ''ह्यूमन ईकॉलॉजी'' पर राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया और उसमें भाग लिया (8 मई 2014)।

सुरेश बाबू ने ह्यूमन ईकॉलॉजी (2), करेंट साइंस (3) और कंजर्वेशन एंड सोसाइटी पत्रिकाओं के लिए पांडुलिपियों का पुनर्विलोकन किया।

पाठ्येतर गतिविधियाँ

एसएचई ने समीक्षाधीन वर्ष के दौरान छात्रों के एक श्रृंखलाबद्ध क्षेत्र–भ्रमण और अतिथि–व्याख्यानमाला का आयोजन किया। इनका विवरण इस प्रकार है :

पारिस्थितिकी एवं पारिस्थितिकी की विधियों का छात्रों को प्रशिक्षण देने हेतु उत्तराखंड के तिमली आरक्षित वन का भ्रमण (2–7 दिसंबर 2014)।

रिस्टोरेशन ईकॉलॉजी पर शोध हेतु हिमाचल प्रदेश के सिरमौर का क्षेत्र भ्रमण (2–6 मार्च 2015)।

दिल्ली की शहरी पारिस्थितिकी के अध्ययन हेतु संजय वन का भ्रमण (नवंबर 2014)।

पर्यावरण और स्वास्थ्य पर वैकल्पिक पाठ्यक्रम के लिए गाँव खयाला औद्योगिक क्षेत्र का भ्रमण (अक्टूबर/नवंबर 2014)।

मानव अध्ययनशाला (एसएचएस)

शिक्षण के माध्यम से व्यक्तिगत – जीवनों 'के' और जीवनों के 'प्रति', अपने वातावरण – परिवार, समुदाय, बदलती जीवनशैलियों, संबंधों, यौनिकता, कार्य स्थलों के बदलते चरित्र, जीवन की अवस्थाओं (खास तौर पर वृद्धावस्था) आदि से जुड़े मुद्दों के समाधान हेतु एसएचएस ने भारतीय शिक्षा जगत में प्रायः पहली बार मनोविज्ञानियों, सामाजिक मानव विज्ञानियों, समाजशास्त्रियों, राजनीति विज्ञानियों, नारीवादी विद्वानों, दार्शनिकों के एक अंतरविषयक समूह का समाहार किया है। मानवीय अनुभव, सोच और सपने को संरक्षित और मुक्त रखते हुए एसएचएस हमारे समय की खास यथार्थताओं के साथ सोद्देश्य और महत्वपूर्ण संबंध को बढ़ावा देने का प्रयास करता है। विद्यालय की कल्पना वैचारिक धुरी और संबद्ध प्रणालियों, जिनसे इसके कार्यक्रमों के महत्व की जानकारी मिलती है, तथा शिक्षण, सलाह, मूल्यांकन, शोध की प्रक्रियाओं और समाज की परंपरा के क्षेत्रों की सहभागिता के एक विन्यास पर की गई है। मानव जीवन और जीवन की घटनाओं के प्रति कुछ गंभीर मुद्दों को, हँसते–खेलते समझने के लिए, जिनका सामान्य स्थिति में उच्चतर शिक्षा से कोई संबंध नहीं होता, संप्रति, स्कूल में एमए मनोविज्ञान (मनोवैज्ञानिक नैदानिक अध्ययन), एमफिल मनोसामाजिक व नैदानिक विचार, एमए जेंडर अध्ययन, एमफिल विकास प्रणाली, एमफिल/पीएच.डी. महिला एवं जेंडर अध्ययन और पीएच.डी. मनोविज्ञान की शिक्षा का प्रावधान है। इसके अतिरिक्त, एसएचएस विकास प्रणाली केंद्र (सेंटर फॉर डिवेलपमेंट प्रैक्टिस), मनश्चिकित्सा एवं नैदानिक शोध केंद्र (सेंटर ऑफ साइकोथिरैपी एंड क्लिनिकल रिसर्च) और एक मनोचिकित्सा एवं परामर्श निदान–गृह 'एहसास' से संबद्ध है।

एमफिल/पीएच.डी. महिला एवं जेंडर अध्ययन कार्यक्रम

महिला एवं जेंडर अध्ययन कार्यक्रम में एमफिल/पीएच.डी. का पाठ्यक्रम 27 अगस्त 2012 को शुरू किया गया। एयूडी एवं महिला विकास अध्ययन केंद्र (सीडब्ल्यूडीएस) के

सहयोग से उद्भूत ये कार्यक्रम एक विशिष्ट प्रयास हैं। यह सहयोग एक शोध क्षेत्र, सीडब्ल्यूडीएस और एक नितांत शैक्षिक क्षेत्र, पाठ्यक्रमों एवं अध्यापन के नए रूपों के साथ प्रयोगरत एयूडी के एकजुट होने का परिणाम है। कार्यक्रम देश भर में महिला शोध कार्यक्रमों द्वारा किए गए श्रेष्ठ एवं समृद्ध कार्य का प्रयोग करता है। इस एमफिल/पीएच.डी. कार्यक्रम की एक विशिष्टता यह भी है कि यह एसएचएस के भीतर अवस्थित है और अपने भीतर और विषय के बाहर के आयाम में अपना ध्यान विषय (लिंग केंद्रित) की जटिलता पर केंद्रित रखता है। कार्यक्रम में महिला अधीनता के कारणों, संदर्भों और परिणामों के अतिरिक्त जाँच की एक वस्तु के रूप में जेंडर (संबंध) के महत्व और शक्ति की वाहिकाओं और विन्यास के अध्ययन की आवश्यकता के विश्लेषणात्मक ज्ञान को शामिल किया जाता है। क्योंकि कार्यक्रम एयूडी में पहले से ही जारी एमए जेंडर अध्ययन से संबद्ध है, इसलिए एमफिल और पीएच.डी. कार्यक्रमों को शोध उपाधि के लिए आवेदकों के आंतरिक स्रोत और मौजूदा प्राध्यापक वर्ग व प्रशासनिक सहायता समेत संस्थागत आधारभूत संरचना का लाभ मिलता है। यही नहीं, एमए कार्यक्रम उन आगंतुक शोध छात्रों के लिए एक सेतु का कार्य भी करते हैं, जिन्हें क्षेत्र में कुछ पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों की आवश्यकता महसूस होती है। एयूडी ने महिला एवं जेंडर अध्ययनों के अपने परिप्रेक्ष्य का विस्तार कर उन्हें स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में शामिल किया है, इसलिए इस क्षेत्र का विकास करने और छात्रों को उच्चतम स्तरों – स्नातक से स्नातकोत्तर तक – पर प्रशिक्षण देने के लिए यह एक उपयुक्त स्थान होगा।

एमफिल मनोचिकित्सा एवं नैदानिक अध्ययन

यह एक तीन वर्षीय कार्यक्रम है जिसमें मनोविज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत चिकित्सकों और नैदानिक शोधकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया जाता है। इसका प्रधान कार्य मानसिक स्वास्थ्य अध्यवसायियों को तैयार करना है जो संवेदनशील, सक्षम और खुले मन के हों, और जो संस्कृति, इतिहास और राजनीति को समझते हों, और परामर्श में भी कार्य करें। लक्षणों को किसी व्यक्ति अथवा परिवार के जीवन इतिवृत्त से जोड़ते हुए, बल मानव द्वंद्वों और एक सुस्पष्ट अवस्थिति से संघर्षों के उतार–चढ़ावों को समझने पर दिया जाता है। सिद्धांत की गहन शिक्षा, सर्वेक्षित नैदानिक कार्य, चिकित्सक (क्लिनिसियन) की व्यक्तिगत चिकित्सा और नैदानिक शोध कार्य समेत इसमें नैदानिक दृष्टि से चिंतन करने की क्षमता को मजबूत करने की अपेक्षा की जाती है, जिसमें मानसिक अवस्थाओं की पहचान, निरूपण और अभिव्यक्ति शामिल हैं। इस लयात्मक प्रक्रिया को अपनाने

तथा इसके मनन से चिकित्सा और तदनंतर शोध के प्रति एक प्रवृत्ति को बल मिलता है। मनोचिकित्सा एवं नैदानिक अध्ययन में एमफिल कार्यक्रम को पीएच.डी. कार्यक्रम से लंबवत ढंग से जोड़ा गया है, जिसके लिए स्थानों की संख्या सीमित है।

पीएच.डी. मनोविज्ञान

इस कार्यक्रम से मनोवैज्ञानिक खोज की एक स्व–विवेचित व्याख्या का संवर्धन करने की अपेक्षित है। एक अंतर्विषयक शक्ति (संयोजन) और स्व–चिंतनशील परिप्रेक्ष्य से प्रेरित, शोध का यह मनोवैज्ञानिक ढाँचा ज्ञान और शक्ति दोनों के प्रति अविरत जिज्ञासा बनाए रखने का प्रयास करता और तदनंतर एक मनोवैज्ञानिक मानव विज्ञान अपनाने की इच्छा रखता है जो सांस्कृतिक स्तर पर संवेदनशील, उपनिवेशवादी मनोदशा से मुक्त और सामाजिक–राजनीतिक दृष्टि से विवेकशील हो। यह एक अंतर–विषयक शोध संवेदनशीलता को केंद्र में रखने का प्रयास करता है, जिसके भीतर जीवन की चेतन और अचेतन धाराओं, अनुभूतियों और घटना–क्रमिक प्रवाह को प्रमुखता दी जाए। जीवन और उसके संघर्षों के लिए कार्य करते और गुणवत्तापूर्ण कार्य, जिसमें सतत् सहभागिता को स्थान और शोधकर्ता और शोध्य के स्व में रूपांतरकारी क्षमताओं का प्रसार किया जाता है, पर ध्यान देते हुए, पाठ्यक्रम मनोवैज्ञानिक गतिशीलन की दृष्टि से प्रवण (प्रवृत्त), विवेचनात्मक, सहभागी और संवाद–संचार उन्मुखी कार्य आरंभ करने के इच्छुक भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए आधारशिला प्रस्तुत करता है।

प्रस्तुतियाँ

बिंदु केसी (2015, मार्च), 'यूनिवर्सिटी ऐज ए जेंडर्ड स्पेस' व्याख्यान आईआईटी, गुवाहाटी में विश्व महिला दिवस (इंटरनेशनल वीमेंस डे) 2015 के कार्यक्रम में प्रस्तुत।

——, (2015, फरवरी), 'कल्चर एंड कॉलॉनियलिज्म : मेथडॉलॉजिकल इश्यूज इन अंडरस्टैंडिंग दि जेंडर्ड पॉलिटिक्स ऑफ लेबर एंड एक्स्चेंज' पत्र दिल्ली स्थित नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय में आयोजित फिगुरेशंस ऑफ इंडियाज नॉर्थईस्ट : कल्चर्स, हिस्ट्रीज, वर्ल्डव्यूज सम्मेलन में प्रस्तुत।

सचदेव, डी (2104, मई) 'इंटेलेक्टुअल प्रॉपर्टी राइट्स : हूज रिसर्च इज इट?' पत्र लाहौर, पाकिस्तान में आयोजित ''रिसर्च एंड रेलिवैंस – रिसर्च नेटवर्क्स, टैलेंट मैनेजमेंट एंड दि क्वेस्ट फॉर इंटरनेशनल रेलिवैंस'' पर ब्रिटिश काउंसिल के दक्षिण

एशिया शिक्षा संवाद (ब्रिटिश काउंसिल्स साउथ एशिया एजुकेशन डायलॉग) माला में प्रस्तुत।

सहाय, वी (2014, अक्टूबर), 'डूइंग लॉ डिफरेंटली' पत्र ग्लोबल जिंदल विधि विद्यालय में 'लेफ्ट इन दि डार्क' सम्मेलन में प्रस्तुत, तदनंतर दिल्ली विश्वविद्यालय के फ्रीडम, प्रॉडक्टिविटी एंड दि मार्केट फ्रॉम दि जेंडर स्टडीज ग्रुप पर परिचर्चा।

——, (2015, मार्च) 'हू इज दि सब्जेक्ट ऑफ क्वीअर पॉलिटिक्स?' पत्र जिंदल ग्लोबल लॉ स्कूल में सेंटर फॉर हेल्थ, इथिक्स एंड टेक्नॉलॉजी (स्वास्थ्य, नैतिकता एवं तकनीकी केंद्र) में प्रस्तुत।

सोइबाम, एच (2014, नवंबर) एजिटेटिंग वीमेन, डिसरॉब्ड मदर्स : एन इन्क्वायरी इंटु दि वीमेन ग्रुप्स इन मणिपुर पत्र नगालैंड के जोत्सोमा स्थित सजोली कॉलेज में पॉलिटिक्स ऑफ लोकेशन विद स्पेशल रेफरेंस टु नॉर्थ ईस्ट इंडिया (पूर्वोत्तर भारत के विशेष संदर्भ में स्थल केंद्रित राजनीति) पर आयोजित परिसंवाद में प्रस्तुत।

——, (2015, मार्च) वीमेन पोएट्स एंड दि पोएट्री ऑफ प्रोटेस्ट व्याख्यान आईआईटी, गुवाहाटी में आयोजित विश्व महिला दिवस कार्यक्रम में प्रस्तुत।

वहाली, एचओ (2014, अप्रैल) एग्जाइल, एलिएनेशन एंड रिस्टोरेटिव केपैसिटीज इन अपरूटेड कम्यूनिटीज पत्र जेएनयू, दिल्ली में आयोजित तिब्बत सम्मिट (तिब्बत सम्मेलन) में प्रस्तुत।

वहाली, एचओ (2014, सितंबर) 'कुड आइ बिकम ह्यूमन बाइ इंगेजिंग विद योर अन(डर)स्टेटेड लाइफ?' स्ट्रगल्स फ्रॉम ए साइकोएनैलिटिकल पर्स्पेक्टिव ऑन लिसनिंग टु दि साइकोलॉजिकल वर्ल्ड ऑफ हिस्टॉरिकल सर्वाइवर्स, दि पुअर, होमलेस एंड दि मेंटली इल पत्र इलाहाबाद विश्वविद्यालय में साइकॉलॉजी एंड सोशल एक्सपल्सन पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत।

कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

जिमो, लोविटोली जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में नगा स्कॉलर एसोसिएशन (एनएसए) एवं दि हाओ रिसर्च इनिशिएटिव (टीएचआरआइ) द्वारा ''रिथिंकिंग दि नगाज इन दि कंटेंपोरेरी'' पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की आयोजन सचिव रहीं (20–21 मार्च 2015)।

नागलिया, शुभ्रा ने जेएनयू के कन्वेंशन सेंटर में नगा स्कॉलर एसोसिएशन (एनएसए) एवं दि हाओ रिसर्च इनिशिएटिव (टीएचआरआइ) द्वारा 'रिथिंकिंग दि नगाज इन दि कंटेंपोरेरी'' पर आयोजित एक दो–दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया (20–21 मार्च 2015)।

''आवाज'' उत्सव मनाया गया – वर्ल्ड मेंटल हेल्थ डे (विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस) (अक्टूबर, 2014)।

सहाय, वी ने राष्ट्रीय विधि विद्यालय, दिल्ली में इतरलिंगकामुकता (हेट्रोसेक्सुअलिटी) पर कार्यशाला का आयोजन किया (17 नवंबर, 2014)।

सहाय, वी ने शिव नाडर विश्वविद्यालय में (अगस्त 2014) और महिला अध्ययन केंद्र, जेएनयू में (सितंबर 2014) एक पत्र हू इज दि सब्जेक्ट ऑफ क्वीअर पॉलिटिक्स? प्रस्तुत किया।

वहाली, हनी ओ इलाहाबाद विश्वविद्यालय में ''साइकॉलॉजी एंड सोशल एक्सपल्सन'' पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में सूचीकार (पैनेलिस्ट) रहीं (21–22 सितंबर 2014)।

वहाली, हनी ओ ने लेडी श्री राम महिला कॉलेज में साइकॉलॉजी ऐट दि एजेज पर राष्ट्रीय परिसंवाद में मुख्य भाषण दिया (24 जनवरी 2015)।

ललित अध्ययनशाला (एसएलएस)

एसएलएस में विभिन्न अंतर्विषयक और परस्परव्यापी कार्यक्रमों का प्रावधान है, जो उच्च कोटि के अंतर्विषयक पाठ्यक्रमों, परस्पर प्रभावी अध्यापन और शिक्षा के माध्यम से ललित शिक्षा की सहायता करते, उसे बढ़ावा देते और उसकी पुनर्व्याख्या करते हैं, जो कक्षा के परिवेश से बाहर काम आती है।

उपलब्धियाँ / प्रतिष्ठा / पुरस्कार (सम्मान)

मलिक, सरोज बाला बीपीएस महिला विश्वविद्यालय, खान पुर सोनीपत में अध्ययन मंडल की सदस्य रहीं (2014)।

मलिक, सरोज बाला को दिल्ली स्थित आइजीएनओयू के एमएससी गणित में बीजगणित के मॉडरेटर के रूप में आमंत्रित किया गया।

मलिक, सरोज बाला को अग्रलिखित जर्नलों के लिए निर्णायक बनाया गया : (क) लिनियर अल्जेब्रा एंड मल्टि–लिनियर अल्जेब्रा (ख) अप्लाइड मैथेमैटिक्स एंड कम्यूनिकेशंस (ग) इलेक्ट्रॉनिक जर्नल फॉर लिनियर अल्जेब्रा।

वेंकटरमण, गीता रिसोनैंस – जर्नल ऑफ साइंस एजुकेशन, इंडियन एकेडमी ऑफ साइंसेज एंड स्प्रिंगर के संपादक मंडल की सदस्य बनीं (2015–17)।

वेंकटरमण, गीता लिट्ल मैथेमैटिकल ट्रेजर्स, रामानुजन मैथेमैटिकल सोसाइटी (रामानुजन गणित सभा) की सदस्य रहीं (2012–15)।

वेंकटरमण, गीता राष्ट्रीय उच्चतर गणित बोर्ड (नेशनल बोर्ड ऑफ हायर मैथेमैटिक्स), डीएई, भारत सरकार द्वारा प्रदत्त परियोजना ''इंडियन वीमेन एंड मैथेमैटिक्स'' के दक्षिण क्षेत्र की क्षेत्रीय समिति की सदस्य हैं (2013–2018)

वेंकटरमण, गीता दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफेंस कॉलेज में गणित में सहायक प्रोफेसर की चयन समिति की सदस्य रहीं (मार्च 2015)।

वेंकटरमण, गीता भारत सरकार की किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन योजना के अंतर्वीक्षा बोर्ड की सदस्य रहीं (जनवरी 2015)

वेंकटरमण, गीता टेक्नॉलॉजी विजन 2035 – शिक्षा क्षेत्र (टीआइएफएसी, भारत सरकार) की सलाहकार समिति की सदस्य रहीं (2012–2014)

शोध परियोजनाएँ

रसेली, रिंजू ''वल्नरेबल्स इन दि स्मॉल टी ग्रोअर सेक्टर : लोकेटिंग एथ्निसिटी एंड जेंडर इंटरफेस इन दि एसटीजीज वैल्यू चेन इन नॉर्थ बेंगाल।'' एनआरपीडी, विकास अध्ययन केंद्र (सेंटर फॉर डिवेलपमेंट स्टडीज), त्रिवेंद्रम द्वारा वित्त पोषित।

प्रस्तुतियाँ

चक्रवर्ती, डीएन (2014, जून), अबोर्स ऑफ एनईएफए : ए हिस्टॉरिकल पर्स्पेक्टिव। पत्र चीनी अध्ययन संस्थान (इंस्टिट्यूट ऑफ चाइनीज स्टडीज/आइसीएस) एवं आइआइएएस के शिमला सम्मेलन में प्रस्तुत।

——, (2015, फरवरी), कलेक्शन ऑफ नैरेटिव्स एंड कम्यूनिटी नॉलेज सिस्टम। पत्र भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण (एंथ्रोपॉलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया), गुवाहाटी द्वारा कम्यूनिटी लेवेल कल्चर रिसोर्स सेंटर पर आयोजित कार्यशाला में प्रस्तुत।

गोस्वामी, पी (2014, दिसंबर), एक्स्टेंसंस ऑफ सम जेनरलाइज्ड कंडिशंस फॉर स्टारलाइकेन्स एंड कन्वेक्सिटी। पत्र अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कॉलेज, विल्लुपुरम में गणित एवं उपयोग आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत।

मीर, यू (2014, नवंबर), हेल्थ एंड वेल—बीइंग : रिसेंट डिवेलमेंट्स एंड चैलेंजेज। पत्र जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली के मनोविज्ञान विभाग में आयोजित परिसंवाद में प्रस्तुत।

——, (2014, जून), रोल ऑफ हाइअर एजुकेशन इन डिजास्टर मैनेजमेंट विद स्पेशल रिफरेंस टु दि ट्वल्थ प्लान। व्याख्यान दिल्ली विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग में आयोजित परिसंवाद में प्रस्तुत।

नाइट, डीके (2014, मार्च), एप्रोप्रिएशन ऑफ लेबर? दि माइनवर्कर्स इन साउथ अफ्रीकन गोल्ड एंड कोल माइन्स, 1951—2011। पत्र ''लेबर हिस्ट्री : रिटर्न टु पॉलिटिक्स?'' पर दिल्ली (नोइडा) में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत।

——, वू/मेन माइनवर्कर्स एंड फैमिली—ओरिएंटेड लेबर : इंडियन कोलियर्स 1895—1948। पत्र ऑस्ट्रेलिया के चार्टर्स टॉवर्स में आयोजित इंटरनेशनल माइनिंग हिस्ट्री कांग्रेस में प्रस्तुत।

——, (2014, जुलाई), रीविजिटिंग दि लेबर इकॉनॉमी : दि माइनवर्कर इन साउथ अफ्रीकन माइनफील्ड्स, 1951–2011। पत्र जोहान्सबर्ग में पॉलिटिक्स ऑफ सोशल चेंज एंड सोशल चेंज इन पॉलिटिक्स पर आयोजित संगोष्ठी में प्रस्तुत।

रसेली, आर (2014, अगस्त), ह्वेदर कंट्रैक्चुलाइजेशन ऐड्स टु हेल्थ हेजार्ड्स? ए स्टडी ऑफ सेलेक्ट मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स इन देल्ही। पत्र जर्मनी के फ्रैंकफर्ट में सुरक्षा एवं स्वास्थ्य पर आयोजित 20वें विश्व कांग्रेस (ट्वेंटीथ वर्ल्ड कांग्रेस ऑन सेफ्टी एंड हेल्थ) में प्रस्तुत।

——, (2014, दिसंबर), कंटुअर्स ऑफ वीमेंस लेबर : लिव्ड रिऐलिटीज इन दि नॉर्थ बेंगाल टी प्लैंटेशंस ऑफ इंडिया। पत्र आइआइटी मद्रास में टी फॉर डेविड (प्रॉफ. डेविड वाशब्रुक के सम्मान में) पर आयोजित राष्ट्रीय परिसंवाद में प्रस्तुत।

——, (2015, जनवरी), हेल्थ एंड मेडीसीन इन कॉलॉनियल दार्जीलिंग टी प्लांटेशंस। पत्र आइआइटी मद्रास में आयोजित हिस्टॉरिकल ट्रेंड्स एंड कंटेपोरेरी चैलेंजेज इन दि प्रैक्टिस ऑफ मेडीसीन इन इंडिया पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत।

सेन, आर (2014, जुलाई), फ्रॉम नेमिंग टु वॉयसिंग आइडेंटिटीज एंड रिलेशनशिप्स : कैप्चरिंग प्लुरल सेक्सुअलिटीज इन कोलकाता। पत्र स्विट्जरलैंड के ज्यूरिख विश्वविद्यालय में दक्षिण एशियाई अध्ययन पर आयोजित यूरोपियन सम्मेलन में प्रस्तुत।

——, (2014, अक्टूबर), वायॉलेशन ऑर वायॉलेंस : अंडरस्टैंडिंग 'क्रिमिनैलिटी' विदीन ज्यूरिडिसल

स्पेसेज : पत्र सोनीपत स्थित जिंदल ग्लोबल स्कूल में ''लेफ्ट'' इन दि डार्क? पोस्टकॉलॉनियल कन्वर्सेशंस ऑन लॉ, नियोलिबरलिज्म एंड क्वीअर–फेमिनिस्ट फ्यूचर्स पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत।

——, (2014, अक्टूबर) ब्रेकिंग दि साइलेंस ऑन दि 'अनफैमिलियर' : लॉ एंड इन्टिमेट रिलेशनशिप्स। पत्र हैदराबाद विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में अनफैमिलियर मार्जिन्स इन दि सोशल पर आयोजित परिसंवाद में प्रस्तुत।

——, (2014, सितंबर) फ्रॉम साइट्स टु सोर्सेज : रिफ्लेक्शंस ऑन रिसर्च मेथडॉलॉजीज इन सोशियॉलॉजी एंड लॉ। पत्र जेएनयू के कानून एवं शासन अध्ययन केंद्र (सेंटर फॉर स्टडी ऑफ लॉ एंड गवर्नैंस) में प्रस्तुत।

——, (2014, सितंबर), 'नो' मीन्स 'येस', 'येस' इज 'मे बी', 'नो' मीन्स 'नो' : इंटरप्रेटिंग कन्सेंट इन इंटिमेट रिलेशंस। पत्र जेएनयू के महिला अध्ययन केंद्र में प्रस्तुत।

——, (2014, सितंबर), जर्नीज इन दि जेंडर्ड सोशल : पब्लिक सोशियॉलॉजी एंड फेमिनिस्ट ऐक्टिविज्म थ्रू टीचिंग एंड लर्निंग। पत्र सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित ''सोशियॉलॉजिस्ट्स एंड सोशियॉलॉजी : ऑटोबायॉग्राफीज एंड बायॉग्राफीज'' सम्मेलन में प्रस्तुत।

——, (2014, नवंबर), लोकेटिंग दि 'सेल्फ' इन दि जेंडर्ड 'सोशल' : इंटरऐक्शंस बिटवीन सोशियॉलॉजिकल प्रैक्टिस (प्रैक्टिसेज) एंड फेमिनिस्ट पेडैगॉजी। पत्र महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के समाजशास्त्र विभाग द्वारा भारतीय सामाजिक संस्था में आयोजित 40वें अखिल भारतीय सामाजिक सम्मेलन ''डिवेलपमेंट, डाइवर्सिटी एंड डिमॉक्रेसी,'' में प्रस्तुत।

——, (2014, दिसंबर), स्टडीइंग इन कोलकाता ऑर स्टडीइंग कोलकाता इन सोशियॉलॉजी। पत्र प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में आयोजित सम्मेलन ''सोशियॉलॉजिकल पर्स्पेक्टिव : ओल्ड एंड न्यू,'' में प्रस्तुत।

——, (2015, मार्च), मेन इन फेमिनिज्म ऑर फेमिनाइजिंग मैस्क्यूलीन पॉलिटिक्स : रिफॉमर्स, रेडिकल्स ऑर फ्रेंड्स? पत्र दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफेंस कॉलेज के सेंटर फॉर जेंडर, कल्चर एंड सोशल प्रॉसेसेज (जेंडर, संस्कृति एवं सामाजिक प्रक्रिया केंद्र) द्वारा आयोजित ''इंटेरोगेटिंग मैस्क्यूलिनिटीज'' सम्मेलन में प्रस्तुत।

——, (2015, अप्रैल), प्रैक्टिस इन दि 'फील्ड' : डायलॉग्स, डिलेमाज एंड डिस्कोर्सेज। पत्र प्रदान (पीआरएडीएएन), विकास प्रणाली केंद्र (सेंटर फॉर डिवेलपमेंट प्रैक्टिस) एवं स्टुअर्ट विश्वविद्यालय ऑस्ट्रेलिया द्वारा आयोजित संगाष्ठी रिसर्च एंड एजुकेशन फॉर रूरल डिवेलपमेंट एंड फूड सिक्योरिटी टु बिल्ड रिसिलिएंट एन्वायरन्मेंट्स : ऑस्ट्रेलियन एंड इंडियन पर्स्पेक्टिव्स में प्रस्तुत।

वेंकट, जी (2014, मई), एक्स्प्लोरिंग सिमेट्री। व्याख्यान संस्कृति विद्यालय दिल्ली में अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय एवं रामानुजन गणित सोसाइटी द्वारा आयोजित कार्यशाला में प्रस्तुत।

——, (2014, मई), क्वाड्रैटिक, क्वार्टिक एंड क्यूबिक इक्वेशंस : ए हिस्ट्री एंड मोर। व्याख्यान दिल्ली स्थित संस्कृति विद्यालय में अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय एवं

रामानुजन गणित सोसाइटी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित कार्यशाला में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों को संबोधित।

——, (2014, अगस्त), लॉजिक एंड रीजनिंग। पत्र शिव नाडर विश्वविद्यालय द्वारा क्रिटिकल थिंकिंग इन अंडरग्रेजुएट एजुकेशन पर आयोजित ई—क्वाल कार्यशाला में प्रस्तुत।

——, (2015, जनवरी), दि कोनिजेसबर्ग ब्रिजेज प्रॉब्लम एंड ग्राफ थिअरी। व्याख्यान दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफेंस कॉलेज में प्रोफेसर माथुर स्मारक व्याख्यान माला 2015 के उद्घाटन के अवसर पर प्रस्तुत।

——, (2015, फरवरी), मेरी—सोफी जर्मेन 1776—1831। व्याख्यान विजयवाड़ा के मेरिस स्टेला कॉलेज के गणित विभाग द्वारा आयोजित कान्फेरेंस ऑन वीमेन इन मैथेमैटिक्स विद स्पेशल रिफरेंस टु लीलावती (लीलावती के विशष संदर्भ के साथ गणित में महिला सम्मेलन) में प्रस्तुत।

——, (2015, फरवरी), मैथेमैटिक्स एंड क्रिप्टोग्राफी : दि एनिग्मा ऑफ एलन मैथिसन ट्यूरिंग। व्याख्यान दिल्ली विश्वविद्यालय के लेडी श्री राम कॉलेज में प्रस्तुत।

——, (2015, मार्च), मेरी—सोफी जर्मेन : दि रिवॉल्यूशनरी मैथेमैटिशियन। व्याख्यान दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग (सीआइई) द्वारा आयोजित परिसंवाद—सह—कार्यशाला ''इनोवेटिव प्रैक्टिसेज टु एनलिवेन मैथेमैटिक्स क्लासरूम'' में प्रस्तुत।

कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

सामुदायिक शिक्षा केंद्र (सेंटर फॉर कम्यूनिटी नॉलेज) के सहयोग से क्रॉस कल्चरल नॉलेज एक्सचेंज इन एंटिक्विटी : ग्रीस, ईरान, इंडिया एंड चाइना पर एक अंतरराष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया गया (7—9 जनवरी 2015)।

होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केंद्र (होमी भाभा सेंटर फॉर साइंस एजुकेशन), टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च के बोस, अरिंदम ने झुग्गी—झोपड़ी के बच्चों के साथ उनके गणित के नवोन्मेषी उपयोग पर अपने कार्य पर आधारित व्याख्यान दिया और एसएलएस के गणित प्राध्यापक वर्ग के साथ कार्य किया (9—10 मार्च 2015)।

वेंकटरमण, गीता वीमेन इन साइंस पैनेल ऑफ दि इंडियन एकेडमी ऑफ साइंसेज, बेंगलुरु के तत्वावधान में दिल्ली विश्वविद्यालय के दीन दयाल उपाध्याय कॉलेज द्वारा वीमेन इन साइंस (विज्ञान में महिलाएँ) पर आयोजित ''एनकरेजिंग वीमेन इन साइंस'' शीर्षक एक परिसंवाद में परिचर्चा की सूचीकार (पैनेलिस्ट) रहीं (अक्टूबर 2014)।

सोशियॉलॉजी सेमिनार सीरिज (समाजशास्त्र परिसंवाद माला) में डॉ. इरफान अहमद, प्रॉफेसर शशांक परीरा और डॉ. पद्मनाभ समरेंद्र के व्याख्यानों का आयोजन किया गया (जनवरी से मार्च)।

एमफिल एवं पीएच.डी. गणित में विश्वविद्यालय कार्यक्रमों के प्रस्ताव पर परिचर्चा हेतु ललित कला अध्ययन विद्यालय के गणित विभाग ने एक एक–दिवसीय मंत्रणात्मक कार्यशाला का आयोजन किया (10 जनवरी 2015)।

गणित शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग के संभावित क्षेत्रों पर परिचर्चाओं का आयोजन किया गया। कार्य गणित शिक्षा से जुड़े दो संभावित वैकल्पिक पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यक्रम निर्माण पर शुरू हुआ, जिसे एयूडी में स्नातक छात्रों के लिए निर्धारित किया जा सकता है। इसका आयोजन एयूडी की गणित सोसाइटी ने किया।

पाठ्येतर गतिविधियाँ

शर्मा, संजय ने एमए इतिहास के छात्रों के लिए नवंबर 2014 में एमए पाठ्यक्रम 'दि स्टेट इन इंडियन हिस्ट्री' के एक के अंग रूप में मेरठ स्थित बेगम समरू की भू–संपत्ति (महल) के शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया। सामुदायिक शिक्षा (सीसीके) के निदेशक के रूप में उन्होंने मुंबई में ओरल हिस्ट्री एसोसिएशन ऑफ इंडिया (भारत मौखिक इतिहास संघ) द्वारा आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने हेतु छह शोधकर्ताओं के एक दल का गठन भी किया (19–20 जनवरी 2015)।

स्नातक अध्ययनशाला (एसयूएस)

एयूडी के एसयूएस में सात प्रतिष्ठा कार्यक्रमों का प्रावधान है – अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, इतिहास, गणित, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र और समाज विज्ञान एवं मानविकी (एसएसएच)। तीन वर्षीय प्रतिष्ठा कार्यक्रमों में विभिन्न पाठ्यक्रमों के जरिए छात्रों को आधारिक कौशल, विषय जन्य एवं अंतर्विषयक शिक्षा देने का प्रयास किया जाता है। एयूडी के स्नातक कार्यक्रम में छात्रों को ललित कला की एक विशिष्ट शिक्षा दी जाती है, जो युवाओं को शिक्षा की विभिन्न पद्धतियों से अवगत कराती है।

शैक्षिक वर्ष 2014–2015 में, कार्यक्रम समितियों ने कार्यक्रमों में सुधार के विभिन्न कार्य किए। एसयूएस के संकायाध्यक्ष की अध्यक्षता में कार्यक्रम समन्वयकों और संयुक्त समन्वयकों ने एसयूएस की शिक्षा समन्वयन समिति (एसीसी) के साथ कार्य किया। शैक्षिक वर्ष 2014–2015 के दौरान, एसएलएस/एसयूएस के सहायक प्रोफेसर डॉ. सत्यकेतु सांकृत, जो एसयूएस के उप अधिष्ठाता के रूप में कार्यरत थे, के अतिरिक्त एसएयूएस/एसएलएस की सहायक प्रोफेसर धरित्री नर्जरी और एसयूएस/एसएलएस के सहायक प्रोफेसर उर्फत अंजुम मीर को एसयूएस का उप अधिष्ठाता बनाया गया। इससे प्रशासनिक एवं शैक्षिक गतिविधियों को सरल और कारगर बनाने में सहायता मिली है।

शैक्षिक वर्ष 2014–2015 में एसयूएस में 233 छात्रों का नामांकन हुआ। एसयूएस की मौजूदा क्षमता 554 छात्रों की है। वर्ष 2014–2015 बैच के 165 छात्र अपने अंतिम वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं।

विश्वविद्यालय में अभिविन्यास के साथ छात्रों का स्वागत किया गया। यहाँ उन्हें एसयूएस एवं एयूडी की जानकारी दी गई। उन्हें यौन उत्पीड़न और रैगिंग के विरुद्ध विश्वविद्यालय की नीतियों एवं संबद्ध समितियों की जानकारी भी दी गई ताकि वे ऐसी घटनाओं की स्थिति में उनका सहारा ले सकें। मनोवैज्ञानिक निदान–गृह एहसास के सदस्यों ने भी छात्रों को अपना परिचय दिया। अभिमुखीकरण के माध्यम से नए छात्रों को उनसे अपेक्षित दायित्वों और उन्हें प्रदत्त सुविधाओं दोनों की जानकारी दी गई।

शैक्षिक वर्ष 2014–2015 के मानसून एवं शीतकालीन सत्र में, स्नातक छात्र क्रमशः 63 और 68 पाठ्यक्रमों में से अपनी रुचि के अनुरूप चयन कर सकते हैं।

इस विशाल पाठ्यक्रम और इन पाठ्यक्रमों के अध्यापन के लिए समस्त एयूडी के प्राध्यापक वर्ग के सदस्यों को देखते हुए, समन्वय एक विशाल चुनौती है। एसीसी और कार्यक्रम समितियों ने, नियमित बैठकों के जरिए इन चुनौतियों को दूर करने का प्रयास किया। निर्णय–निर्माण को सहभागितामूलक और अद्यतन बनाए रखने के लिए, कार्यक्रम समितियों और एसीसी के बीच संचार वीथियाँ खुली रखी गई हैं। एसीसी की बैठकों का कार्यवृत्त (विवरण) एयूडी के प्राध्यापक वर्ग के साथ विस्तारपूर्वक साझा किया जाता है।

रुक्मिणी सेन की अध्यक्षता में एसयूएस मूल्यांकन एवं उपस्थिति समिति (ईएसी) ने वर्ष 2014–2015 के मानसून सत्र के संतुलित परिणामों की घोषणा की। इसके अतिरिक्त ईएसी ने एसयूएस क शैक्षिक पंचांग का निर्धारण, प्रत्येक सत्र में पूरक पुनरावृत्ति के योग्य छात्रों की सूची की घोषणा, मध्य और अंतिम सत्र परीक्षाओं के लिए परीक्षा की समय–सारणी का निर्धारण और मूल्यांकन एवं उपस्थिति से जुड़े विभिन्न सरोकारों पर परिचर्चा की और तदनुरूप निर्णय–निर्धारण किया।

धरित्री नर्जरी द्वारा बुलाई गई एक लघु समिति में एसयूएस की सात कार्यक्रम स्तरीय छात्र प्राध्यापक वर्ग (संकाय) समितियों (एसएफसी) के छात्र सदस्यों के निर्वाचनों का

निरीक्षण किया गया। एसफसी, विद्यालय स्तरीय एसएफसी की नियमित बैठकों, छात्रों को परामर्श से एसयूएस में छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक कार्यक्रमों की उपलब्धता सुनिश्चित की गई।

प्रस्तुतियाँ

प्रधान, जी (2014, सितंबर), रिमेंबरिंग नाबारू। व्याख्यान एयूडीएफए, एयूडी, दिल्ली में प्रस्तुत।

——, (2014, सितंबर), लोकप्रिय संस्कृति की अवधारणा (कन्सेप्ट ऑफ पॉप्युलर कल्चर)। व्याख्यान जेएमआइ के शैक्षिक कर्मचारी कॉलेज में हिंदी में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम प्रस्तुत।

——, (2014, सितंबर), आलोचना में सहमति–असहमति। व्याख्यान लखनऊ विश्वविद्यालय में मैनेजर पांडे रचित एक पुस्तक पर आयोजित एक सगोष्ठी ''मैनेजर पांडे का आलोचनात्मक संघर्ष'' में प्रस्तुत।

——, (2015, मार्च), औपनिवेशिक ज्ञान मीमांसा और रामविलास शर्मा। व्याख्यान विद्यालय द्वारा आयोजित परिसंवाद में प्रस्तुत।

——, (2015, मार्च), अमरकांत उपन्यास इन्हीं हथियारों से और उपनिवेशवाद–विरोध। पत्र सीआइएल, जेएनयू द्वारा अयोजित परिसंवाद ''समकालीन हिंदी उपन्यास : सह–चिंतन'' में प्रस्तुत।

——, (2015, मार्च), इंटेरोगेटिंग मैन्युस्क्रिप्ट ट्रेडिशंस। सामुदायिक शिक्षा केंद्र (सेंटर फॉर कम्यूनिटी नॉलेज) एवं एसएलएस (अंग्रेजी), एयूडी द्वारा आयोजित एक परिसंवाद में एक सत्र की अध्यक्षता।

कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

गणित और अन्य विधाओं में शिक्षारत छात्रों के लिए जीवनचर्या के अवसरों पर 20 सितंबर, 2014 को एक पैनेल परिचर्चा का आयोजन किया गया। सूचीकारों (पैनेलिस्ट) में मैक्स लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, नई दिल्ली के श्री आशिक जैन, डिजिटल प्रॉडक्ट्स एंड सॉल्यूशंस के वरिष्ठ वाइस–प्रेसिडेंट डॉ. गौरव भटनागर,

एडुकॉम्प सॉल्यूशंस लिमिटेड और हमारी पूर्व छात्रा सुश्री प्रज्ञा कुशवाहा (आओन ह्यूईट कंसल्टिंग इंडिया) और श्री अभिनव भाटिया (बार्कलेज बैंक पीएलसी) शामिल थे।

आत्रेय कॉलेज ऑफ लिबरल आर्ट्स एंड साइंसेज, आयोबा राज्य विश्वविद्यालय, आमीस, आयोबा, के बालासुंदरम, कृष्णा ने सम इंटरेस्टिंग मैथेमैटिकल प्रॉब्लम्स (गणित के कुछ दिलचस्प प्रश्न) पर एक व्याख्यान दिया (जनवरी 2015)।

होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केंद्र के बोस, टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च के अरिंदम ने एक्स्प्लोरिंग आउट–ऑफ–स्कूल मेजर्मेंट नॉलेज : इंप्लिकेशंस फॉर स्कूल मैथेमैटिक्स लर्निंग इन मार्च 2015 पर एक वार्ता प्रस्तुत की। गणित शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग के संभावित क्षेत्रों पर प्राध्यापक वर्ग के साथ परिचर्चाओं का आयोजन किया गया। कार्य गणित शिक्षा से जुड़े दो संभाव्य वैकल्पिक पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यचर्या के निर्धाण पर शुरू किया गया, जिन्हें एयूडी में स्नातक के छात्रों के लिए लागू किया जा सकता है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के मानव–विज्ञान विभाग के जोशी, पीसी ने पीआरए तकनीकियों पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया (21 मार्च 2015)।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) शैक्षिक कर्मचारी कॉलेज, एएमयू अलीगढ़ द्वारा आयेजित विषय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के दौरान स्रोत पुरुष के रूप में प्रधान, गोपालजी ने हिंदी में दो व्याख्यान प्रस्तुत किए।

प्रधान, गोपालजी ने डॉ. केसी बघेल राजकीय पीजी कॉलेज, दुर्ग में आयोजित कार्यशाला ''समकालीन हिंदी कविता में स्त्री : एक विचार–विमर्श'' में विषय विशषज्ञ के रूप में भाग लिया (मार्च 2015)।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में भगत सिंह शहीदी दिवस (मार्टरडम डे) कार्यक्रम में प्रधान गोपालजी ने मुख्य भाषण दिया (मार्च 2015)।

सैम्यूएल, नूपुर ने लखनऊ के सीतापुर स्थित विद्याज्ञान विद्यालय में 30 अगस्त 2014 को आयोजित कार्यशाला राइटिंग इन दि इंग्लिश क्लासरूम का संचालन किया। इस कार्यशाला का प्रायोजन आरईएलओ (रीजनल इंग्लिश लैंग्वेज ऑफिस/क्षेत्रीय अंग्रेजी भाषा कार्यालय), अमेरिकन सेंटर, नई दिल्ली ने किया।

सैम्यूएल, नूपुर ने टॉपिक, ट्रेनिंग एंड नेटवर्किंग पर आरईएलओ, अमेरिकन सेंटर द्वारा प्रायोजित और ईएफएलयू हैदराबाद द्वारा आयोजित एक राष्ट्र स्तरीय ई–टीचर एल्युमनाई वर्कशॉप में भाग लिया (दिसंबर 2014)।

अमेरिका की बाल्टिमोर काउंटी स्थित मेरीलैंड विश्वविद्यालय के ई–टीचिंग स्कॉलरशिप प्रोग्राम (ई–शिक्षा छात्रवृत्ति कार्यक्रम) के तहत एक 10–सप्ताह ऑनलाइन पाठ्यक्रम हेतु नूपुर सैम्यूएल को अमेरिकी दूतावास से एक छात्रवृत्ति दी गई (अगस्त–अक्टूबर 2014)।

शर्मा, विभा (अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़) और नूपुर सैम्यूएल (अंबेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली) ने आरईएलओ (रीजनल इंग्लिश लैंग्वेज ऑफिस/क्षेत्रीय अंग्रेजी भाषा कार्यालय), अमेरिकन सेंटर, नई दिल्ली की सहायता से 22 अगस्त 2014 को इंग्लिश लैंग्वेज टीचिंग फॉर प्री–सर्विस इंग्लिश लैंग्वेज टीचर्स पर एक कार्यशाला का आयोजन किया।

टिलबर्ग, जैकी वैन (ओहियो नॉर्दन विश्वविद्यालय) ने 15 अक्टूबर 2014 को प्रेजेंटेशन स्किल्स पर एक कार्यशाला का संचालन किया। उन्होंने छात्रों के साथ लेखन सम्मेलन का आयोजन भी किया।

सामुदायिक शिक्षा केंद्र (सीसीके / सेंटर फॉर कम्यूनिटी नॉलेज)

1. दिल्ली नागरिक स्मृति कार्यक्रम

दिल्ली के अनुभवों और मौखिक श्रुतियों के संग्रह और प्रचार–प्रसार की इस दीर्घकालिक परियोजना के एक अंग रूप में, निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया :

दिल्ली की यादें एक वार्ता माला, जिसके लिए अग्रलिखित लोग एयूडी परिसर आए – ध्रुवो चौधरी (अप्रैल 2014), अंकित चड्ढा (यमुना के तट पर दास्तानगोई कार्यक्रम, अप्रैल 2014) और यूसुफ सईद (अक्टूबर, 2014)। नई दिल्ली के मंडी हाउस स्थित रवींद्र भवन की दीर्घा में आयोजित शहरी जीवन के दुर्लभ फोटोग्राफों की प्रदर्शनी में छात्रों के साथ लाला नारायण प्रसाद ने एक प्रश्नोत्तरी सत्र का संचालन किया (सितंबर 2014)।

कश्मीरी गेट इतिहास और स्मृति परिसर में सितंबर–अक्टूबर 2014 के दौरान लिखित अभिलेखों और मौखिक श्रुतियों (आख्यायिकाओं) दोनों की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी की एक सूची का प्रकाशन किया जा रहा है।

दार–ए–शिकोह कश्मीरी गेट क्षेत्र में एयूडी के परिसर में स्थित दारा शिकोह पुस्तकालय भवन में 27 मार्च से 6 अप्रैल 2015 तक दिल्ली की अल्प ज्ञात कहानियों के दारा शिकोह उत्सव का आयोजन किया गया। इस माला के पहले अंश में, उत्सव में लोथियन रोड, कश्मीरी गेट और आसपास के प्रतिवेश को केंद्र बिंदु में रखा गया, क्योंकि इस क्षेत्र के महत्व का पुराने शहर की ऐतिहासिक कथाओं में बार–बार उल्लेख हुआ है। इन गतिविधियों का एक और उद्देश्य एयूडी के बीच शहर की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के साथ लोगों का जुड़ाव कायम करना है।

इस कार्यक्रम के तहत आयोजित गतिविधियाँ इस प्रकार थीं :

1. दारा शिकोह भवन और धरोहर के भागों में एक ध्वनि एवं प्रकाश कार्यक्रम की व्यवस्था
2. दारा शिकोह पर दास्तानगोई कार्यक्रम
3. दारा शिकोह भवन, कश्मीरी गेट में स्थल पर विरासत रंगमंचीय कार्यक्रम।
4. दिल्ली की 17वीं और 18वीं शताब्दियों की संगीत कलाएँ : एक श्रव्य सत्र।

दिल्ली मौखिक आख्यान परियोजना दिल्ली मौखिक आख्यान परियोजना नामक आइसीएसएसआर द्वारा वित्त पोषित एक परियोजना, सितंबर 2014 में शुरू की गई और इसमें अब तक शहर के 30 विस्तृत जीवन वृत्तांतों का संग्रह किया जा चुका है। उद्‌देश्य दो वर्षों के दौरान इतिहासों के 100 विस्तृत मौखिक आख्यानों का संग्रह करना है। इन्हें प्रकाशित भी किया जाएगा, और प्रकाशकों से वार्तालाप जारी है।

दिल्ली की आत्मा (स्पिरिट ऑफ देल्ही) ललित कला अकादमी द्वारा वित्त पोषित इस परियोजना शहर में ऐसे कार्यक्रमों का क्रियान्वयन सफलतापूर्वक किया है, जिसमें समुदाय की अधिक से अधिक सहभागिता हो। इस हेतु निम्नलिखित गतिविधियाँ शुरू की जा चुकी हैं अथवा प्रक्रियाधीन हैं :

1) दिल्ली फोटो स्मारक (देल्ही फोटो मेमॉरी) : सितंबर और अक्टूबर 2014 में रवींद्र भवन, मंडी हाउस में और तदनंतर जनवरी व फरवरी 2015 में एयूडी में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

2) दिल्ली में बचपन पर दिल्ली की कहानी, बच्चों की जुबानी शीर्षक से चित्र कथाओं/ग्राफिक उपन्यासों के रूप में आख्यायिकाओं एवं कहानियों के एक संग्रह की रचना की जा रही है। यह कार्य बाह्य सलाहकारों की सहायता से एससीसीईई एवं एसडिज के छात्रों तथा अध्यापकों के साथ अभी जारी है।

3) हम सब निजामुद्‌दीन : स्थानीय इतिहास के प्रलेखन, प्रदर्शनियों और निजामुद्‌दीन में कार्यक्रमों के साथ इस वर्ष मुहल्ला संग्रहालय कार्यक्रम (नेबरहुड म्यूजियम्स प्रोग्राम) जारी रहा। समुदाय आधारित शोध, मौखिक आख्यायिका संग्रह और दृश्य इतिहास प्रलेखन का कार्य अक्टूबर 2014 में शुरू हुआ। इससे संबद्ध एक मुहल्ला प्रदर्शनी 18 अप्रैल 2015 शुरू की जानी है।

2. पूर्वोत्तर क्षेत्र

डॉक्यूमेंटेशन ऑफ कोन्याक कम्यूनिटी कल्चरल रिसोर्सेज (कोन्याक समुदाय सांस्कृतिक संसाधन प्रलेखन) एक धीमी शुरुआत के बाद, नगालैंड मोन स्थित कोन्याक धरोहर केंद्र (कोन्याक हेरिटेज सेंटर) में इस मूर्त और अमूर्त संग्रह को एकत्र करने में भारतीय मानव–विज्ञान सर्वेक्षण सहायता कर रहा है। स्थानीय व विस्तृत संपर्क कार्यक्रमों के आँकड़ा विश्लेषण और रूपरेखा निर्माण में सहायता के अतिरिक्त, सीसीके एवं पूर्वोत्तर मंच (नॉर्थ ईस्ट फोरम) सलाहकार की भूमिका निभाएँगे और संग्रह एवं प्रलेखन के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन करेंगे। इस संदर्भ में, गुवाहाटी में फरवरी 2015 में प्रस्तुतकर्ता/सलाहकार के रूप में सीसीके और पूर्वोत्तर मंच के प्राध्यापक वर्ग के साथ एक परामर्श कार्यशाला का आयोजन किया गया।

पहली पूर्वोत्तर मंच शोध परियोजना श्रृंखला, ''मटिरियल कल्चर, क्रिएशन एंड यूज : पर्स्पेक्टिव फ्रॉम इनसाइड दि कम्यूनिटी,'' के फलस्वरूप एक शोध – ऑब्जेक्ट्स, आइडेंटिटीज, मीनिंग्स – के प्रकाशन पर सहमति बनी जो अभी निर्माण एवं मुद्रण के चरण में है। पूर्वोत्तर मंच विस्तृत सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप भौतिक संस्कृति में आए बदलावों पर अंतरंगी विचारों पर एक अनुवर्ती शोध श्रृंखला की योजना तैयार कर रहा है।

3. डिजिटल अभिलेखीकरण एवं संग्रहण कार्यक्रम

विश्वविद्यालय में निर्माणाधीन विभिन्न डिजिटल अभिलेखागारों के संग्रह (संचय) के रूप में अंबेडकर विश्वविद्यालय डिजिटल अभिलेखागार (एयूडीए) तैयार किया जा रहा है। मौजूदा संग्रह में निम्नलिखित परियोजनाएँ, अभिलेखागार आदि शामिल हैं :

एयूडी सांस्थानिक स्मृति परियोजना एयूडी द्वारा वित्त पोषित यह परियोजना (क) कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के निरंतर प्रलेखन के लिए विश्वविद्यालय के भीतर क्षमता के विकास और (ख) संग्रहीत आँकड़ों के इंटरनेट पर एक अभिलेखागार (कार्यक्रमों और साक्षात्कारों की लिखित सामग्री और एवी अभिलेखन के जरिए), ज्यादातर खुली और कुछ सीमित सुविधा समेत, के सृजन का कार्य कर रही है।

विश्वविद्यालय के कार्यक्रम इंटरनेट के एक यूट्यूब चैनेल में उपलब्ध हैं जिन्हें देखा सकता है। लिखित सामग्री और साक्षात्कारों के विवरण आगे तकनीकी सलाहकारों और सूचना तकनीकी सेवाओं की सलाह से तैयार किए जा रहे एयूडी डिजिटल आर्काइव में

उपलब्ध कराए जाएँगे। संप्रति ऑफलाइन रहते हुए, अभिलेखागार विश्वविद्यालय के घटकों के लिए अपनी उपयोगिता सिद्ध कर रहा है।

लोतिका वरदराजन एथनॉलॉजिकल अभिलेखागार   इस अभिलेखागार की सामग्री में भारत भर के विभिन्न समुदायों की 1960 से 2010 तक की बुनाई एवं समुद्री यात्रा की परंपराओं का विवरण है। लोतिका वनर्जी द्वारा अनुदानित, इस अभिलेखागार को वर्ष 2013–14 में संस्कृति मंत्रालय से एक अनुदान प्राप्त हुआ। कार्य की संभावना को देखते हुए, वर्ष 2014–15 में इसे मुंबई स्थित वसंत जे शेठ संस्थान से एक और अनुदान प्राप्त हुआ। अभिलेखागार के लिए सामग्री का डिजिटलाइजेशन कार्य लगभग पूरा हो चुका है, और इंटरनेट अभिलेखागार के संग्रह एवं निर्माण की प्रक्रिया शुरू होनी है।

समाज विज्ञान शोध अभिलेखागार   समाज विज्ञान शोध अभिलेखागार के निर्माण हेतु एयूडी डिजिटल अभिलेखागार की सहायता से सीसीके ललित अध्ययनशाला (एसएलएस) के साथ कार्य कर रहा है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, प्रख्यात साहित्यकारों सज्जाद जहीर एवं अमृतलाल नागर के पहले दो संग्रह विचाराधीन हैं। कार्य का वित्त पोषण स्थिति दर स्थिति आधार पर किया जा रहा है, जिसमें एयूडी अमृतलाल नागर के डिजिटीकरण को वित्तीय सहायता दे रहा है और सज्जाद जहीर और भविष्य के अन्य एसएसआरए संग्रहों के डिजिटीकरण के वित्त पोषण हेतु टेक्सास विश्वविद्यालय (ऑस्टिन) एयूडी के साथ एक एमओयू तैयार करना चाहता है।

दैनिक जीवन का दिल्ली अभिलेखागार (दि देल्ही आर्काइव ऑफ एवरीडे लाइफ) इसमें दिल्ली वासियों से प्राप्त फोटो और लोक चित्र शामिल हैं, शहर के दैनिक जीवन का चित्रण करते हैं। इस सामग्री का अधिकांश दिल्ली आधारित विभिन्न कार्यक्रमों से और लाला नारायण प्रसाद जैसे फोटोग्राफरों से एकत्र की गई है। संप्रति, अभिलेखागार में दिल्ली शहर के अनुमानतः 1930 से 1980 तक के लगभग 500 डिजिटीकृत छाया चित्र हैं। एक तरफ जहाँ विभिन्न तरीकों से इन छायाचित्रों का प्रदर्शन किया जाता है, जैसे आइटीओ मेट्रो स्टेशन से शुरू, डीएमआरसी के मेट्रो स्टेशनों पर चित्र दीर्घाओं में प्रदर्शन, वहीं दूसरी ओर एयूडी डिजिटल अभिलेखागार के एक अंग के रूप में इंटरनेट पर इन छायाचित्रों के एक अभिलेखागार का निर्माण किया जाएगा।

यह जानने के लिए कि ज्ञान सृजन में योगदान हेतु आने वाले सार्वजनिक अभिलेखागारों का उपयोग कैसे किया जा सकता है, सीसीके विभिन्न विद्यालयों के शिक्षा जगत और ऑक्सफोर्ड संग्रहालय समूह, जिसमें ऑक्सफोर्ड नगर संग्रहालय और

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पिट रिवर्स संग्रहालय शामिल हैं, तथा ऑस्टिन स्थित टेक्सास विश्वविद्यालय की पुस्तकालय प्रणाली जैसी अन्य संस्थाओं में अभिलेखों के नए उपयोगों का पता लगा रहा है। आशा है कि एयूडी ऑनलाइन डिजिटल अभिलेखागाार वर्ष 2015 की गरमी में सार्वजनिक पटल पर आ जाएगा।

प्रस्तुतियाँ

मैथ्यूज, ए, यामीन, एफ, और एस सरकार (2015, जनवरी)। नैरेटिव्ज – हिस्ट्री, मेमॉरी एंड पेडैगोगी इन ए यूनिवर्सिटी सेटिंग। पत्र भारतीय मौखिक इतिहास संघ (ओरल हिस्ट्री एसोसिएशन ऑफ इंडिया/ओएचएआइ), मुंबई के दूसरे वार्षिक सम्मेलन में प्रस्तुत।

सरकार, एस (2014, जुलाई), दि सिटी ऐज ए क्रिएटिव रिसोर्स। पत्र सिंगापुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में धरोहर एवं रूपांतरण पर एएएस–इन–एशिया सम्मेलन में क्रिएटिव कम्यूनिटीज वर्सस रीजेनरेशन पर अर्बन नॉलेज नेटवर्क एशिया पैनेल में प्रस्तुत।

सरकार, एस (2014, नवंबर), क्रॉसरोड्स फॉर एग्रिकल्चर ट्रेडिशंस इन इंडिया। पत्र फ्रांस के मर्सेलेस स्थित म्यूजियम ऑफ यूरोपियन एंड मेडिटरेनियन सिविलाइजेशंस में अंतरराष्ट्रीय कृषि संग्रहालय संघ (इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ एग्रिकल्चर म्यूजियम्स) की 17वीं कांग्रेस (सीआइएमए 17) में प्रस्तुत।

सरकार, एस (2014, नवंबर), डीकोडिंग मटिरियल कल्चर – एराइविंग ऐट दि प्रोवनैंस ऑफ दि टेपिस मोघोल। पत्र सफरनामा प्रदर्शनी में कलमकारी वस्त्र पर प्रस्तुत।

कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

क्षेत्र कार्य प्रणालियों और श्रव्य दृश्य प्रलेखन समेत पूर्व–क्षेत्र कार्य पर विभिन्न स्कूलों के छात्रों के लिए सीसीके ने विश्वविद्यालय कार्यशाला का संचालन किया।

बहुत से छात्रों को डिजिटीकरण एवं प्रलेखन व मेटाडेटा के टिप्पण लेखन कार्यों में प्रशिक्षण दिया गया है, इंस्टिट्यूशनल मेमॉरी एंड दि एथ्नोग्राफिक आर्काइव (सांस्थानिक स्मृति एवं एथ्नोग्राफिक अभिलेखागार) के निर्माण में सहायता करते हैं।

जैन, समीरा ने दिल्ली में संभावनाओं पर छात्र फिल्मों का प्रदर्शन किया (नवंबर 2014)

लांगे, डायना ने तिब्बती सांस्कृतिक धरोहर पर एक प्रस्तुति दी (अगस्त 2014)।

मणियन, रंजनी सांस्कृतिक उद्यम पर एक प्रस्तुति दी (मई 2014)।

नेद बर्त्ज, लोतिका वरदराजन और विजया वर्मा ने एयूडी में कार्टोग्राफिक प्रदर्शनी में वार्ता प्रस्तुत की (अप्रैल 2014)।

सरकार, सुरजीत और अनुष्का मैथ्यूज ने क्षेत्र में दृश्य श्रव्य विधियों पर क्षेत्र में डिजिटल कथा वाचन (एसयूएस का छठा सेमेस्टर वैकल्पिक) शीर्षक एक विशेष रुचि पाठ्यक्रम का आयोजन किया। इसका विकास दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदू कॉलेज की प्रख्यात मौखिक इतिहासविद, प्रोफेसर सुरूपा मुखर्जी के सहयोग से किया गया।

सदरलैंड, पैट्रिक ने वर्श 1993 से स्पीति की फोटोग्राफिक आख्यायिकाएँ प्रस्तुत कीं (दिसंबर 2014)।

राष्ट्रीय संग्रहालय, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (आइएनएसए), आइसीएचआर एवं आइसीसीआर के सहयोग से सीसीके द्वारा क्रॉस कल्चर नॉलेज एक्सचेंज इन एंटिक्विटी पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन। सिल्क रोड के समानांतर कश्मीर से खोतान तक के चित्रों की एक समानांतर फोटो प्रदर्शनी आयोजन (5 से 7 जनवरी 2015)।

सहभागी देशों में द्विवार्षिक सम्मेलन के साथ, एंटिक्विटी में ज्ञान के आदान–प्रदान के अध्ययन हेतु एक अंतरराष्ट्रीय संस्था की योजना तैयार की जा रही है।

मैथ्यूज, अनुष्का और सुरजीत सरकार ने मदुरई में आइएनटीएसीएच आइसीएच प्रलेखन कार्यशाला में अमूर्त सांस्कृतिक सामग्री के संग्रह व प्रलेखन की प्रक्रिया पर एक एक–दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया (फरवरी 2015)।

एशिया में वर्ष 2016 में ''बिल्डिंग सिटी म्यूजियम्स (नगर संग्रहालय निर्माण)'' पर एक अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला/गोलमेज के आयोजन की संभावनापर आईआएएस, लीदेन के साथ विमर्श जारी है।

आईसीएआर के साथ एक शोध परियोजना पर विमर्श जारी हैं, जिसमें आरंभ में आइसीएआर और अन्य संस्थाओं के साहित्यिक सर्वेक्षण के जरिए खेती में पारंपरिक ज्ञान के उपयोग की मौजूदा स्थिति की समीक्षा की जाएगी। आइएनटीएसीएच ने खेती में पारंपरिक प्रणालियों पर एक प्रदर्शनी पर चर्चा शुरू की है – खाद्य सुरक्षा : मौजूदा स्थिति और संभावनाएँ, वर्ष 2015–16 के लिए प्रस्तावित।

विकास प्रणाली केंद्र (सेंटर फॉर डिवेलपमेंट प्रैक्टिस (सीडीपी)

सीडीपी की कल्पना शोध, प्रलेखन, क्षमता–निर्माण और इस देश में विकास क्षेत्र के अभिकरणों के हितार्थ चिंतन–मनन के एक स्थल के रूप में की गई है। केंद्र विकास प्रणाली में एक एमफिल कार्यक्रम का संचालन भी करता है (एयूडी एवं विकास क्षेत्र का एक जानामाना अभिकरण पीआरएडीएएन (प्रदान) के सहयोग से), अपरीक्षित ''अंडरडिवेलपमेंट ऑफ दि रूरल'' और समान रूप से अपरीक्षित ''रॉयल रोड्स टु डिवेलपमेंट'' की जाँच कर और ग्रामीण संदर्भों में दस माह की निमग्नता–आधारित शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण समुदायों के साथ संबंध कायम कर विकास क्षेत्र के अध्यवसायियों का एक समूह तैयार करना चाहता है, जिनमें ग्रामीण भारत में रूपांतरकारी सामाजिक कार्य आरंभ करने की क्षमता हो।

एमफिल विकास प्रणाली

वर्ष 2014–15 में 21 स्थानों पर नामांकन (9 छात्र एवं 12 छात्राएँ) हुए, किंतु आरक्षित कोटे के 4 स्थान रिक्त रह गए। केंद्र ने एमफिल विकास प्रणाली कार्यक्रम की एक मध्यावधि समीक्षा भी शुरू की है। समीक्षा की प्रक्रिया कार्यक्रम के स्थायित्व के प्रति एक यथार्थवादी सोच उत्पन्न करने और यह देखने के लिए शुरू की गई है कि कार्यक्रम अपने उद्देश्यों की पूर्ति किस हद तक कर रहा है।

नियोजन

वर्ष 2014–15 में, एमफिल विकास प्रणाली के छात्रों का पहला दल (अर्थात् 2012–13 का दल) पास हुआ। विकास क्षेत्रों में इन छात्रों का नियोजन विकास प्रणाली केंद्र की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही और विकास क्षेत्र के संगठनों/संस्थानों से इसका संपर्क हुआ। केंद्र ने यह भी ध्यान में रखा कि उन्हें समुदाय के साथ जमीन स्तर पर काम करने का अवसर मिले। विभिन्न संस्थाओं से एमफिल के छात्रों के लिए कुल मिलाकर 43 प्रस्ताव आए और 21 में से 15 छात्र में शामिल हुए।

सहयोग

विश्व स्तर पर एक पहचान के साथ विकास प्रणाली विधा की समृद्धि और निर्माण हेतु केंद्र विभिन्न संस्थों से संपर्क और सहयोग कायम कर रहा है और इस दिशा में चार्ल्स स्टुअर्ट विश्वविद्यालय, वग्गा, वेस्टर्न सिडनी विश्वविद्यालय, पीआरएडीएएन (प्रदान), आईआईटी–दिल्ली के साथ उसने ''एडवांसिंग म्यूचुअल अंडरस्टैंडिंग एंड कोऑपरेशन फॉर रूरल डिवेलपमेंट : वर्चुअल सेंटर दैट ब्रिंग्स टुगेदर फार्मर्स, डिवेलपमेंट प्रैक्टिशनर्स, फिजिकल साइंटिस्ट्स एंड सोशल साइंटिस्ट्स फ्रॉम ऑस्ट्रेलिया एंड इंडिया'' परियोजना शुरू की है।

शोध परियोजनाएँ

''कास्ट एंड क्लास : नीड फॉर ए थियॉरेटिकल एंड इंपीरिकल री–इग्जैमिनेशन।'' आइसीएसएसआर द्वारा प्रायोजित (25 लाख रुपये)। यह शोध देश में अपनी तरह का प्रायः शोध होगा, जिसमें जाति के मौजूदा वर्गीकरण और जाति क्रमों के प्रश्न के साथ अधिशेष श्रम केंद्रित शिक्षा और वर्ग के वर्गीकरण पर विचार किया जाएगा (इसे जाति का पुरातत्व कहा जा सकता है')। इसमें आर्थिक सिद्धांतों, सांस्कृतिक शोधों, राजनीतिक दर्शन और मनोविश्लेषण का समावेश किया जाएगा।

कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

विकास क्षेत्र के अध्यवसायियों के लिए समर स्कूल (ग्रीष्म कालीन स्कूल) (चार 7–दिवसीय पाठ्यक्रम) का आयोजन–संचालन किया गया जिसमें विकास क्षेत्र के 19 अध्यवसायियों ने भाग लिया।

चौधरी, सौम्यव्रत ने बियांड प्रोटेक्टिव डिस्कलरेशन : अंबेडकर ऑन कन्वर्जन पर एक व्याख्यान दिया (नवंबर 2014)।

चौधरी, सौम्यव्रत अंबेडकर्स वर्ड्स : एलिमेंट्स ऑफ ए सेंटेंस–टु–कम पर एक व्याख्यान दिया (नवंबर 2014)।

मंदर, हर्ष ने रोहिणी घड़ियोक स्मारक भाषण (रोहिणी घडियोक मेमोरियल ओरेशन) में इंगेजिंग विद अनइक्वल इंडिया पर एक व्याख्यान दिया (अप्रैल 2014)।

मणिक्कम, नादराजा ने मेडिटेशंस ऑन कल्चर, कॉस्मोलॉजी एंड सस्टेनेबिलिटी इन एशिया पर एक व्याख्यान दिया (अक्टूर 2014)।

विश्व–भारती, शांतिनिकेतन में अर्थशास्त्र के प्रॉफेसर प्रणव कांति बसु ने ग्लोबलाइजेशन : एन एंटी टेक्स्ट – ए लोकल व्यू पर एक व्याख्यान दिया।

आरम्भिक बाल शिक्षा एवं विकास केंद्र (सीईसीईडी)

सीईसीईडी की कल्पना एक ऐसी संस्था के रूप में की गई है जिसमें सुव्यवस्थित एवं सर्वांगीण वैचारिक ढाँचे के भीतर शोध, राजनीति और आरमिक बाल शिक्षा एवं विकास केन्द्र (ईसीईडी) का समावेश हो। सीईसीईडी की सोच आरंभिक शिक्षा पर ध्यान के साथ विकास एवं संदर्भ की दृष्टि से समुचित एवं समावेशी ईसीईडी की सर्वांगी शिक्षा को बढ़ावा देना हैं। केंद्र का लक्ष्य हर बच्चे के जीवन के लिए ईसीईडी के माध्यम से एक ठोस आधार के अधिकार का समर्थन एवं प्रोत्साहन करते हुए सामाजिक न्याय और समानता के राष्ट्रीय लक्ष्यों में सहयोग करना है। केंद्र शोध, क्षमता निर्माण और समर्थन से ईसीईडी में साक्ष्य आधारित गुणवत्ता के प्रोत्साहन को अपना लक्ष्य मानता है।

अपनी शोध व मूल्यांकन; गुणवत्ता के प्रोत्साहन; और क्षमता निर्माण; तथा ईसीईडी के क्षेत्र में समर्थन एवं नेटवर्किंग के लिए सीईसीईडी ने वर्ष 2009 से, विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अभिकरणों से सक्रियतापूर्वक धन जुटाया है। इसकी शुरू और पूरी की जा चुकी कतिपय शोध परियोजनाओं में संप्रति जारी देशांतर शोध इसका प्रधान शोध है, जिसमें स्कूल में प्रवेश योग्य बच्चों पर शिशु शिक्षा की गुणवत्ता के प्रभाव की खोज की गई है। केंद्र में, शैक्षिक अध्ययनशाला के सहयोग से क्षमता निर्माण में राज्यों को तकनीकी सहायता और आरम्भिक शिशु देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई) में एमए के अध्यापन को शामिल किया गया है। केंद्र का वेब पोर्टल, ईसीईडी पॉलिसी ब्रीफ सीरिज, परिसंवाद और सम्मेलन साक्ष्य–आधारित समर्थन के लिए माध्यम के रूप में कार्य करते हैं।

शोध एवं मूल्यांकन

भारतीय प्रारम्भिक बाल शिक्षा प्रभाव (आईसीईआई) अध्ययन

यह 2010 में तीन राज्यों – राजस्थान, तेलंगना (पूर्व में आंध्र प्रदेश) और असम में शुरू किया गया एक देशांतर शोध है, जिसमें स्कूल में प्रवेश के स्तरों पर और तदनंतर बच्चों की स्कूल में भागीदारी और प्रदर्शन पर प्रारम्भिक बाल शिक्षा के तात्कालिक और मध्य–आवधिक प्रभाव पर शोध हो रहा है। पिछले वर्ष अध्ययन में स्कूल पूर्व चरण को पूरा कर लिया गया और अब 2014 में शोध के दूसरे चरण में प्रवेश कर चुका है। अध्ययन में 2323 युवा बच्चों के एक समूह का पता लगाया जा रहा है, जो शोध के आरंभ में 3½ से 4½ वर्ष के बीच की आयु के थे और संप्रति 6½ से 7½ वर्षों के बीच हैं। अध्ययन का संचालन सीईसीईडी, अंबेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली और एएसईआर केंद्र भारत के सहयोग से किया जा रहा है, जिसमें आंध्र महिला सभा और एनआईपीसीसीडी, गुवाहाटी जैसे राज्य भागीदार हैं। यह एक महत्वपूर्ण अध्ययन है और इतने बड़े पैमाने पर दक्षिण एशियाई क्षेत्र में अपनी तरह का पहला अध्ययन है। इसलिए भारत में ईसीसीई में नीति के क्रियान्वय एवं पाठ्यक्रम के विकास के लिए इसके परिणामों के महत्वपूर्ण निहितार्थ होंगे। मध्य–आवधिक प्रभाव का मूल्यांकन करने हेतु प्राथमिक स्तरों में बच्चों के समूह का पता लगाने के बाद अध्ययन वर्ष 2016 तक जारी रहेगा। इसकी वित्तीय सहायता यूएनआईसीईएफ, चिल्ड्रेंस इनवेस्टमेंट फंड फाउंडेशन, विश्व बैंक, बर्नाड वान लीअर फाउंडेशन, सीएआरई (केयर) भारत, एसईआरपी, मानव संसाधन विकास और यूएनईएससीओ (यूनेस्को) द्वारा की गई है।

निर्धनों के लिए प्रारम्भिक बाल विकास पर एनआईएच अध्ययनः आनुपातिक प्रभाव

ओडिशा राज्य में जारी इस शोध के लिए सीईसीईडी ने येल विश्वविद्यालय को तकनीकी सहायता प्रदान की है। शोध की रूपरेखा यह देखने के लिए तैयार की गई है कि विभिन्न रूपात्मकताओं (देखभाल करने वालों को व्यक्तिगत सहायता और देखभाल करने वालों को सामूहिक सहायता) के जरिए आरंभ में दिया जाने वाली प्रेरणा किस प्रकार शिशु विकास के परिणामों पर प्रभाव डाल सकता है। यह एक बृहत स्तर का प्रयास है, जिसमें प्रयोग का यादृच्छिक निरीक्षण करते हुए सीईसीईडी ने

डॉ. सैली मैकग्रेगर ग्रैंथम द्वारा तैयार जमैकन पाठ्यक्रम से व्यक्तिगत शिशु प्रेरणा पैकेज को अपने अनुकूल बनाया है। इसमें ध्यान मुख्य रूप से मातापिता–शिशु अनुक्रिया की गुणवत्ता में सुधार लाने पर रखा जाता है। इस शोध की कल्पना दो चरणों में की गई है। कटक में 200 बच्चों के एक पाइलट शोध का संचालन किया गया। इस वर्ष से मुख्य शोध अध्ययन के अंतर्गत ओडिशा के तीन जिलों (बालासोर, बोलांगीर और सालेपुर) में 2000 बच्चों के लिए एक दो–वर्षीय प्रयास शुरू किया जाएगा।

कथा द्वारा दिल्ली के एमसीडी स्कूलों में अभियान, 'मुझे पढ़ना पसंद है', का प्रभाव मूल्यांकन

सीईसीईडी दिल्ली नगरपालिका (एमसीडी) के प्राथमिक स्कूलों में कथा द्वारा संचालित 'आई लव रीडिंग कैंपेन' (आईएलआर/मुझे पढ़ना पसंद है) के मूल्यांकन हेतु आमंत्रित किया गया। कथा ने अपना आईएलआर अभियान एमसीडी स्कूलों को एक ऐसे स्थल में रूपांतरित करने के लिए वर्ष 2008 में शुरू किया जहाँ बच्चे हँसते–खेलते एक दूसरे के साथ मिलकर पढ़ाई करें। इस अभियान का उद्देश्य कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों में पढ़ाई और संख्या–ज्ञान में सुधार लाना भी है। मूल्यांकन का कार्य दो भागों में किया गया। पहले भाग (आधार–रेखा) का, उद्देश्य बच्चों के हिंदी और गणित के स्तरों की उपलब्धियों का मूल्यांकन और उन पर कक्षा की गुणवत्ता के प्रभाव का विश्लेषण करना था। 40 स्कूलों की कक्षा 2 और 4 के कुल 800 बच्चों का मूल्यांकन किया गया। दूसरे भाग में, उद्देश्य छात्रों की पढ़ाई के प्रति रुचि, पुस्तकों की सुविधा, कथा द्वारा प्रभावित कक्षाओं और नियमित कक्षा में उनकी गतिविधियों और अंततः कथा एवं एमसीडी शिक्षकों की तैयारी और अवबोधन का मूल्यांकन करना था। बच्चों के लिए इस अंतिम कार्य का संचालन वर्ष 2015 में किया जाएगा।

उद्गामी एवं आरंभिक साक्षरता पर आधार पत्र (स्टार्ट अर्ली : रीड इन टाइम प्रोजेक्ट)

भारत में, भाषा एवं साक्षरता विकास एक मुख्य सरोकार के रूप में उभर कर सामने आया है, यह देखते हुए कि बहुत से बच्चे प्राथमिक स्तर पूरा कर लेने पर भी पढ़ाई नहीं कर पाते। बीते दशक के दौरान, भारत ने स्कूलों में बच्चों के नामांकन में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। किंतु, बच्चों के प्रतिधारण पर उनकी आवश्यकताओं और क्षमता

को समझने तथा उनका पोषण करने में शिक्षा प्रणाली की अक्षमता का प्रभाव पड़ता है। इस समस्या के समाधान हेतु, सीएआरई (केयर) इंडिया के सहयोग से इसकी ''स्टार्ट अर्ली : रीड इन टाइम (यथासमय शुरू : समय पर पढ़ाई)'' परियोजना के एक अंग के रूप में सीईसीईडी ने एक टेक्निकल कोर ग्रुप (टीसीजी) का गठन किया है, जिसमें भाषा और साक्षरता में अभिरुचि रखने वाले विशेषज्ञों को शामिल किया गया है। इसका उद्देश्य आरंभिक स्तर की रणनीति एवं पद्धतियों का निर्माण करना है, जिनका सार्वजनिक स्कूली प्रणाली के एक अंग के रूप में प्रवर्तन किया जा सकता है। इस ग्रुप का एक हिस्सा आरंभिक भाषा एवं साक्षरता पर एक आधार पत्र भी तैयार करता है, जिसका उद्देश्य नीति निर्माताओं और शिक्षकों (अध्यवसायियों और अकादमिकों) को 3 से 8 वर्ष तक के बच्चों में भाषा एवं साक्षरता के विकास के क्षेत्र में सुस्पष्ट कार्यवाहियों के एक विन्यास का विकास, बीजीय सिद्धांतों पर साझा समझ या अवबोधन का निर्माण और शिक्षा प्रणालियों तथा पेशा जन्य विकास, समुदाय समावेश, नीति विकास एवं समर्थन का प्रतिपादन करने में सक्षम बनाना है।

जन्म से आठ वर्ष तक के बच्चों के लिए आरंभिक शिक्षा एवं विकास मापदंडों का निर्माण

यूएनआईसीईएफ (यूनिसेफ) एवं सीएआरई (केयर) इंडिया की सहायता से सीईसीईडी ''जन्म से आठ वर्ष तक के बच्चों के लिए डिवेलपिंग वैलिडेटेड अर्ली लर्निंग एंड डिवेलपमेंट स्टैंडर्ड्स (ईएलडीएस) फॉर चिल्ड्रेन फ्रॉम बर्थ टु एट ईयर्स)'' पर एक परियोना का संचालन कर रहा है। यह परियोजना ईसीसीई की राष्ट्रीय नीति (2013) के संदर्भ को देखते हुए और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा को ध्यान में रखते हुए युवा बच्चों के लिए प्रावधानों की गुणवत्ता के उत्थान और मानकीकरण पर बल देती है।

(मस्तिष्कों की रक्षा; मानसिकताओं में बदलाव / सेविंग ब्रेन्स; चेंजिंग माइंडसेट्स) शीर्षक परियोजना का प्रभाव मूल्यांकन

सचल क्रेशों (शिशु सदनों) के लिए सीईसीईडी 'सेविंग ब्रेन्स; चेंजिग माइन्डसेट्स' शीर्षक परियोजना का संचालन कर रहा है। इस अध्ययन में निर्माण स्थलों पर युवा बच्चों एवं उनके परिवारों के लिए सचल क्रेशों द्वारा उनके डे केयर केंद्रों पर दी जा रही सेवाओं के प्रभाव की जाँच करने और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा विकसित शिशु

कार्यक्रमों की गुणवत्ता पर इसके प्रभावों में वृद्धि की प्रक्रिया का प्रलेखन करने का प्रयास किया जा रहा है। परियोजना जनवरी 2015 में शुरू हुई और दिसंबर 2016 में पूरी होगी।

क्षमता निर्माण एवं गुणवत्ता उन्नयन

आरम्भिक शिशु देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई) में एमए

शिशु देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई) कार्यक्रम में एमए भारत में ऐसा पहला स्नातकोत्तर दो–वर्षीय मास्टर कार्यक्रम है जो एसईएस के सहयोग से चल रहा है। इसका निर्धारण दोहरे रूप में किया गया है जिसमें वैसे छात्रों के लिए प्रथम वर्ष के बाद इसे छोड़ देने का विकल्प है जो केवल डिप्लोमा प्राप्त करना चाहते हों। इस कार्यक्रम का प्रावधान सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में और विदेशी कंपनियों में भी ईसीई अध्यवसायियों की माँग को देखते हुए किया गया है। यह कार्यक्रम सर रतन टाटा न्यास द्वारा वित्त पोषित है।

आरम्भिक शिशु देखभाल एवं विकास की राष्ट्रीय नीति के क्रियान्वयन हेतु रणनीति निर्माण की व्यवहार्यता का मूल्यांकन

राजस्थान एवं महाराष्ट्र में राष्ट्रीय शिशु देखभाल शिक्षा नीति के क्रियान्वयन की एक रणनीति के निर्माण हेतु सीईसीईडी एवं यूएनआइसीईएफ ने संयुक्त रूप से एक व्यवहार्यता मूल्यांकन का कार्य आरंभ किया है। यह परियोजना दिसंबर 2014 में शुरू हुई और वर्ष 2016 तक चलेगी।

आरम्भिक शिशु देखभाल एवं शिक्षा हेतु बंगाल को तकनीकी सहायता

ईसीई के मुख्य भागीदारों के क्षमता निर्माण हेतु ईसीई पर महिला एवं बाल विकास तथा समाज कल्याण विभाग को तकनीकी सहायता देने और नीति एवं प्रणाली में शोध अध्ययनों के परिणामों का समावेश करने के लिए सीईसीईडी वर्ष 2010 से पश्चिम बंगाल के यूनीसेफ के साथ कार्य कर रहा है। इस प्रक्रिया में (क) सदस्य के रूप में सीईसीईडी के साथ ईसीई पर एक राज्य स्तरीय कोर समिति का गठन (ख) राष्ट्रीय

पाठ्यचर्चा रूपरेखा के संदर्भ में पाठ्यचर्चा समीक्षा एवं रिक्तता का विश्लेषण और (ग) पाठ्यचर्चा रूपरेखा, आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की कार्य–पुस्तिका की रूपरेखा और एक क्रियान्वयन नीति के निर्माण पर ध्यान शामिल हैं। इस परियोजना के वित्त की व्यवस्था पश्चिम बंगाल के यूनीसेफ की है। पश्चिम बंगाल की परियोजना और तदनंतर अन्य परियोजनाओं के परिणामों को बढ़ावा देने और साझा करने के ध्येय से, सीईसीईडी ने आरंभिक क्षेत्र में प्रशिक्षकों के लिए एक वेब पेज शुरू किया है जो एक ईसीई पोर्टल (*http://ecceportal.in*) है।

समर्थन एवं नेटवर्किंग

विकास की दृष्टि से समुचित शिशु देखभाल एवं आरंभिक शिक्षा में गति लाने के लिए सीईसीईडी अन्य संस्थानों के साथ शोध कार्यक्रमों का संचालन करता रहा है।

व्याख्यानों एवं कार्यक्रमों का आयोजन करने के अतिरिक्त, अपने वेब पोर्टल (*http://ecceportal.in*) की सहायता से सीईसीईडी क्लियरिंग हाउस, केंद्र व विश्व भर के वर्तमान शोध के प्रचार–प्रसार के लिए एक वाहक के रूप में भी कार्य करता है। सीईसीईडी अपनी वेबसाइट (*http://ecceportal.in*) पर अपने शोध एवं समर्थन परिणामों, क्षमता निर्माण कार्यों समय–समय पर समाचारों/कार्यक्रमों से जुड़ी सामग्री को निरंतर अद्यतन भी करता रहा है। अंततः सीईसीईडी ने सोशल मीडिया में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। इसे देखने वालों को सीईसीईडी के नवीनतम प्रकाशनों, त्रैमासिक कार्यक्रमों–घटनाओं और राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों की जानकारी नियमित रूप से मिलती रहती है।

प्रतिष्ठा/उपलब्धियाँ

वनिता कौल, इंस्टिट्यूट ऑफ मेडीसिन, इंस्टिट्यूट ऑफ मेडीसिन, नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ हेल्थ, वाशिंगटन डीसी द्वारा गठित ग्लोबल फोरम फॉर इन्वेस्टिंग इन दि यंग चाइल्ड, एशियन रीजन नेटवर्क फॉर अर्ली चाइल्डहुड (एआरएनईसी) की संचालन समिति की सदस्य और तमिल नाडु की राज्य ईसीसीई परिषद् में महापरिषद् की सदस्य।

दक्षिण दिल्ली नगर निगम (एसडीएमसी) ने अपने नर्सरी शिक्षकों के प्रशिक्षण का संचालन करने के लिए सीईसीईडी को आमंत्रित किया। 23 से 27 मार्च 2015 तक चले प्रशिक्षण कार्यक्रम में 36 शिक्षकों ने भाग लिया।

प्रस्तुतियाँ

भरगढ़, ए (2014 जुलाई), क्वॉलिटी वैरिएशंस इन ईसीई प्रॉविजन्स एंड इट्स इंपैक्ट ऑन स्कूल रेडिनेस लेवेल्स ग्लिम्प्सेज फ्रॉम थ्री स्टेट्स इन इंडिया। वाशिंगटन डीसी स्थित ग्रैंड हयात वाशिंगटन में अर्ली चाइल्डहुड पर आयोजित हेड स्टार्ट के 12वें (एचएसआरसी12) राष्ट्रीय शोध सम्मेलन ''इंटरनेशनल ईफर्ट्स फॉर चाइल्डहुड'' में पोस्टर प्रस्तुत।

——, (2014, अगस्त), डज क्वॉलिटी ऑफ ईसीई मैटर? सीईसीईडी, नई दिल्ली के सहयोग से यूएस नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज (अमेरिकी राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी) के इन्वेस्टिंग इन यंग चिल्ड्रेन ग्लोबली ऐट दि बोर्ड ऑन चिल्ड्रेन, यूथ एंड फैमिलीज ऑफ दि इंस्टिट्यूट ऑफ मेडीसीन (आइओएम) और नेशनल रिसर्च काउंसिल (एनआरसी) के सम्मेलन में पोस्टर प्रस्तुत।

——, (2014, सितंबर), अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन क्वॉलिटी एसेसेमेंट स्केल (ईसीईक्यूएएस) टूल। सह–आयोजक यूएनआइसीईएफ एवं यूएनईएससीओ के साथ आइएसएसए (इंटरनेशनल स्टेप बाई स्टेप एसोसिएशन) में पत्र प्रस्तुत, वित्त पोषण : बर्नार्ड वैन लीअर फाउंडेशन।

शर्मा, एस (2014, सितंबर), रेडीनेस फॉर स्कूल : इंपैक्ट ऑफ ईसीई क्वॉलिटी। इदारा–ए–तलीम–ओ– आगाही (आइटीए) के सहयोग से कराची, पाकिस्तान में सिंध सरकार के ई एंड एलडी और रिफॉर्म सपोर्ट यूनिट (आरएसयू) में पत्र प्रस्तुत।

सिंह, एस (2014, दिसंबर), डिवेलपमेंटली एप्रोप्रिएट प्रैक्टिसेज फॉर अर्ली चाइल्डहुड करिकुलम। डीपीएस द्वारका के शिक्षकों के लिए कार्यशाला (20 दिसंबर 2014)।

सहयोग

चालू शैक्षिक वर्ष में, केंद्र ने निम्नलिखित संस्थाओं के साथ सहयोग किया है।

1. आगा खान फाउंडेशन (एकेएफ), नई दिल्ली
2. केयर इंडिया सॉल्युशंस फॉर सस्टेनेबल डिवेलपमेंट (सीआइएसएसडी), नई दिल्ली

3. चिल्ड्रेंस इन्वेस्टमेंट फंड फाउंडेशन (सीआइएफएफ), लंदन
4. मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एएचआरडी), नई दिल्ली
5. मोबाइल क्रेशेज, नई दिल्ली
6. सर रतन टाटा ट्रस्ट (एसआरटीटी), मुंबई
7. विश्व बैंक, नई दिल्ली
8. संयुक्त राष्ट्र विश्व बाल आपात कोष (यूएनआइसीईएफ/यूनाइटेड नेशंस इंटरनेशनल चिल्ड्रेंस इमर्जेंसी फंड)
9. आंध्र महिला सभा (एएमएस), हैदराबाद
10. एएसईआर केंद्र, नई दिल्ली
11. येल विश्वविद्यालय, न्यू हेवेन, कनेक्टिकट, अमेरिका
12. आइओएम अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, वॉशिंगटन डीसी
13. क्षेत्रीय केंद्र : राश्ट्रीय सार्वजनिक सहकारिता एवं बाल विकास संस्थान (एनआइपीसीसीडी), गुवाहाटी
14. कथा नई दिल्ली

शोध परियोजनाएँ

1. दिल्ली के एमसीडी स्कूलों में मुझे पढ़ना पसंद है का प्रभाव मूल्यांकन।
2. निर्धन शिशु विकास – मापदंड पर प्रभाव – ओडिशा में एनआइएच अध्ययन।
3. दिल्ली में दिमाग बचाओ; मन बदलो(सेविंग ब्रेन्स; चेजिंग माइन्डसेट)
4. भारतीय आरम्भिक शिशु शिक्षा प्रभाव अध्ययन (इंडियन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन इंपैक्ट स्टडी/आइईसीईआइ) – राजस्थान, असम और तेलंगना में देशांतर शोध अध्ययन।
5. दिल्ली में, बौद्धिक राष्ट्रीय पोषण सर्वेक्षण।
6. बहराइच, यूपी में ''बच्चों के लिए पढ़ो (रीड फॉर चिल्ड्रेन)'' पर मूल्यांकन परियोजना।

7. 13 राज्यों में शिशु (ईसीई) विकास में बेहतर शिक्षा परिणाम प्रणाली पद्धति (एसएबीईआर)।
8. 8 राज्यों में इसीसीई में उत्तम प्रणालियों के स्थिति अध्ययन।
9. ईसीसीई पर शैक्षिक कार्यक्रमों का विकास और आरंभ – ईसीसीई में मास्टर कार्यक्रम।
10. यथासमय शुरू : समय पर पढ़ाई परियोजना।
11. शिशु देखभाल एवं शिक्षा में संक्षेपण नीति का व्यवहार्यता मूल्यांकन – राजस्थान एवं महाराष्ट्र।
12. बच्चों के लिए प्रारम्भिक शिक्षा एवं विकास मापदंडों का निर्धारण।
13. यूएनआइसीईएफ (यूनिसेफ), बंगाल को तकनीकी सहायता।
14. सभी के लिए शिक्षा की वैश्विक निगरानी रिपोर्ट : सीईसीईडी द्वारा तैयार भारत की स्थिति।
15. विद्यालयी औत्सुक्य पर फिल्म।

कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

एक साथ बैठने और उत्तम देखभाल के अनुभव साझा करने हेतु युवा माता–पिताओं के लिए गूगल प्लस हैंगआउट पर एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया (7 अक्टूबर 2014)।

14 जुलाई 2014 से 12 अक्टूबर 2014 तक एक जीवंत मीडिया अभियान का आयोजन किया गया। उन स्थलों पर प्रथम वर्ष प्रथम (एफवाइएफ) क्लिपों को फहराने के लिए लगभग 700 परदों का उपयोग किया गया, जहाँ माता–पिता और बच्चे बहुधा जाया करते हैं, जैसे रेस्त्राँ और अस्पताल के प्रतीक्षालय। इसका उद्‌देश्य उत्तम देखभाल प्रणालियों से जुड़े संवादों के संप्रेषण में 'कैप्टिव ऑडिएंस नेटवर्क' के प्रभाव का मूल्यांकन करना था।

जोआन लोंबार्डी ने ''अर्ली चाइल्डहुड 2014 : करेंट ट्रेंड्स एंड मूविंग फॉरवर्ड'' पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया (अगस्त 2014)।

प्रारम्भिक शिक्षा एवं विकास मापदंडों के संरचना–विन्यास का निर्माण करने हेतु सीईसीईडी द्वारा एक कार्यशाला का आयोजन किया गया (21–22 अक्टूबर 2014)।

सीईसीईडी के पाँच वर्ष पूरा होने के अवसर पर, इसकी टीम ने पाँचवीं वर्षगाँठ मनाई और इसमें मानेसर स्थित आमोद रिजॉर्ट में एक दो दिवसीय आनंद–अवकाश का आयोजन किया गया (4–5 नवंबर 2014)।

सीईसीईडी ने 2015 में नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में भाग लिया और अपने प्रकाशनों की प्रदर्शनी लगाई (14 से 22 फरवरी 2015)।

''चाइल्डहुड थ्रू दि एलईएनएस (लेंस) : डाइवर्स सेटिंग्स'' विषय पर 3 से 11 फरवरी 2015 तक एक परिसर छायाचित्र प्रतिस्पर्धा (कैंपस फोटोग्राफी कंटेस्ट) का आयोजन किया गया।

इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में ''रिजर्वेशन फॉर इकॉनॉमिकली वीकर सेक्शन इन आरटीई सोशियो–इमोशनल चैलेंजेज एंड मिटिगेटिंग मेजर्स'' पर एक पैनेल परिचर्चा का आयोजन किया गया (26 फरवरी 2015)।

मनोचिकित्सा एवं नैदानिक शोध केंद्र (सीपीसीआर)

सीपीसीआर औपचारिक रूप से जुलाई 2013 में अस्तित्व में आया। केंद्र का आधार एक मनोविश्लेषक नैदानिक विन्यास है, जो आनुभविक दृष्टि से अवचेतन में विश्वास रखता है, संबंधों की देखभाल के महत्व और करुणा (संवेदना) के पोषण की नैतिकता में विश्वास रखता है। सीपीसीआर का लक्ष्य और उद्देश्य न्यून शुल्क के साथ गुणवत्तापूर्ण मनोवैज्ञानिक सेवाएँ विकसित करना और उपलब्ध कराना और भारतीय परिप्रेक्ष्य में मनोचिकित्सा की प्रणाली पर पुनर्विचार करना और मनोचिकित्सा एवं नैदानिक अध्ययन में एक गहन एमफिल कार्यक्रम के माध्यम से मनोविश्लेषी व समाज के प्रति संवेदनशील मनोचिकित्सकों को प्रशिक्षण देना है।

विश्वविद्यालय के भीतर कुछ खास उपेक्षित समुदायों (सफाई कर्मचारी और चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी) के मनो–सामाजिक एवं संवेगात्मक जीवन को साथ जोड़ने के लिए एक

परियोजना शुरू की है। इसका उद्देश्य उन्हें उनके आंतरिक अनुभवों और अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने के लिए एक मंच मुहैया कराना, इन बयानों को दर्ज करना और शोध के प्रयोजनों के लिए सार्थक विषयों को चुन लेना है।

एहसास – मनोचिकित्सा एवं सलाह निदान गृह

एहसास – मनोचिकित्सा एवं सलाह निदान गृह की स्थापना वर्ष 2011 में एसएचएस के द्वारा की गई। वर्ष 2013 में, मनोचिकित्सा एवं नैदानिक शोध केंद्र अस्तित्व में आया। एक सर्पी शुल्क संरचना के साथ–साथ, लोगों के कतिपय सामाजिक–आर्थिक यथार्थों का पोषण करने के लिए एहसास नगण्य शुल्क लेता और निःशुल्क परामर्श तथा मनश्चिकित्सा की व्यवस्था करता है। एहसास में वयस्क, किशोर, बाल एवं परिवार निदान गृह शामिल हैं।

निकट भविष्य में, एहसास मनो–नैदानिक और मनोवैज्ञानिक जाँच सेवाएँ उपलब्ध कराने की आशा रखता है। एक रेफरल सेवा के साथ एक संस्थागत मनोचिकित्सक की नियुक्ति प्रस्तावित है। एहसास में भावनात्मक व्यथा से ग्रस्त 300 से अधिक लोग आए हैं। एहसास ने परिवार में प्यार की कमी, अवांछित और अकेलेपन की भावना जैसी समस्याओं से ग्रस्त बच्चों के साथ भी काम किया है। ऐसे बच्चे भी आए हैं, जिन्हें कक्षा में सामंजस्य से जुड़ी समस्याओं, पढ़ाई में कठिनाई और साथियों और शिक्षकों के साथ संबद्ध समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

एहसास का कर्मचारी वर्ग विभिन्न चिकित्सकीय प्रारूपों के साथ काम करता है : दीर्घ–आवधिक मनोविश्लेषी मनोचिकित्सा, संकट समाधान का प्रयास, दिल्ली शहर के पिछड़े क्षेत्रों या पड़ोसी क्षेत्रों के वैसे मरीजों की माँग पर संक्षिप्त मनो–गतिशीलन मनश्चिकित्सा और सत्र, जिन्हें साप्ताहिक आधार पर मानसिक चिकित्सा की सुविधा नहीं मिल पाती।

एहसास ने भारतीय मनोविश्लेषी संस्था (इंडियन साइकोएनैलिटिक सोसाइटी), लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, तुलसी फाउंडेशन, मानसिक स्वास्थ्य एवं आचरणिक विज्ञान विभाग (फोर्टिस) की मनोविश्लेषण इकाई, राष्ट्रीय जन सहकारिता एवं बाल विकास

संस्थान (एनआइपीसीसीडी), समता अध्ययन केंद्र (सेंटर फॉर इक्विटी स्टडीज), अमन बिरादीरी, मल्टिपल स्क्लेरोसिस सोसाइटी, दिल्ली यूनाइटेड क्रिश्चियन स्कूल और उदयन केयर फाउंडेशन जैसी संस्थाओं से संपर्क कायम किया है। एमफिल मनोचिकित्सा एवं नैदानिक अध्ययन के छात्र इन स्थलों पर मनोचिकित्सकों, मनोविज्ञानियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और शिशु देखभाल विशेषज्ञों से रोगी देखभाल एवं कार्य का प्रशिक्षण लेते हैं।

उपलब्धियाँ / प्रतिष्ठा / पुरस्कार

पैवम नूपुर ढींगरा को गुड़गाँव स्थित फोर्टिस अस्पताल द्वारा आयोजित दूसरे वार्षिक सुधीर कक्कड़ सम्मेलन (2015) – दि पैटर्नल इन कल्चर एंड साइकोएनैलिसिस में प्रस्तुत उनके शोध पत्र ''कीपिंग फादर इन माइंड'' के लिए सुधीर कक्कड़ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

हक़, शिफा को राष्ट्रीय मनोविज्ञान अकादमी (नेशनल एकेडमी ऑफ साइकॉलॉजी) (एनएओपी), भारत के 24वें वार्षिक सम्मेलन में सर्वश्रेष्ठ पत्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रस्तुतियाँ

हक़, एस (2014), मॉर्निंग दि 'डिसअपियर्ड' इन कश्मीर – सर्वाइविंग ट्रॉम थ्रू दि डायलेक्टिक्स बिटवीन लॉस एंड एबसेंस। पत्र राष्ट्रीय मनोविज्ञान अकादमी (एनएओपी), एनआइटीटीआर, भोपाल, भारत के 24वें वार्षिक सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया।

——, (2014), रिप्रेजेंटिंग एबसेंस – सर्वाइवर आर्ट इन कश्मीर थ्रू वर्क्स ऑफ मसूद हुसैन। पत्र भारतीय कला इतिहास कांग्रेस, राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान में प्रस्तुत।

——, (2015), सीता थ्रू दि टाइम वार्प – रिवाइजिंग दि टिक्लिश रिलेशन बिटवीन रिनन्सिएशन एंड मोरल नार्सिसिज्म इन दि लाइव्स ऑफ इंडियन वीमेन।

मसीह, एस (2015), दि सिरियसली मैड एंड स्ट्रेंजली डिवाइन इन शमन्स एंड सीकर्स – रिफ्लेक्शंस ऑन साइकोथिरैपी एंड एक्स्टॉर्सिज्म।

रॉय, ए (2015), इलस्ट्रेटिंग शेड्स ऑफ दि निगेटिव आइडेंटिटी इन इन्टिमेट हिंदू–मुस्लिम रिलेशनशिप्स थ्रू दि वर्क्स ऑफ सुधीर कक्कड़ एंड एरिक एरिक्सन।

ऊपर वर्णित तीन पत्र क्राइस्ट विश्वविद्यालय, बेंगलुरु के मनोविज्ञान विभाग द्वारा ''कल्चर एंड साइक : सुधीर कक्कर्स कंट्रिब्यूशन्स टु इंडियन कल्चरल साइकॉलॉजी एंड साइकोएनैलिसिस'' परिसंवाद में ''हिसेस, मिसेज एंड लोनलियर टोंस – म्यूजिंग्स ऑन इंडियन वूमनहुड थ्रू कक्कर्स वर्क'' संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए।

सिंह, आर (2015), दि जर्नी फ्रॉम स्कूल टु दि यूनिवर्सिटी : सम रिफ्लेक्शंस ऑन दि वर्क इन ए यूनिवर्सिटी क्लिनिक। पत्र लुसाने, स्विट्जरलैंड में चाइल्ड एंड एडोलेसेंट मेंटल हेल्थ इन एजुकेशन सेटिंग्स पर चौथे यूरोपीय सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

प्रोफेसर अशोक नागपाल द्वारा प्रथम सिगमंड फ्रायड स्मारक व्याख्यान – ''फ्रायड – ए रिलेशनल गुरु'' प्रस्तुत (मई 2014)।

विलियम एलनसन ह्वाइट इंस्टिट्यूट, न्यू यॉर्क के इंटरपर्सोनल साइकोएनैलिस्ट (अंतर्वैयक्तिक मनोविश्लेशक) गुरमीत कँवल ने क्लिनिकल वर्कशॉप्स एंड सुपरविजन – इंटरपर्सोनल एनैलिसिस का संचालन किया (अगस्त 2014)।

डॉ. बारी कँवल द्वारा वार्ता एवं परिचर्चा – ''कपल्स थिरैपी'' (अगस्त 2014)।

मनोविश्लेषक मनश्चिकित्सकों के लिए प्रोफेसर सुधीर कक्कड़ के साथ (नैदानिक कार्यशालाएँ) (सितंबर 2014)।

प्रथम भारतीय–जर्मन नैदानिक सम्मेलन (फर्स्ट इंडो–जर्मन क्लिनिकल कॉन्फ्रेंस) (सीपीसीआर, एयूडी एवं साइकोएनैलिसिस एंड साइकोथिरैपी, बर्लिन के बीच सहयोग) (अक्टूबर 2014)।

डॉ. झूमा बसाक द्वारा चोखेर बाली फिल्म का विश्लेषण (जनवरी 2015)।

डॉ. सलमान अख्तर द्वारा साइकिक पेन, बाइलिंगुअलिज्म एंड पोएट्री पर वार्ता (2015, जनवरी)।

विल्फ्रेड बायन के जीवन और विचार ए मेम्वॉयर ऑफ दि फ्यूचर पर कुमार शाहनी, मेग हैरिस विलियम्स और सलमान अख्तर द्वारा फिल्म प्रदर्शन एवं परिचर्चा (जनवरी 2015)।

सुधीर कक्कड़ द्वारा दिल्ली और ईरान के मनोविश्लेषक चिकित्सकों के लिए नैदानिक कार्यशाला और निरीक्षण (फरवरी 2015)।

डॉ. डायमंड अलीदिना द्वारा दि नेमसेक फिल्क का विश्लेषण (फरवरी 2015)।

फोर्टिस अस्पताल एवं सीपीसीआर द्वारा दूसरे वार्षिक मनोविश्लेषी सम्मेलन ''पैटर्नल इन साइकोएनैलिसिस'' का आयोजन (फरवरी 2015)।

सीपीसीआर एवं एसएचएस द्वारा ''आवाज'' – विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस (वर्ल्ड मेंटल हेल्थ डे) मनाया गया (अक्टूबर 2014)।

प्रकाशन केंद्र (सीएफपी) सीएफपी की स्थापना एयूडी के आरंभिक लक्ष्यों में से एक है। संभावनाओं की खोज करने, विचारों और मतों का पता लगाने की प्रक्रिया में एयूडी के भीतर कई अनौपचारिक मंत्रणा बैठकों के साथ–साथ औपचारिक मंत्रणा बैठकों का आयोजन किया गया जिनमें प्रकाशन क्षेत्र के अध्यवसायियों ने भाग लिया। एयूडी में एक प्रकाशन केंद्र की स्थापना की आवश्यकता और संभावना के मूल्यांकन और विचार–विमर्श हेतु वर्ष 2012 में एक अनुभवी विशेषज्ञ ने एक अध्ययन का आयोजन किया। एयूडी में अग्रलिखित दोहरे उद्देश्यों के साथ सीएफपी वर्ष 2013 में शुरू किया गया – (1) प्रकाशन कार्य शुरू करना और (2) प्रकाशन में शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रावधान करना।

प्रकाशन के केन्द्र (सीएफपी)

सीएफपी सर्वोत्कृष्ट प्रणालियों और नैतिक मूल्यों का पालन करते हुए विद्वत्तापूर्ण एवं सृजनात्मक सूचना और ज्ञान का सुनियोजित अधिग्रहण और प्रचार–प्रसार करना चाहता है। इससे एयूडी को सहायता मिलेगी और उसके लिए समय–समय पर पत्रों, सम्मेलन की कार्यवाहियों, मोनोग्राफ, संपादित पुस्तकों, पाठ्य साम्रगी और संदर्भ ग्रंथों के साथ–साथ अकादमिक साहित्य का प्रकाशन सरल होगा। इस दिशा में एयूडी के भीतर प्राध्यापक वर्ग के सदस्यों और इसके सदस्य सचिव के रूप में श्री सी. सजीश कुमार, सीएफपी के साथ एक संपादन समिति का गठन किया गया है।

प्रकाशन उद्योग के लिए व्यवसायियों को तैयार करने की आवश्यकता के मद्देनजर, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एनबीटी) के सहयोग से एयूडी ने वर्ष 2013 में प्रकाशन में एक एक–वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरू किया, जिसका लक्ष्य प्रकाशन में करियर बनाने के इच्छुक पेशेवरों को प्रशिक्षण देना है। प्रकाशन के मुख्य क्षेत्रों में योगदान देने के अतिरिक्त, पीजीडीपी छात्रों को एक उद्यम के रूप में प्रकाशन के प्रबंधन से जुड़ी समस्याओं, कानूनी और नैतिक मुद्दों आदि से अवगत भी कराता है। प्रबंधकीय एवं प्रशासनिक पद्धतियों की शिक्षा देने के उद्देश्य के मद्देनजर और प्रकाशन को एक उद्यम के रूप में देखते हुए, कार्यक्रम की स्थापना एसबीपीपीएसई में की गई है। प्रकाशन में कार्यरत पेशेवरों के ज्ञान और कौशलों में सुधार लाने हेतु सीएफपी अल्प–आवधिक प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रम भी चालू करना चाहता है।

अंतरराष्ट्रीय सहयोजन/ साझीदारियाँ

अंतरराष्ट्रीय साझीदारी एवं जन संपर्क विभाग विदेशी संस्थानों के साथ चालू अकादमिक सहयोगों की देखरेख, नए प्रस्तावों का निर्माण, अंतरराष्ट्रीय अतिथि अकादमिकों को प्रशासनिक सुविधा की व्यवस्था, संबद्ध प्राध्यापक वर्ग के साथ बैठकों का समन्वयन, अंतरराष्ट्रीय साझीदारी सलाहकार समिति (एसीआइपी) के साथ समय–समय पर बैठकों के संयोजन के अतिरिक्त विदेशी छात्रों/शिक्षकों को प्रस्थान से पहले एफआरआरओ पंजीकरण एवं निर्गम अनुमति समेत सहायता प्रदान करता है। यह समिति की अनुशंसा पर अनुवर्ती कार्यकलापों का निरीक्षण भी करता है।

इसके अतिरिक्त, छात्रों एवं प्राध्यापक वर्ग के अकादमिक हितों को ध्यान में रखते हुए वित्तीय सहायता के अवसरों की खोज और एयूडी वेबसाइट पर संबद्ध सूचना जारी करना, प्रायोजित शोध परियोजनाओं का पुनरीक्षण करना, समाचार माध्यमों को महत्वपूर्ण घटनाओं के पहले और बाद की सूचना देकर एयूडी के कार्यक्रमों और गतिविधियों को प्रकाशित करना, मीडिया कार्यालय के रूप में कार्य करते हुए, विभिन्न कार्यक्रमों के समाचार प्रकाशन के लिए एयूडी के प्राध्यापक वर्ग का मीडिया के साथ संपर्क की व्यवस्था करना और वेबसाइट कार्यबल (वेबसाइट टास्कफोर्स) के समन्वयक के रूप में बैठकों का आयोजन तथा एयूडी वेबसाइट की सामग्री का प्रबंध करना इस विभाग के कुछ अन्य कार्य हैं।

अंतरराष्ट्रीय संगठनों/संघों के साथ समझौता ज्ञापन

सदस्य, अर्बन नॉलेज नेटवर्क एशिया (यूकेएनए/शहरी ज्ञान तंत्र एशिया संघ) कंसोर्शियम अंतर–विश्वविद्यालय सहयोगी आदान–प्रदान : सदस्य संस्थानों के बीच प्राध्यापकों के अल्प–आवधिक आदान–प्रदान से शोध साझा करना।

सान फ्रांसिस्को राज्य विश्वविद्यालय पारस्परिक हित की शोध परियोजनाओं पर सहयोग; पाठ्यक्रम और अध्यापन पर विशेषज्ञता का आदान–प्रदान; संयुक्त परियोजनाओं के लिए संगोष्ठियों, परिसंवादों, सम्मेलनों का आयोजन करना; संयुक्त

सहयोगी परियोजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए संसाधनों का परस्पर आदान–प्रदान; स्नातक एवं स्नातक छात्रों का आदान–प्रदान; शिक्षकों का आदान–प्रदान; संयुक्त शिक्षा कार्यक्रमों का विकास।

अमेरिकन इंडियन फाउंडेशन ट्रस्ट पाठ्यक्रमों की संरचना, शिक्षा एवं शोध तथा एयूडी के साथ विश्वविद्यालय आधारित स्टडी विदेशी साझेदारी कार्यक्रम के प्रबंध के लिए यूएचएम एसएसी के संचालन हेतु शिक्षकों के लिए शैक्षिक प्रक्रियाओं का संवर्धन।

नॉर्थम्पटन विश्वविद्यालय (इंग्लैंड) शैक्षिक आदान–प्रदानों और शिक्षण/शोध में शिक्षकों के सहयोग को बढ़ावा; छात्रों का आदान–प्रदान; शैक्षिक कार्यक्रमों की रूपरेखा एवं क्रियान्वयन।

बैंक स्ट्रीट कॉलेज ऑफ एजुकेशन (संयुक्त राज्य अमेरिका) परस्पर हित एवं लाभ की शोध परियोजनाओं पर सहयोग; पाठ्यचर्या और पेडागाजी विशेषज्ञता साझा करना, संगोष्ठियों, परिसंवादों, सम्मेलनों और संयुक्त परियोजनाओं का आयोजन करना; संयुक्त सहयोगी परियोजनाओं के लिए संसाधन का परस्पर आदान–प्रदान; छात्रों एवं शिक्षकों का आदान–प्रदान, संयुक्त शिक्षा कार्यक्रमों का विकास।

इरैस्मस विश्वविद्यालय रोटरडैम (हॉलैंड) द्वि–उपाधि कार्यक्रमों (एयूडी – आइएसएस मास्टर कार्यक्रम एवं विशेष सर्टिफिकेट कार्यक्रम); शिक्षक और/या शोध अध्येता का आदान–प्रदान।

नॉर्वेजियन इंस्टिट्यूट ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स (एनयूपीआइ) ''दि स्टेट, ग्लोबलाइजेशन एंड इंडस्ट्रियल डिवेलपमेंट इन इंडिया : दि पॉलिटिकल इकॉनॉमी ऑफ रेग्युलेशन एंड डिरेग्युलेशन'' का क्रियान्वयन।

येल विश्वविद्यालय ''अर्ली चाइल्डहुड डिवेलपमेंट फॉर दि पुअर : इंपैक्टिंग ऐट स्केल (एनआइएच स्टडी)'' 1) वैकल्पिक सेवा प्रावधान विधियों, पिछले छोटे प्रयासों के सापेक्ष उनकी प्रगति एवं प्रभावशीलता की जाँच करना; 2) उन तंत्रों की पहचान करना जो बाल विकास पर ईसीडी के प्रभाव का निर्धारण करते हों।

रॉयल कॉलेज ऑफ आर्ट अभिकल्प, संस्कृति एवं समाज पर स्नातकोत्तर शिक्षा की सर्वोत्तम प्रणालियों का विकास करना : सहयोगी, अंतर–सांस्कृतिक साझीदारी के जरिए पाठ्यचर्या, पेडागाजी एवं शिक्षण सामग्रियों का विकास करना।

यूरोपियन यूनियन (किंग्स कॉलेज लंदन; बोलोना विश्वविद्यालय) भारत में स्नातक शिक्षा की गुणत्ता, सुविधा और शासन (इ–क्यूयूएएल) का संवर्धन।

ब्रिटिश एकेडमी ब्रिटिश एकेडमी इंटरनेशनल पार्टनरशिप एंड मोबिलिटी (ब्रिटिश अकादमी अंतरराष्ट्रीय साझीदारी एवं गतिशीलन) योजना 2014–2017।

विदेशी प्रतिनिधिमंडलों के साथ बैठकें

युन्नान विश्वविद्यालय प्रोफेसर जियाओ जियान, श्री एंडी वांग एवं अन्य (25 अप्रैल 2014)।

अमेरिकी दूतावास सुश्री कैथेरीन ए कारो, नई दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास में सांस्कृतिक अताशे, शिक्षा एवं विनिमय (14 जुलाई 2014)।

इंडियाना विश्वविद्यालय प्रोफेसरगण माईकेल मैकरॉबी, डेविड जैरेज, शॉन रीनॉल्ड्स एवं माइकेल एस डॉड्सन (31 अक्टूबर 2014)।

बुरुंडी सरकार इमैन्युएल तुंगमवीजे, स्टीव द क्लिफ, इदा मुसोदा, फ्लोरिडा तुईशिमेजे, एमरी लैंड्री (12 नवंबर 2014)।

वर्जिनिया विश्वविद्यालय (यूवीए) डॉ जेफ्री लेग्रो, उप अध्यक्ष, वैश्विक मामले (14 नवंबर 2014)।

इंडियाना विश्वविद्यालय मुनीरपल्लम वेंकटरमण, प्रोफेसरगण मार्टिन मैकरॉय एवं माइकेल एस. डॉड्सन (11 दिसंबर 2014)

सेनेका कॉलेज, टोरंटो कनाडा प्रोफेसर डेविड एग्न्यू, अध्यक्ष (7 जनवरी 2015)

एडिनबर्ग विश्वविद्यालय प्रोफेसरगण चार्ली जेफरी, रोजर जेफरी एवं सुश्री अमृता सदारंगानी (26 फरवरी 2015)।

व्लिरस विश्वविद्यालय व्लिरस विश्वविद्यालय विकास सहयोग, बेल्जियम अंतर–विश्वविद्यालय परिषद, दायित्व : बेल्जियन विकास सहयोग द्वारा विकास हेतु विश्वविद्यालय सहयोग के लिए आवंटित कोष का प्रबंधन। क्रिस्टोफी गोसेन्स, वीएलआइआर–यूओएस कार्यक्रम पदाधिकारी साउथ एवं भारत संबद्ध डेस्क ऑफिसर, श्री नील बुचर, अंतरराष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा विशषज्ञ एवं मोहन दास सलाहाकार व्लिरस, बेल्जियम (20 मार्च 2015)।

व्यवसाय, लोक नीति एवं सामाजिक उद्यमिता अध्ययनशाला

अग्रवाल, एस, ए गुप्ता, के गोविंदन, पीसी झा एवं आइ मीदुते, (2014), इफेक्ट ऑफ रिपीट पर्चेज एंड डायनैमिक मार्केट साइज ऑन डिफ्यूजन ऑफ इनोवेटिव टेक्नॉलॉजिकल कंज्यूमर प्रॉडक्ट इन सेगमेंटेड मार्केट (एक वर्गीकृत बाजार में अभिनव तकनीकी उपभोक्ता उत्पाद के प्रसार पर पुनर्क्रय और गतिशील बाजार का प्रभाव)। टेक्नॉलॉजिकल एंड इकॉनॉमिक डिवेलपमेंट ऑफ इकॉनॉमी, 20 (1), 97–115।

अग्रवाल एस, ए कौल, ए गुप्ता एवं पीसी झा (2014), इंटेलिजेंट सिस्टेम्स एंड कंप्यूटिंग सिरीज़, बंसल जेसी, सिंह पी, दीप के, एम पंत और एके नागर (संपादन), प्रोसीडिंग्स ऑफ दि थर्ड इंटरनेशनल कॉन्फेरेंस ऑन सॉफ्ट कंप्यूटिंग फॉर प्रॉब्लेम सॉल्विंग (सॉकप्रॉस 2013), स्प्रिंगर इंडिया, दिसंबर 26–28, 259 : 905–928

दवे, के, जी अटवाल, एवं डी ब्राइसन (2014), दि लग्जरी लैंडस्केप इन इंडिया : कॉन्सिक्वेंसेज फॉर दि वाइन सेक्टर। इन लग्जरी ब्रैंड्स इन इमर्जिंग मार्केट (पृ. 85)। पैलग्रेव।

दवे, के, और जी धमीजा (2014), मिराया : दि ट्रेंडी वीमेंस वेअर ब्रैंड। इमराल्ड इमर्जिंग मार्केट केस स्टडीज, 4 (3), 1–17।

गैहा, आर, आर झा, वी कुलकर्णी और एन काइकर (2015), डायट्स, न्युट्रिशन एंड पॉवर्टी इन इंडिया। इन हेरिंग आर. (सं.), ऑक्सफर्ड हैंडबुक ऑफ फूड, पॉलिटिक्स एंड सोसाइटी, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, न्यू यॉर्क।

इमाई, के, आर गाइहा, अली एवं एन काइकर (2014), रेमिटैंस, ग्रोथ एंड पॉवर्टी : न्यू एविडेंस फ्रॉम एशियन कंट्रीज। जर्नल ऑफ पॉलिसी मॉडलिंग, 36 (3), 524–538।

अय्यर, वीएम, एवं के दवे (2015), इंडस्ट्रीज रोल इन इंप्लॉयेबिलिटी। इंडस्ट्रियल एंड कॉमर्शल ट्रेनिंग, एमराल्ड पब्लिशिंग, 47(3)।

झा, पीसी, एस अग्रवाल, ए गुप्ता, डी कुमार, और के गोविंदन (2014), इनोवेशन डिफ्यूजन मॉडेल फॉर ए प्रॉडक्ट इन्कॉर्पोरेटिंग सेगमेंट–स्पेसिफिक स्ट्रेटीजी एंड स्पेक्ट्रम इफेक्ट ऑफ प्रमोशन। जर्नल ऑफ स्टैटिस्टिक्स एंड मैनेजमेंट सिस्टेम्स, 17(2), 165–182।

झा आर, आर गैहा, एम पांडेय एवं एन काइकर (2014), फूड सब्सिडी, इन्कम ट्रांस्फर एंड दि पुअर : ए कंपैरेटिव एनैलिसिस ऑफ दि पब्लिक डिस्ट्रिब्यूशन सिस्टेम इन इंडियाज स्टेट्स। आर गैहा, आर झा और वी कुलकर्णी (सं.), डायट्स, मालन्युट्रिशन एंड डिजीज : दि इंडियन एक्सपीरिएंस, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, नई दिल्ली।

काइकर एन, वी कुलकर्णी और आर गैहा (2014), डायट्री ट्रांजिशन इन इंडियाः एन एनैलिसिस बेस्ड ऑन एनएसएस डेटा फॉर 1933 एंड 2004। आर गैहा, आर झा, एवं वी कुलकर्णी (संपा.), डायट्स, मालन्युट्रिश एंड डिजीज : दि इंडियन एक्सपीरिएंस, ऑक्सफर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, नई दिल्ली।

काइकर एन एवं आर गैहा (2014), कैलोरी थ्रेशहोल्ड्स एंड अंडरन्युट्रिशन इन इंडिया, 1993–2004। आर गाइहा, आर झा, एवं वी कुलकर्णी (संपा.), डायट्स, मालन्युट्रिश एंड डिजीज : दि इंडियन एक्सपीरिएंस, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, नई दिल्ली।

माणिक, पी, ए गुप्ता और पीसी झा (2015), मल्टी स्टेज प्रमोशनल रिसोर्स एलॉकेशन फॉर सेगमेंट स्पेसिफिक एंड स्पेक्ट्रम इफेक्ट ऑफ प्रमोशन फॉर ए प्रॉडक्ट इनकॉर्पोरेटिंग रिपीट पर्चेज बिहेवियर। इंटरनेशनल गेम थियरी रिव्यू, 17 (2), 1540021–1540041।

सिन्हा, पी एवं के माथुर (2015), प्राइस, रिटर्न एंड वोलेटाइलिटी लिंकेजे ऑफ बेस मेटल फ्यूचर्स ट्रेडेड इन इंडिया। इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ फाइनैंस एंड इकॉनॉमिक्स, 130, 35–54।

त्रिपाठी, जी एवं के दवे (2014), एक्स्प्लोरेशन ऑफ सर्विस क्वॉलिटी फैक्टर्स इन रेस्टोरेंट इंडस्ट्री : ए स्टडी ऑफ सेलेक्टेड रेस्टोरेंट्स इन न्यू देल्ही रीजन। जर्नल ऑफ सर्विसेज रिसर्च, 14 (1), 9–26।

संस्कृति एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययनशाला

जैन, एस (2015), इलस्ट्रेशन फॉर चकमक इश्यू (चकमक अंक के लिए चित्र) फरवरी 2015।

कृष्णन, आर (2015), कथनयगणिन मरणम (डेथ ऑफ दि हीरो – एसेज ऑन तमिल सिनेमा हिस्ट्री, एस्थेटिक्स एंड कंटेंपोरेरी ट्रेंड्स/तमिल सिनेमा इतिहास पर निबंध, सौंदर्य शास्त्र एवं समकालीन रुझान), (द्वितीय संशोधित संस्करण)। चेन्नई : कायल

कविन प्रकाशन।

——, (2015), मनुदा एतानम एनराल एन्ना? (ह्वाट इज ह्युमन एजेंसी? : एसेज ऑन फिलॉसॉफी, पॉलिटिक्स एंड कल्चर / दर्शन, राजनीति एवं संस्कृति पर निबंध), चेन्नई : कायल केविन प्रकाशन।

डिज़ाइन अध्ययनशाला

गुप्ता, ए (2014)। डिस्कवरिंग दि सेल्फ एंड अदर्स इन जम्मू, कश्मीर एंड लद्दाख। एस.के. चौधुरी व एस.एस. चौधुरी (संपा.), फाइलवर्क इन साउथ एशिया : मेमॉरीज, मोमेंट्स, एंड एक्सपीरिएंस। *http://www.sagepub.in/books/Book243361/toc*

——, जे. धमीजा के प्रकाशन में प्रकाशित छायाचित्र (संपा.), सैक्रेड टेक्स्टाइल्स ऑफ इंडिया। *http://www.marg-art.org/p/672/sacred-textiles-of-india*

विकास अध्ययनशाला

नायक, एन एवं अरॉको, वी आदि (2014), स्ट्रेंथेनिंग सोशल जस्टिस टु एड्रेस इंटरसेक्टिंग इनइक्वलिटीज पोस्ट–2015। लंदन एंड न्यू यॉर्क : ओवरसीज डिवेलपमेंट इंस्टिट्यूट एंड यूनाइटेड नेशंस।

नायक, एन (2014), फ्रॉम 'बेनिफिशरी' टु 'वर्कर' एंड बैक : दि वैरीड पॉलिटिक्स ऑफ इंप्लिमेंटेशन ऑफ दि नेशनल रूरल इंप्लॉयमेंट गारंटी ऐक्ट इन इंडिया। कॉन्फ्रेंस ऑन दि पॉलिटिकल इकॉनॉमी ऑफ कंटेपोरेरी इंडिया (समकालीन भारत की राजनीतिक अर्थनीति), आइजीआइडीआर, मुंबई। *http://www.igidr.ac.in/indiapolecon/conference.php*

शैक्षिक अध्ययनशाला

जैन, एम (2015), करिकुलम स्टडीज इन इंडिया : कॉलोनियल रूट्स एंड पोस्टकॉलोनियल ट्रैजेक्टोरीज। डब्ल्यू. एफ. पिनार (संपा.), करिकुलम स्टडीज इन इंडिया : इंटेलेक्टुअल हिस्ट्रीज, प्रेजेंट्स सर्कमस्टांसेज (पीपी 111–139)। न्यू यॉर्क : पैलग्रेव मैकमिलन।

——, (2015), रिव्यू ऑफ न्यू पर्स्पेक्टिव्स इन दि हिस्ट्री ऑफ इंडियन एजुकेशन परिमाला वी. राव द्वारा संपादित। कंटेंपोरेरी एजुकेशन डायलॉग, 12 (1), 110–115।

माओ, एके, और एमके चहिल (2014), ज्ञानशक्ति और 'राइट फॉर यूनिटी' : टु इग्जैंपल्स ऑफ इलेक्टोरल कैंपेन बाइ 'अदर' मीन्स। सोशल साइंटिस्ट, 42(5–6), 69–80।

शर्मा, जी (2014), अंडरस्टैंडिंग दि टी स्टॉल्स ऑन देल्ही कैंपस : ए क्वॉलिटेटिव स्टडी ओकेजनल पेपर्स (प्रसंगाश्रित पत्र), शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1 (1–6), 1–17।

मानव पारिस्थितिकी अध्ययनशाला

दास, पी (2015), एन्वायरन्मेंटल मैनेजमेंट इन ऑयल एंड गैस अपस्ट्रीम इंडस्ट्री इन इंडिया। जर्नल ऑफ इंडस्ट्रियल पॉल्यूशन एंड कंट्रोल, 30 (1), 59–66।

दास, पी एवं एस जोशी (2014), होमगार्डेन लिचेंस – ए पर्स्पेक्टिव फॉर एथ्नोलाइकेनोलॉजी इन बराक वैली, असम। जर्नल ऑफ फंक्शनल एंड एन्वायरन्मेंटल बॉटनी, 42 (2), 77–86।

दास, पी एवं पी पुरकायस्थ (2014), कन्जर्वेशन : एक न्यू साइंस ऑर एन ओल्ड पर्सेप्शन। इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ बायॉलॉजिकल साइंसेज (जैव विज्ञान की अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका), 3 (9), 93–96।

दास, पी, जे राउत एवं एस जोशी (2015), कम्युनिटी मीट्रिक्स अंडर एअर पॉल्यूशन स्ट्रेस कंडिशन। डी.के. उप्रेती, वी. शुक्ला, पी.के. दिवाकर एवं आर. बाजपेयी (संपा.), रिसेंट एडवांसेज लाइकेनोलॉजी, माडर्न मेथड्स एंड ऐप्रोचेज इन बायॉमॉनिटरिंग एंड बायोप्रॉस्पेक्शन (खं. 1)। स्प्रिंगर।

काबरा, ए एवं एस महलवाल (2014), इंपैक्ट ऑफ कन्जर्वेशन–इंड्यूस्ड डिस्प्लेसमेंट ऑन होस्ट कम्यूनिटी लिवलीहुड्स : कॉम्प्लिकेटिंग दि डीआइडीआर नैरेटिव्ज लैंड यूज पॉलिसी, 41 (नवंबर), 217–224। डीओआइ : 10 1016/जे.लैंडयूजपोल 2014 05 2010।

नेगी, आर (2014), सोल्वेजी मबांगा : एंबिवेलेंट डिवेलपमेंट्स ऑन जैंबिया'ज न्यू माइनिंग फ्रंटियर। जर्नल ऑफ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज, 40 (5), 999–1013।

सुंदर, केएसजी, एएस चौहान, एस कित्तूर एवं एस बाबू (2015) वेटलैंड लॉस एंड वॉटर बर्ड यूज ऑफ वेटलैंड्स इन पलवल डिस्ट्रिक्ट, हरियाणा, भारत :, अर्बनाइजेशन एंड

कन्जर्वेशन टु फिश पॉण्ड्स वेटलैंड्स, 35, 115–125 *http://link.springer.com/article/10.1007%2Fs13157-014-0600-8*

मानव अध्ययनशाला

धर, ए (2015), ''क्रिटिकल साइकॉलॉजी इन एशिया : फॉर फंडामेंटल कॉन्सेप्ट्स''। आइ. पार्कर

(संपा.), हैंडबुक ऑफ क्रिटिकल साइकॉलॉजी। न्यू यॉर्क एंड लंदन : रटलेज़।

धर, ए एवं ए चक्रवर्ती (2015), दि अल्तुसर–लाकन करेस्पांडेंस ऐज ग्राउंड फॉर साइको–सोशल स्टडीज। साइकोथिरैपी एंड पॉलिटिक्स इंटरनेशनल। विली ऑनलाइन लाइब्रेरी। (विलीऑनलाइनलाइब्रेरी.कॉम)

धर, ए, एस सिद्दीक़ी एवं के लैक्रोइक्स (2014), फेथ हीलिंग इंडिया : दि कल्चरल कोशिएंट ऑफ दि क्रिटिकल। डिसएबिलिटी एंड दि ग्लोबल साउथ : स्पेशल इश्यू ऑन ग्लोबल मेंटल हेल्थ, 1 (2), 285–301। *(www.dgsjournal.org).*

घई, ए एवं आर जोहरी (2015), साइंस, जेंडर एंड रिप्रोडक्टिव टेक्नॉलॉजीज : ए केस ऑफ डिसएबिलिटी जी. चड्ढा व एस. कृष्णा (संपा.), फेमिनिस्ट्स एंड साइंस : क्रिटीक्स एंड चेंजिंग पर्स्पेक्टिव्ज इन इंडिया कोलकाता : स्ट्रीट।

ललित अध्ययनशाला

बुलबोआका, एनई चो एवं पी गोस्वामी (2014) डिफरेंशल सुपरऑर्डिनेशंस एंड सैंडविच–टाइप रिजल्ट्स करेंट टॉपिक्स इन प्योर एंड कंप्यूटेशनल कॉम्प्लेक्स एनैलिसिस (पीपी. 109–146) स्प्रिंगर इंडिया।

चक्रवर्ती, धरित्री नर्जरी (2014), अंडरस्टैंडिंग दि हिस्टॉरिकल डाइनैमिक्स ऑफ नॉर्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी (एनईएफए/नेफा) ऑफ ब्रिटिश इंडिया प्रोसीडिंग्स ऑफ दि इंटरनेशनल आइआइएएस कॉन्फ्रेंस, शिमला।

दुबे, आरएस, पी गोस्वामी एवं एफबीएम बेलगासेम (2014), जनरलाइज्ड टाइम–फ्रैक्शनल टेलीग्राफ इक्वेशन एनैलिटिकल सॉल्यूशन बाइ सुमुद एंड फेरियर ट्रांस्फॉर्म्स जर्नल ऑफ फ्रैक्शनल कैलकुलस एंड एप्लिकेशंस, 15 (2)।

गोस्वामी, पी, टी बुलबोआका, एंड बीएस अलखतानी (2014), एक्स्टेंसंस ऑफ सम जेनरलाइज्ड कंडिशंस फॉर स्टारलाइकनेस एंड कन्वेक्सिटी।

गुलाटी, वी, पी गोस्वामी एवं एस जैन (2014), ऑन फ्रैक्शनल डिफरेंशल इक्वेशंस इन्वॉल्विंग जेनरलाइज्ड मिट्टैग–लेफलर फंक्शंस नॉनलिनियर स्टडीज, 21 (4), 687–701।

लीटन, डी (2014), रिव्यू ऑफ दि ट्वाइलाइट ऑफ दि ईस्ट इंडिया कंपनी दि इवॉल्यूशन ऑफ एंग्लो–एशियन कामर्स एंड पॉलिटिक्स 1790–1860, लेखक एंटनी वेब्स्टर। इंडियन हिस्टॉरिकल रिव्यू, 41 (2), 345–347।

मीर, यूए (2014), डिजास्टर एंड साइकॉलॉजिकल ऐप्रोच वर्ल्ड फोकस, 35 (7), 81–82।

मिश्रा, एस (2014), इमोशंस इन पॉलिटिक्स एंड पॉलिटिक्स ऑफ इमोशंस : दि मेकिंग ऑफ पाकिस्तान एंड दि डीकॉलॉनाइजेशन ऑफ ब्रिटिश इंडिया, 1937–46 टी. डि'कॉन्स्टैंजो एवं जी डूकोयूर (संपा.), डीसेंट्रलाइजेशन एंड दि स्ट्रगल फॉर नेशनल लिबरेशन इन इंडिया। फ्रैंकफुर्त : पीटर लैंग।

———, (2014), रिमेंबरिंग दि नेशनलिस्ट मूवमेंट : ए रिव्यू ऑफ अमलेश त्रिपाठी, इंडियन नेशनल कांग्रेस (भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस) एंड दि स्ट्रगल फॉर फ्रीडम, दि बुक रिव्यू, खंड 38, नवंबर 10।

———, (2014), ए रिव्यू ऑफ आदित्य मुखर्जी। ए सेंटेनरी हिस्ट्री ऑफ दि इंडियन नेशनल कांग्रेस, 5, 1964–84, स्टडीज इन हिस्ट्री, 30 (2), 1–4, 2014, सेज पब्लिकेशंस।

———, (2014), बिपिन चंद्रा एंड हिज टाइम्स। विकल्प, सितंबर। *http://www.vikalp.ind.in/2014/09/bipan-chandra-and-his-times.html*

———, (2014), बिपिन चंद्रा : आर्थिक राष्ट्रवाद के व्याख्याता (बिपिन चंद्रा : प्रॉपोनेंट ऑफ इकॉनॉमिक नेशनलिज्म)। प्रतिमान (सेंटर फॉर दि स्टडी ऑफ डिवेलपिंग सोसाइटीज (सीएसडीएस) द्वारा प्रकाशित एक अर्धवार्षिक निर्दिष्ट हिंदी पत्रिका), जुलाई–दिसंबर 2014।

मुस्तफा, एस, पी गोस्वामी, एसके ली एवं एम आरिफ (2014), सम रैडी प्रॉब्लम्स रिलेटेड टु सर्टेन पी–वेलेंट मेरोमॉर्फिक फंक्शंस इंडियन जर्नल ऑफ प्योर एंड एप्लाइड मैथेमैटिक्स, 45 (3), 311–320।

नाइट, डीके (2014), फैमिलिस्ट मूवमेंट एंड सोशल मोबिलिटी : झरिया कोलफील्ड्स 1895–1970 इंडियन हिस्टॉरिकल रिव्यू, 41 (2), 297–322।

———, (2014), पुस्तक समीक्षा : मारिकाना : ए व्यू फ्रॉम दि माउंटेन एंड केस टु आन्सर, लेखक पी एलेक्जेंडर, टी. लेगोवा, बी.म्मोप, एल. सिनवेल एव ंबी. जेज्वी। इकॉनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, ग्स्प (15)।

नाइट, डीके एवं पी स्टीवर्ट (2014), रीविजिटिंग दि मोरल इकॉनॉमी : दि माइनवर्कर इन साउथ अफ्रीकन माइनफील्ड्स, 1951–2011। लेबर डिवेलपमेंट (पत्रिका), 21 (1), 24–44।

नाइट, डीके एवं पी स्टीवर्ट (2014), कंसेंटिंग टु लेबर ऐप्रोप्रिएशन? : दि माइनवर्कर ऑन साउथ अफ्रीकन गोल्ड एंड कोलमाइन्स, 1951–2011। जर्नल ऑफ एशियन एंड अफ्रीकन स्टडीज, 50।

प्रधान, जी (2014), एरिक हॉब्सबॉम : बरास्ते वर्तमान सदी में मार्क्सवाद। अभिनव कदम, 18, 30 मई।

प्रधान, जी (2014), निराला के उपन्यास कला का शिखर 'कुल्ली भाट'। लमही, 6, 4 जून।

———, (2014), लोक–गीतों में प्रतिरोध। समसामयिक सृजन, जनवरी–जून

———, (2014), मार्क्स का ग्रंथालय। समकालीन जनमत, अगस्त।

———, (2014), हिंदी में प्रगतिशील आंदोलन : अध्यापन हेतु कुछ बातें। कथादेश, सितंबर।

———, (2014), कार्ल मार्क्स की एक नई जीवनी। समकालीन जनमत, सितंबर।

———, (2014), डेविड हार्वे द्वारा 'पूँजी' का अध्ययन। पक्षधर, 7, 16 जनवरी–जुलाई।

———, (2014), दर्शन की दुनिया में मार्क्स का प्रवेश। समकालीन जनमत, अक्टूबर।

———, (2014), कार्ल मार्क्स के जीवन और विचार पर मजेदार टिप्पणी। समकालीन जनमत, नवंबर।

———, (2014), दुनिया को समझाने और बदलने के प्रयासों का लेखा–जोखा। समकालीन जनमत, दिसंबर।

———, (2014), पक्ष में बहस का एक तेवर : केदारनाथ अग्रवाल का आलोचनात्मक लेखन। बनास न, 10/3 अक्टूबर–दिसंबर।

———, (2015), जीवन के आरंभिक दिनों का समाज। समकालीन जनमत, जनवरी।

———, (2015), युवा मार्क्स : एक अध्ययन। समकालीन जनमत, फरवरी।

———, (2015), साहित्य में भी ज्ञानवर्धन की जरूरत है। समीक्षा, अक्टूबर 2014 – मार्च 2015।

रसेली, आर (2014), वीमेंस लेबर इन दि टी सेक्टर : चेंजिंग ट्रैजेक्टोरीज एंड इमर्जिंग चैलेंजेज। डिस्कसन पेपर नं. (परिचर्चा पत्र) 31, नेशनल रिसर्च प्रोग्राम फॉर प्लांटेशन डिवेलपमेंट (एनआरपीपीडी/राष्ट्रीय रोपण विकास शोध), सेंटर फॉर डिवेलपमेंट स्टडीज (विकास शोध केंद्र), त्रिवेंद्रम।

सेन, आर (2014), रेसिस्टैंस, रिफॉर्म्स एंड री–क्रिएशन : मैपिंग वीमेंस एक्टिविटीज इन इंडिया। एल. फर्नांडीज (संपा.), हैंडबुक ऑफ जेंडर इन साउथ एशिया (पीपी. 333–346)। न्यू यॉर्क : रटलेज।

शर्मा, एस (2014), सेक्सुअलिटी और सांप्रदायिकता : एक पुनर्रचना, (समीक्षा प्रतिमान में प्रकाशित, सीएसडीएस हेतु वाणी प्रकाशन), दिल्ली, जनवरी–जून अंक, पीपी. 357–362।

सिंह, एके एवं कर्मेषु (2014), पॉवर लॉ बिहेवियर ऑफ क्यू साइज : मैक्सिमम एंट्रॉपी प्रिंसिपल विद शिफ्टेड जियॉमिट्रिक मीन कंस्ट्रेंट। आइईईई कम्यूनिकेशन लेटर्स, 18 (8), 1335–1338।

सिंह, एके, एचपी सिंह एवं कर्मेषु (2015), एनैलिसिस ऑफ फाइनाइट बफर क्यू : मैक्सिमम एंट्रॉपी प्रोबैबिलिटी डिस्ट्रिब्यूशन विद शिफ्टेड फ्रैक्शनल जियॉमेट्रिक एंड एरिथमैटिक मीन्स। आईईईई कम्यूनिकेशन लेटर्स, 19 (2), 163–166।

वेंकटरमण, जी (2014), फोर बर्ड फोटोग्राफ्स (16(एल), 26(एल), 41(एल), 64(आर))। लैप ऑफ नेचर : लेट अस सी लेट अस फाइंड। शामुंगाउ, मणिपुर : लोकतक विकास प्राधिकरण।

सामुदायिक शिक्षा केंद्र

चक्रवर्ती, डीएन (2014), वीविंग मटीरियल कल्चर : एन एक्ट ऑफ आइडेंटिटी कन्स्ट्रक्शन। धरित्री नर्जरी चक्रवर्त्ती एवं सुरजीत सरकार (संपा.), ऑब्जेक्ट्स : आइडेंटिटीज : मीनिंग : इनसाइडर्स' पर्स्पेक्टिव, एयूडी प्रकाशन।

———, चक्रवर्त्ती, डीएन (2014), अंडरस्टैंडिंग दि हिस्टॉरिकल डाइनामिक्स ऑफ नॉर्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी (एनईएफए/नेफा) ऑफ ब्रिटिश इंडिया। आईआईएस, शिमला (अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन कार्यवाही प्रकाशन)।

सरकार, एस एवं पी राय (2015), कंटिन्यूइंग ट्रेडिशंस (लेस ट्रेडिशंस पर्पिटुएलेस)। अहमदाबाद : मापिन प्रकाशन।

सरकार, एस एवं शर्मा (2104), इनिशिएटिव्ज विद कम्यूनिटी नॉलेज सिस्टम्स इन ए सोशल साइंस यूनिवर्सिटी। सी. अल्वारेस (संपा.), मल्टिकल्चरल नॉलेज एंड दि यूनिवर्सिटी (पीपी. 259–267)। गोवा, इंडिया एंड पेनांग, मलेशिया : मल्टिवर्सिटी एंड सिटिजेंस इंटरनेशनल।

विकास प्रणाली (अभ्यास) केंद्र

अख्तर, जे (2014), कन्वर्जन ऑफ दि फॉरेस्ट विलेज इनटु दि रेवेन्यू विलेज : एक केस ऑफ गजकन्हार, नगरी, धमतरी डिस्ट्रिक्ट (सीजी)। क्रॉनिक्लर, 2 (6)।

आरम्भिक बाल शिक्षा एवं विकास केंद्र

कौल, वी, एबी चौधरी एवं एस शर्मा (2014), क्वॉलिटी एंड डाइवर्सिटी इन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन। ए व्यू फ्रॉम आंध्र प्रदेश, असम एंड राजस्थान (आंध्र प्रदेश, असम एवं राजस्थान का एक पर्यवलोकन) (पृ. 139)। दिल्ली : आरम्भिक बाल शिक्षा एवं विकास केंद्र (सीईसीईडी)।

मनोचिकित्सा एवं नैदानिक शोध केंद्र

पइवा, एनडी (2014) हू ऑब्जर्व्स हू? इन्फैंट ऑब्जर्वेशन ऑब्जर्व्ड : एन एक्सपीरिएंस ऑफ सेटिंग अप एन इन्फैंट ऑब्जर्वेशन स्किल्स ट्रेनिंग इन इंडिया। इन्फैंट ऑब्जर्वेशन : इंटरनेशन जर्नल ऑफ इन्फैंट ऑब्जर्वेशन एंड इट्स एप्लिकेशंस, 17 (1), 5–19।

पइवा, एनडी एवं यू अग्रवाल (2014) दि अनकंफर्टेबल सब्जेक्ट : ऑब्जवर्विंग दि इंडियन गर्ल चाइल्ड। इन्फैंट ऑब्जर्वेशन : इंटरनेशन जर्नल ऑफ इन्फैंट ऑब्जर्वेशन एंड इट्स एप्लिकेशंस, 17 (2) 151—166।

30.09.2014 को कार्यक्रम–वार छात्रों का वितरण

कार्यक्रम	छात्रों की कुल संख्या	पुरुष	महिला	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जन जाति	अन्य पिछड़ा वर्ग	शारीरिक रूप से निःशक्त	सैनिक / सीडब्ल्यू एपी	विदेशी छात्र	सामान्य
स्नातक अध्ययनशाला										
बीए अर्थशास्त्र	105	38	67	09	01	17	–	–	01	77
बीए अंग्रेजी	114	80	34	15	05	20	–	–	01	73
बीए इतिहास	93	30	63	16	02	17	01	–	–	57
बीए गणित	69	23	46	04	–	08	–	–	–	57
बीए मनोविज्ञान	90	48	42	11	03	11	01	–	–	64
बीए समाज विज्ञान एवं मानविकी	94	44	50	09	–	14	01	–	05	65
बीए समाजशास्त्र	85	41	44	11	02	16	–	–	–	56
कुल (बीए)	**650**	**304**	**346**	**75**	**13**	**103**	**03**	**–**	**07**	**449**
व्यवसाय, लोक नीति एवं सामाजिक उद्यमिता अध्ययनशाला										
एमए व्यवसाय प्रशासन	74	41	33	15	02	19	01	–	–	37
एमए सामाजिक उद्यमिता	04	03	01	–	–	–	01	–	–	03
पीजी डिप्लोमा प्रकाशन	04	03	01	–	–	–	–	–	–	04
संस्कृति एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययनशाला										
एमए फिल्म अध्ययन	20	07	13	03	–	06	–	–	–	11
एमए साहित्य कला	14	10	04	01	01	–	–	–	–	12
एमए निष्पादन (नाट्य) अध्ययन	21	10	11	01	–	01	–	–	–	19
एमए दृश्य कला	18	11	07	01	–	–	–	–	–	17
अभिकल्प (डिज़ाइन) अध्ययनशाला										
एमए सामाजिक अभिकल्प (डिज़ाइन)	22	20	02	–	02	01	–	–	–	19
विकास अध्ययनशाला										
एमए विकास अध्ययन	92	63	29	07	10	19	–	–	–	56
शैक्षिक अध्ययनशाला										
एमए शिक्षण शास्त्र	45	40	05	06	06	03	–	–	–	30
एमए आरम्भिक बाल शिक्षा	21	20	01	–	02	–	–	–	–	19
पीजी डिप्लोमा, आरम्भिक शिशु देखभाल एवं शिक्षण शास्त्र	01	01	00	–	–	–	–	–	–	01

कार्यक्रम	छात्रों की कुल संख्या	पुरुष	महिला	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जन जाति	अन्य पिछड़ा वर्ग	शारीरिक रूप से निःशक्त	सैनिक/ सीडब्ल्यू एपी	विदेशी छात्र	सामान्य
मानव पारिस्थितिकी अध्ययनशाला										
एम पर्यावरण एवं विकास	59	43	16	06	08	11	–	–	–	34
मानव अध्ययनशाला										
एमए जेंडर अध्ययन	61	60	01	01	07	05	–	–	–	48
एमए मनोविज्ञान	90	80	10	05	10	12	–	–	01	62
ललित अध्ययनशाला										
एमए अर्थशास्त्र	74	46	28	09	04	20	–	–	–	41
एमए अंग्रेजी	88	69	19	11	09	24	–	–	–	44
एमए इतिहास	80	55	25	05	16	06	–	–	–	53
एमए समाज शास्त्र	97	81	16	05	24	11	01	–	–	56
कुल (एमए)	**885**	**663**	**222**	**76**	**101**	**138**	**03**		**01**	**566**
एम फिल										
विकास प्रणाली	60	34	26	06	09	04	–	–	01	40
हिंदी	08	04	04	02	–	01	–	–	–	05
इतिहास	20	11	09	02	01	03	–	–	–	14
मनोचिकित्सा एवं निदानात्मक विचार	11	09	02	01	–	–	–	–	–	10
महिला एवं जेंडर अध्ययन	36	34	02	04	04	06	–	–	–	22
कुल (एम फिल)	**135**	**92**	**43**	**15**	**14**	**14**	**–**	**–**	**01**	**91**
पीएच.डी.										
विकास अध्ययन	09	04	05	02	01	01	–	–	–	05
पर्यावरण एवं विकास	08	03	05	01	–	–	–	–	–	07
फिल्म अध्ययन	02	01	01	–	–	–	–	–	–	02
हिंदी	12	08	04	03	–	02	–	–	–	07
इतिहास	05	03	02	–	–	–	–	–	–	05
साहित्य कला	02	01	01	01	–	–	–	–	–	01
मनोविज्ञान	13	09	04	02	01	02	–	–	–	08
दृश्य कला	03	01	02	–	–	01	–	–	–	02
महिला एवं जेंडर अध्ययन	03	02	01	–	–	01	–	–	–	02
कुल (पीएच.डी.)	**57**	**32**	**25**	**09**	**02**	**07**	**–**	**–**	**–**	**39**

कार्यक्रम	छात्रों की कुल संख्या	पुरुष	महिला	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जन जाति	अन्य पिछड़ा वर्ग	शारीरिक रूप से निःशक्त	सैनिक/ सीडब्ल्यू एपी	विदेशी छात्र	सामान्य
30.09.2014 को छात्रों की कुल संख्या										
बीए	650	304	346	75	13	103	03	.	07	449
एमए	885	663	222	76	101	138	03	.	01	566
एम फिल	135	92	43	15	14	14	.	.	01	91
पीएच.डी.	57	32	25	09	02	07	.	.	.	39
महा योग	**1727**	**1091**	**636**	**175**	**130**	**262**	**06**	**–**	**09**	**1145**

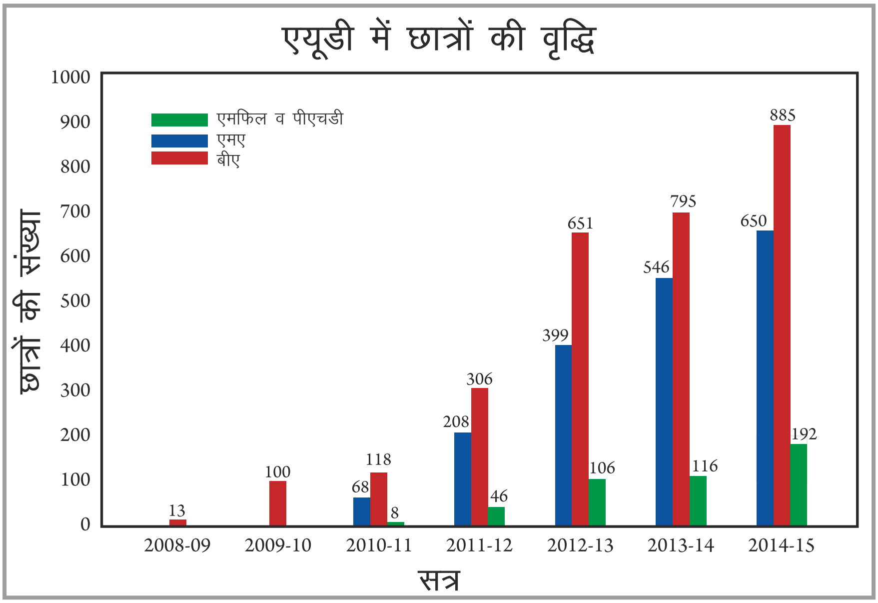

पुस्तकालय

एयूडी का अपना एक आधुनिक एवं सुसज्जित पुस्तकालय है। यह विश्वविद्यालय की सभी शैक्षिक गतिविधियों का केंद्र है। अध्ययन कक्ष एवं पुस्तक क्षेत्र वातानुकूलित हैं। पुस्तकालय की ज्यादातर कार्य प्रणालियाँ कंप्यूटरीकृत हैं और शेष कार्यप्रणालियों का कंप्यूटरीकरण किया जा रहा है। पुस्तकालय राष्ट्रीय छुट्टियों को छोड़कर पूरे वर्ष सुबह 8 बजे से शाम 8 बजे तक खुला रहता है।

पुस्तकालय समिति में अलग–अलग विधाओं के 33 सदस्य हैं। प्रोफेसर गीता वेंकटरमण समिति की अध्यक्ष हैं। एयूडी पुस्तकालय के सहायक पुस्तकाध्यक्ष के दो नियमित पदों के लिए चयन किया गया है।

पाठक सेवाएँ

पूरे वर्ष अनुमानतः 1900 छात्र, प्राध्यापक वर्ग के सदस्य, विद्वान एवं विश्वविद्यालय के कर्मचारी पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।

संसाधन वितरण

एयूडी का पुस्तकालय डिवेलपिंग लाइब्रेरी नेटवर्क (डेलनेट), इन्फॉर्मेशन एंड लाइब्रेरी नेटवर्क सेंटर (आईएनएफएलआईबीएनईटी/सूचना एवं पुस्तकालय तंत्र केंद्र) का सदस्य है। पुस्तकालय सदस्यों को अंतर–पुस्तकालय ऋण सेवाएँ भी प्रदान करता है।

पुस्तकालय के संसाधन

पुस्तकालय ने 5175 पुस्तकें प्राप्त कीं। समीक्षाधीन वर्ष के अंत में पुस्तकालय में पुस्तकों की कुल संख्या 32,922 थी जिनमें 3582 पुस्तकें दान स्वरूप मिली थीं। पुस्तकालय का कुल व्यय 28,295014 रुपये रहा, जिसमें 15,686,814 रुपये की पुस्तकें

खरीदी गईं, प्रिंट व ऑनलाइन पत्र–पत्रिकाओं के चंदे तथा पुनर्नवीकरण पर 12,741,837 रुपये का खर्च आया।

एयूडी पुस्तकालय ने यूजीसी इन्फोनेट डिजिटल लाइब्रेरी कंसोर्टियम और 72 प्रिंट पत्रिकाओं (43 नई और 29 नवीकृत) और 55 ऑनलाइन व्यक्तिगत पुस्तकों (16 नवीकृत और 39 नई) समेत अग्रणी प्रकाशकों (20,000 से अधिक जर्नल) के 23 आँकड़ा कोषों के वार्षिक मूल्य का नवीकरण किया है। इसने 41 ई–पुस्तकें प्राप्त की हैं। पुस्तकालय हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं की नौ अग्रणी पत्रिकाएँ खरीद रहा है।

पुस्तकालय सेवाएँ

पुस्तकालय निम्नलिखित सेवाएँ प्रदान करता है :

1. निर्गत व वापसी, संदर्भ सेवा एवं अंतर–पुस्तकालय ऋण।
2. निजीकृत (व्यक्तिगत) सूचना सेवा, नई सूचना पर प्राध्यापक वर्ग के सदस्यों को ई–मेल ध्यानाकर्षण (ई–मेल एलट्र्स) आदि।
3. ई–संसाधनों की इंटरनेट सुविधा, आलेख डाउनलोड करना, ई–आलेखों के एटैचमेंट भेजना आदि।
4. ओपीएसी एवं वेब ओपीएसी।
5. उपयोगकर्ता अभिमुखीकरण कार्यक्रम।

कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

1. अलका राय ने जामिया मिलिया इस्लामिया में 10 फरवरी 2015 से 3 मार्च 2015 तक आयोजित तीन सप्ताह के एक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भाग लिया। उन्होंने जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में पीएचडी पाठ्यक्रम नामांकन कराया।
2. देबल सी कार ने ट्रांस्फॉर्मिंग डायमेंसंस ऑफ आइपीआर : चैलेंजेज फॉर दि न्यू एज लाइब्रेरीज पर चौथे पुस्तकालय एवं सूचना अध्यवसायी सम्मेलन–2015 (एलआइपीएस–2015) में भाग लिया और राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, दिल्ली में

23–24 जनवरी 2015 को आयोजित इंटरनेट एंड चैलेंजेज फॉर इंटेलेक्टुअल प्रॉपर्टी राइट के तीसरे तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की।

3. दिनेश कुमार कौशिक ने लाइब्रेरी ऑटोमेशन यूजिंग ओपेन सोर्स आइएलएमएस केओएचए पर 6 से 8 नवंबर 2014 तक पेट्रोलियम एवं ऊर्जा अध्ययन विश्वविद्यालय, देहरादून द्वारा आयोजित एक तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

4 मंजू ने 02 से 06 फरवरी 2015 तक एनआइएससीएआइआर, नई दिल्ली द्वारा आयोजित एक पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम डिजाइन एंड डिवेलपमेंट ऑफ डिजिटल लाइब्रेरीज यूजिंग डीस्पेस–एडवांस में भाग लिया।

सूचना एवं तकनीकी सेवा विभाग

सूचना एवं तकनीकी सेवा विभाग विश्वविद्यालय की सूचना तनीकी से जुड़ी सभी गतिविधियों की रीढ़ है। यह 500 उच्च कोटि के कंप्यूटरों के साथ शिक्षकों, कर्मचारियों और छात्रों की शैक्षिक एवं शोध आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए उन्हें कंप्यूटर से जुड़ी सहज सुलभ एवं उत्कृष्ट सुविधाएँ मुहैया कराता है। यह विश्वविद्यालय का मुख्य कंप्यूटिंग केंद्र है और उसकी सूचना तकनीकी आधारभूत संरचना और सेवाओं का प्रबंध करता है। शिक्षकों और छात्रों के लिए ऑन–कैंपस इंटरनेट और ऑफ–कैंपस वीपीएन ऐक्सेस दोनों दिन–रात उपलब्ध हैं। 1 जीबीपीएस की कनेक्टिविटी के साथ एयूडी एनकेएन प्रणाली में शामिल है। विश्वविद्यालय में निरंतर इंटरनेट सुविधा के लिए ईआरनेट इंडिया के माध्यम से, बैकअप के रूप में 20 एमबीपीएस की व्यवस्था भी है।

तय योजना अनुसार, उन क्षेत्रों को शामिल करने हेतु जहाँ पहले वाई–फाई कनेक्टिविटी की सुविधा नहीं थी, वाई–फाई के 15 नए रूटर्स लगाए गए हैं। एससीसीई में सिनेमेटिक आर्ट स्टूडियो के लिए उच्च गति का सर्वर और उच्च ग्राफिक्स के मल्टीमीडिया कंप्यूटर, एसडिज और सीसीके में एपल लैब की स्थापना भी की गई है। इंटरनेट पर ज्ञान के शक्तिशाली और उत्कृष्ट अनुभवों के लिए एक शिक्षा प्रबंधन प्रणाली मूडल लागू की जा रही है।

सूचना एवं तकनीकी सेवा विभाग ने निम्नलिखित तकनीकियों की सहायता की है :

- डाइरेक्टरी–बेस्ड ऑथेंटिकेशन (निर्देशिका आधारित प्रमाणन)
- मेल, मेसेजिंग एवं सहयोजन (शिक्षकों/कर्मचारियों/छात्रों के लिए क्लाउड आधारित)।
- वेब कंटेंट फिल्टरिंग एवं केशिंग 96 एयूडी स्व–अध्ययन रिपोर्ट, 2014 – खंड 1
- गेटवे सुरक्षा (प्रवेश सुरक्षा) एवं स्पैम–रोधी तथा एंडपॉइंट एंटरप्राइज एंटिवाइरस।
- ऐप्लिकेशन सर्वर्स ऑल लाइनक्स एवं विंडोज
- लाइब्रेरी मैनेजमेंट सर्विसेज (पुस्तकालय प्रबंधन सेवाएँ) एवं ऑनलाइन वेब सूची
- शिक्षकों, विद्यालयों और प्रशासन व वित्त विभागों के लिए केंद्रीकृत बैकअप हेतु एनएएस (नेटवर्क एटैच्ड स्टोरेज)
- डेटाबेस सर्विसेज (डेटाबेस सेवाएँ), आइपी सर्विलैंस, बैकअप एवं डेटा रिपॉजिटरी (आँकड़ा भंडार), तथा नेटवर्क सुरक्षा
- मुख्य प्रबंधन सेवाएँ; एवं डीएनएस; डीएचसीपी व आरएडीआइयूएस प्रोटोकोल
- फॉल्ट टॉलरेंस एवं लोड बैलेंसिंग समेत वाई–फाई कैंपस ऑन 802.11 एन
- ओपन सोर्स लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टेम (मूडल) एवं क्लाउड आधारित ईआरपी प्रणाली

वर्चुअलाइज्ड, क्लाउड प्लैटफॉर्म पर समस्त विश्वविद्यालय में कुछ उपकरण काम कर रहे हैं।

प्रस्तावित नई तकनीकियाँ इस प्रकार हैं :

- क्लाउड आधारित सेवाएँ जिनमें छात्रों और कर्मचारियों को कस्टोमाइजेबल, कनफिगुरेबल कंप्यूटिंग संसाधनों का विशाल ऊर्ध्वमुखी भंडार मुहैया कराया जाता है।
- संबद्ध उपयोगकर्ताओं के लिए बैंडविड्थ उपलब्ध सुनिश्चित कराने हेतु उन्नत बैंडविड्थ प्रबंधन।
- रिनंडैंट यूनीफाइड थ्रेट मैनेजमेंट डिवाइस एवं फायरवॉल (अतिरिक्त एकीकृत संकट प्रबंधन उपकरण व फायरवॉल)

- नेटवर्क ऐक्सेस प्रोटेक्शन (नेटवर्क सुविधा सुरक्षा) जो एंडपॉइंट को नेटवर्क में शामिल होने देने से पहले ओएस लिगैलिटी एवं पैच स्तरों की जाँच करता है।
- ऑब्जेक्ट ऐक्सेस एवं इंटरनेट ऐक्सेस का उन्नत लेखा परीक्षण (वस्तु सुविधा एवं इंटरनेट सुविधा की उन्नत लेखा परीक्षा)।

सॉफ्टवेअर

सूचना एवं तकनीकी प्रयोगशाला मैथेमैटिका, एआरसी व्यू, जीआइएस एडोब मास्टर कलेक्शन सीएस6, एटलस टीआइ, एसपीएसएस 20.0 वर्जन, एसपीएसएस एमोस, स्टाटा, ईव्यूज सॉफ्टवेअर, ऑटोडेस्क लाइसेंस, माइक्रोसॉफ्ट विंडोज ऑफिस स्यूइट फॉर मैक, एडोब क्रिएशन स्यूइट 6 मास्टर कलेक्शन, एडोब डिजाइन सीएस6 एवं ओपेन सोर्स एलएमएस – मूडल जैसी सॉफ्टवेअर सुविधाओं से सज्जित है।

क्रय

वित्त वर्ष 2014–2015 के दौरान खरीदे गए उपकरणों (1,00,000 रुपये से अधिक का आर्डर) की सूची नीचे प्रस्तुत है :

क्र. सं.	उपकरण	राशि
1	आइटी हार्डवेअर एवं नेटवर्किंग	4,98,147
2	एचपी लेजरजेट प्रो 500, केनन पिक्समा एपीसी बैकयूपीएस, मिनी डिस्प्ले एडैप्टर	1,56,900
3	मैजिक माउस, आइएसी 27' क्वैड कोर आइ4–3.4 जीएजेड	3,92,200
4	सोनी एलईडी केडीएल – 50 डब्ल्यू 800बी	99,800
5	सोनी कैमरोडर, केनन कैमेरा केवल बॉडी लेंस	4,15,185
6	एमएमपीआइ, वारवेना एसपीएम भारतीय मानकों के साथ वीआइएससी इंडिया कंप्लीट, एंप्लिफायर, स्पीकर, कनेक्टर	3,76,048
7	सीयूयूडीई बैक अटैक आइआर कैमरा विथ इंडियन विथ ऑल स्टैंड	1,11,000
8	सोनी कैमरा बैटरी मेमॉरी कार्ड लाइट किट	10,22,940
9	हिताचियू मल्टीमीडिया प्रोजेक्टर	1,10,813
10	वाइब्रेटिंग वायर पीजोमीटर केबल डिजिटल रीड आउट यूनिट	74,771
11	मृदा एवं जल जाँच उपकरण	2,43,000
12	बिस्तर, स्टडी चेयर एवं टेबल	3,27,020
13	लॉकर स्टोरेज कैबिनेट, ऑफिस चेयर, सॉफ्ट बोर्ड, ह्वाइट राइटिंग बोर्ड, मल्टी युटिलिटी टेबल	5,07,505
14	कार्यशाला, पुस्तकालय, छात्रावास, निदानगृह आदि हेतु कुर्सी–टेबल	4,99,126
	कुल	**48,34,455**

भू–संपत्ति विभाग

आधारभूत संरचना का विस्तृत विवरण

कक्ष (प्रशासन)	27	
कक्ष (प्राध्यापक)	47	
कक्षा	35	
बृहत कक्षा	2	
समिति कक्ष	3	
अनुवर्ग (ट्यूटोरियल्स)	5	
संगोष्ठी कक्ष	1	
रसोई–भंडार	3	
प्रयोगशालाएँ	4	
पारिस्थितिक प्रयोगशाला	1	
कार्यशालाएँ	4	
स्टूडियो	2	
छात्र मनोरंजन कक्ष	1	
कैंटीन	1	
फोटोकॉपी दुकान	2	
औषधालय	1	
निदान गृह – एहसास	5	
सुरक्षा कक्ष	1	
साफ–सफाई कक्ष	2	
चालक कक्ष	2	
उद्यान कक्ष	1	
कन्या छात्रावास	22	कक्ष (बिस्तर : 45)

औषधालय

विश्वविद्यालय औषधालय प्रशासन–भवन, कक्षाओं, कार्यशालाओं और छात्रावास के निकट स्थित है। यह औषधालय प्राथमिक चिकित्सा और सामान्य चिकित्सकीय उपचार के लिए सभी बुनियादी सुविधाओं से सुसज्जित है।

रखरखाव

भवनों, सड़कों, लॉनों, बिजली उपकरण, जल आपूर्ति, टेलीफोन, जेनरेटर आदि समेत सभी भौतिक सुविधाओं का रखरखाव लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) और अन्य विभिन्न सरकारी एवं निजी संस्थाओं की सहायता से भू–संपत्ति विभाग करता है। बाहरी संस्थाओं की सहायता से यह विभाग सुरक्षा, साफ–सफाई, कैंटीन सेवाओं, ढुलाई का प्रबंध भी करता है।

कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

भू–संपत्ति विभाग द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ नीचे की सूची में प्रस्तुत हैं।

- अंबेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली शीर्षक से एक एंड्रॉयड एप्लीकेशन का विकास।
- मासिक परिपत्र संसाधन का आरंभ।
- मच्छर–मुक्त परिसर हेतु धूमन।
- वृक्षारोपण एवं साफ–सफाई अभियान (12 अगस्त 2014)।
- रक्तदान शिविर (14 अगस्त 2014)।
- कर्मचारियों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता (14 अगस्त 2014)।
- गाँधी जयंती समारोह (2 अक्टूबर 2014)।
- दमदमा झील पर विहार (6 सितंबर 2014)।
- सरदार पटेल जन्म दिवस (राष्ट्रीय एकता दिवस) समारोह (31 अक्टूबर 2014)।
- स्वच्छता अभियान (25 सितंबर 2014–31 अक्टूबर 2014)
- स्वच्छ भारत अभियान के दौरान प्रोफेसर सलिल मिश्रा का व्याख्यान (30 अक्टूबर 2014)।
- सफाई अभियान : लोथियन मार्ग पर (12 मार्च 2015) और केला घाट मार्ग पर (16 मार्च 2015)।

परिशिष्ट 1 समिति सूची

कार्य समूह

विश्वविद्यालय के विभिन्न सांस्थानिक कार्यकलापों के संचालन हेतु विनियमों, जैसे शैक्षिक विनियम, वित्तीय विनियम और सेवा विनियम, के गठन के लिए निम्नलिखित कार्य समूहों का गठन किया गया है।

प्रोफेसर चंदन मुखर्जी	अध्यक्ष
प्रोफेसर एआर खान, आइजीएनओयू	
श्री सीआर पिल्लै	
वित्त नियंत्रक, एयूडी	
प्रोफेसर कुरियाकोस मामकूट्टम	
कुल सचिव, एयूडी	

वेबसाइट कार्यबल (टीडब्ल्यूएफ)

श्री सुरजीत सरकार, सीसीके	अध्यक्ष
श्री बेनिल बिश्वास, एसीसीई	सदस्य
श्री अबीर गुप्ता, एसडीईएस	सदस्य
श्री आशीष रॉय, एसएचएस	सदस्य
सुश्री सुनीता त्यागी, सहायक कुलसचिव	सदस्य
श्री दीपक बिशला, कनिष्ठ सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटर	सदस्य
सुश्री सर्मिष्ठा रॉय, उप कुलसचिव	समन्वयक

जेंडर सरोकार समिति

प्रोफेसर विनीता कौल, एसईएस	अध्यक्ष
डॉ रचना चौधरी, एसएचएस	
डॉ ममता करोलिल, एवएचएस	
डॉ शुभ्रा नगालिया, एसएचएस	
सुश्री संजू थॉमस, एसयूएस/एसएलएस	

परिसर विकास संचालन समिति

कुलपति	अध्यक्ष
प्रति कुलपति	सदस्य
संकायाध्यक्ष, योजना	सदस्य
डीन, डिज़ाइन अध्ययनशाला	सदस्य
प्रोफेसर सीआर बाबू	सदस्य
श्री संतोष ऑलक	सदस्य
कुल सचिव	सदस्य
वित्त नियंत्रक	सदस्य
निदेशक (योजना एवं प्रशासन) परिसर विकास	सदस्य

परिसर विकास सलाहकार समिति

कुलपति	अध्यक्ष
प्रति कुलपति	सदस्य
सचिव (उच्चतर शिक्षा), राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र नई दिल्ली	सदस्य
किसी एक अध्ययनशाला के डीन (कुलपति द्वारा नामित)	सदस्य
डीन, योजना विभाग	सदस्य
कुल सचिव	सदस्य
वित्त नियंत्रक	सदस्य
प्रबंधन बोर्ड में सरकार द्वारा नामित कोई एक	सदस्य

कोई पूर्व मुख्य सचिव, टीएच, यूएलएचवीएचएमएच या भारत सरकार का पूर्व सचिव अथवा समकक्ष	सदस्य
प्रोफेसर सीआर बाबू, पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी–विज्ञान के विशिष्ट प्रोफेसर	सदस्य
श्री अशोक कुमार निगम, पूर्व उप अध्यक्ष, डीडीए	सदस्य
प्रोफेसर के टी रवींद्रन, पूर्व अध्यक्ष, शहरी कला आयोग	सदस्य
श्री वी सुरेश, पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एचयूडीसीओ	सदस्य
निदेशक (योजना एवं प्रशासन) परिसर विकास	सदस्य

स्थायी स्थानीय क्रय समिति

श्री सत पाल, सहायक कुल सचिव (मानव संसाधन विभाग)	सदस्य
श्री हर्ष कपूर, सहायक कुल सचिव (एसयूएस/एसएलएस)	सदस्य
श्री हरीश गुरनानी, सहायक कुल सचिव (वित्त)	सदस्य

क्रीड़ा समिति

डॉ धरित्री नर्जरी, एसयूएस/एसएलएस	समन्वयक
डॉ कार्तिक दवे, एसबीपीपीएसई	सदस्य
डॉ पुलक दास, एसएचई	सदस्य
डॉ अनिल परसौद, एसयूएस/एसएलएस	सदस्य
श्री अमित सिंह, एसयूएस/एसएलएस	सदस्य
श्री आशीष पाटिदार, सहायक कुल सचिव (वित्त)	सदस्य

कार्यकलाप सलाहकार समिति

प्रोफेसर जतिन भट्ट, कुल सचिव (कार्यवाहक)	अध्यक्ष
प्रोफेसर विजया एस वर्मा, निदेशक, परिसर विकास	विशिश्ट आमंत्रित
प्रोफेसर जतिन भट्ट, एसडीईएस	विशिश्ट आमंत्रित
श्री राजन कृष्णन, एससीसीई	विशिश्ट आमंत्रित

श्री संतोष ऑलक, सलाहकार, वास्तुकार	सदस्य
श्री एसके शर्मा, एई, विद्युत, पीडब्ल्यूडी	सदस्य
श्री वीके गुप्ता, एई, असैनिक, पीडब्ल्यूडी	सदस्य
श्री योगेश कुमार, जेई, विद्युत, पीडब्ल्यूडी	सदस्य
सुश्री यूके धन्य, जेई, सिविल, पीडब्ल्यूडी	सदस्य
श्री पी मणि, वरिष्ठ सलाहकार	सदस्य
श्री युधिष्ठिर, जेई, विद्युत, एयूडी	सदस्य

तुल्यता (समता) समिति

प्रति कुलपति	अध्यक्ष
डीन, छात्र सेवाएँ	सदस्य
डीन, ललित अध्ययनशाला	सदस्य
डॉ सत्यकेतु सांकृत, सहयोगी प्रोफेसर, एसयूएस/एसएलएस	सदस्य
डॉ प्रवीण सिंह, सहायक प्रोफेसर, एसएचई	सदस्य

परिशिष्ट 2 एयूडी के वरिष्ठ पदाधिकारी

क्र.	पदाधिकारी का नाम	पद
1	प्रोफेसर श्याम बी मेनन	कुलपति
2	प्रोफेसर चंदन मुखर्जी	प्रति कुलपति एवं वित्त नियंत्रक (स्थानापन्न)
3	प्रोफेसर विजया एस वर्मा	सलाहकार योजना
4	प्रोफेसर जतिन भट्ट	कुल सचिव (स्थानापन्न)
5	प्रोफेसर सलिल मिश्र	संकायाध्यक्ष (डीन) शैक्षिक सेवाएँ
6	प्रोफेसर कुरियाकोस मामकूट्टम	संकायाध्यक्ष (डीन) छात्र सेवाएँ

परिशिष्ट 3 विश्वविद्यालय का प्राध्यापक वर्ग

क्र.	प्रोफेसर	विषय	विद्यालय
1	जतिन भट्ट	अभिकल्प (डिजाइन)	एसडिज
2	विनीता कौल	शिक्षा	एसईएस
3	डेनिस पी लेइटन	इतिहास	एसयूएस / एसएलएस
4	कुरियाकोस ममकूट्टम	प्रबंधन	एसबीपीपीएसई
5	सलिल मिश्र	इतिहास	एसएलएस
6	चंदन मुखर्जी	अर्थशास्त्र	एसयूएस / एसएलएस
7	अशोक नागपाल	मनोविज्ञान	एसएचएस
8	शिवाजी के पणिक्कर	दृश्य कला	एससीसीई
9	हनी ओबेरॉय वहली	मनोविज्ञान	एसएचएस
10	गीता वेंकटरमण	गणित	एसयूएस / एसएलएस

क्र.	सहयोगी प्रोफेसर	विषय	विद्यालय
1	सुचित्रा बालासुब्रह्मण्यम	अभिकल्प (डिजाइन)	एसडिज
2	सुमंगला दामोदरन	अर्थशास्त्र	एसडीएस
3	धीरेंद्र दत्त डंगवाल	इतिहास	एसयूएस / एसएलएस
4	चिरश्री दासगुप्ता	अर्थशास्त्र	एसयूएस / एसएलएस
5	कार्तिक दवे	प्रबंधन	एसबीपीपीएसई
6	अनूप कुमार धर	मनोवज्ञान	एसएचएस
7	मो. शरीक़ फारूक़ी	अभिकल्प (डिजाइन)	एसडिज
8	रचना जोहरी	मनोविज्ञान	एसएचएस
9	अस्मिता काबरा	अर्थशास्त्र, ई एवं डी *	एसएचई
10	सजीश कुमार	प्रकाशन	सीपी
11	सुब्रत कुमार मंडल	अर्थशास्त्र	एसडीएस
12	सुरजीत मजुमदार	अर्थशास्त्र	एसयूएस / एसएलएस

13	गोपालजी प्रधान	हिंदी	एसयूएस/एसएलएस
14	सत्यकेतु सांकृत	हिंदी	एसयूएस/एसएलएस
15	रुक्मिणी सेन	समाजशास्त्र	एसयूएस/एसएलएस
16	ग़ज़ाला शहाबुद्दीन	पारिस्थितिकी	एसएचई
17	दीपम शिव रमण	प्रदर्शन कला	एससीसीई
18	संजय कुमार शर्मा	इतिहास	एसयूएस/एसएलएस
19	डायामंड ओबेरॉय वहाली	अंग्रेजी	एसयूएस/एसएलएस
20	मिलिंद वाकंकर	साहित्य कला	एससीसीई

क्र.	विशिष्ट प्रोफेसर	विद्यालय
1	बाबू सीआर	एसएचई

क्र.	सहायक प्रोफेसर	विषय	विद्यालय
1	कँवल अनिल	प्रबंधन	एसबीपीपीएसई
2	गुंजीत अरोड़ा	अंग्रेजी	एसयूएस/एसएलएस
3	सुरेश बाबू	पारिस्थितिकी विज्ञान	एसएचई
4	अरिंदम बनर्जी	अर्थशास्त्र	एसयूएस/एसएलएस
5	तापोसिक बनर्जी	अर्थशास्त्र	एसएलएस
6	मीनाकेतन बेहरा	अर्थशास्त्र	एसयूएस/एसएलएस
7	ज्योतिर्मय भट्टाचार्य	अर्थशास्त्र	एसयूएस/एसएलएस
8	बेनिल विश्वास	साहित्य कला	एससीसीई
9	धरित्री चक्रवर्ती	इतिहास	एसयूएस/एसएलएस
10	रचना चौधरी	जेंडर अध्ययन	एसएचएस
11	सयनदेव चौधरी	अंग्रेजी	एसयूएस/एसएलएस
12	बिंदु के कोविलक्कम	जेंडर अध्ययन	एसएचएस
13	पुलक दास	पारिस्थितिकी विज्ञान	एसएचई

14	विधान चंद्र दास	समाजशास्त्र	एसयूएस/एसएलएस
15	ओइनम हेमलता देवी	मानव–विज्ञान, ई एवं डी*	एसएचई
16	थोकचॉम बीबीनाज देवी	मनोविज्ञान	एसएचएस
17	आइवी धर	राजनीति विज्ञान	एसडीएस
18	प्रणय गोस्वामी	गणित	एसयूएस/एसएलएस
19	अबीर गुप्ता	अभिकल्प (डिजाइन)	एसडिज
20	अंशु गुप्ता	प्रबंधन	एसबीपीपीएसई
21	मनीष जैन	शिक्षा	एसईएस
22	शेफाली जैन	दृश्य कला	एससीसीई
23	लोवितोली जिमो	जेंडर अध्ययन	एसएचएस
24	निधि कैकर	प्रबंधन	एसबीपीपीएसई
25	गंगमुमी कामी	मनोविज्ञान	एसएचएस
26	मौशुमी कंदली	दृश्य कला	एससीसीई
27	अपर्णा कपाड़िया	इतिहास	एसयूएस/एसएलएस
28	ममता करोल्लिल	मनोविज्ञान	एसएचएस
29	रमणीक खस्सा	गणित	एसयूएस/एसएलएस
30	तनुजा कोठियाल	इतिहास	एसयूएस/एसएलएस
31	राजन कृष्णन	फिल्म कला	एससीसीई
32	क्रांति कुमार	गणित	एसयूएस/एसएलएस
33	वेणुगोपाल मद्दिपति	अभिकल्प	एसडिज
34	प्रीति मान	मानव–विज्ञान	एसडीएस
35	अखा कैह्री माओ	शिक्षा	एसईएस
36	भूमिका मीलिंग	अंग्रेजी	एसयूएस/एसएलएस
37	शैलजा मेनन	इतिहास	एसयूएस/एसएलएस
38	उरफत अंजेम मीर	समाजशास्त्र	एसयूएस/एसएलएस
39	ऋक मित्रा	मनोविज्ञान	एसएचएस
40	अरुण कुमार मोंडिटोका	राजनीति विज्ञान	एसडीएस
41	ऊषा मुदिगंति	अंग्रेजी	एसयूएस/एसएलएस

42	तुहीना मुखर्जी	प्रबंधन	एसबीपीपीएसई
43	शुभ्रा नागलिया	जेंडर अध्ययन	एसएचएस
44	मानसी थपलियाल नवानी	शिक्षा	एसईएस
45	नंदिनी नायक	विकास अध्ययन	एसडीएस
46	रोहित नेगी	भूगोल, ई एवं जी *	एसएचई
47	धीरज कुमार नाइट	इतिहास	एसयूएस / एसएलएस
48	देवव्रत पाल	अर्थशास्त्र	एसयूएस / एसएलएस
49	अंशुमिता पांडेय	मनोविज्ञान	एसएचएस
50	बालचंद प्रजापति	गणित	एसयूएस / एसएलएस
51	अनिल परसौद	इतिहास	एसयूएस / एसएलएस
52	विनोद आर	मनोविज्ञान	एसएचएस
53	रिंजु रसैली	समाजशास्त्र	एसयूएस / एसएलएस
54	संतोष एस	दृश्य कला	एससीसीई
55	संतोष कुमार सिंह	समाजशास्त्र	एसयूएस / एसएलएस
56	दीप्ति सचदेव	मनोविज्ञान	एसएचएस
57	नीतू सरीन	मनोविज्ञान	एसएचएस
58	अनिर्वाण सेनगुप्ता	समाजशास्त्र	एसडीएस
59	गुंजन शर्मा	शिक्षा	एसईएस
60	प्रवीण सिंह	इहितास, ई एवं डी *	एसएचई
61	योगेश स्नेही	इतिहास	एसयूएस / एसएलएस
62	विक्रम सिंह ठाकुर	अंग्रेजी	एसयूएस / एसएलएस
63	संजू थॉमस	अंग्रेजी	एसयूएस / एसएलएस
64	कंचरला वैलेंटिना	प्रबंधन	एसबीपीपीएसई

क्र.	अस्थायी / अतिथि शिक्षक	विद्यालय
1	इमरान अमीन	एसएचएस
2	सैकत बनर्जी	एसयूएस / एसएलएस

3	देवव्रत बराल	एसयूएस/एसएलएस
4	आशीष कुमार दास	एसयूएस/एसएलएस
5	मोणिमालिका डे	एसईएस
6	शालिनी ग्रोवर	एसयूएस/एसएलएस
7	शिफा हक़	एसएचएस
8	सोइबम हरिप्रिया	एसएचएस
9	अनुराधा कपूर	एससीसीईई
10	शिव कुमार	एसयूएस/एसएलएस
11	वनोज्योत्सना लाहिरी	एसयूएस/एसएलएस
12	कृतिका माथुर	एसबीपीपीएसई
13	सरोज मलिक	एसयूएस/एसएलएस
14	रचना मेहरा	एसयूएस/एसएलएस
15	इशिता मेहरोत्रा	एसडीएस
16	शाद नावेद	एसएचएस
17	नंदन नॉन	एसयूएस/एसएलएस
18	नंदिनी नायक	एसडीएस
19	जोगी पंघाल	एसडिज
20	शांतनु डे रॉय	एसयूएस/एसलएस
21	विक्रमादित्य सहाय	एसएचएस
22	शरणिका सरकार	एसयूएस/एसएलएस
23	सुरजीत सरकार	सीसीके
24	अमित सिंह	एसयूएस/एसएलएस
25	अमित कुमार सिंह	एसयूएस/एसएलएस
26	सुनीता सिंह	सीईसीईडी
27	रवींद्र श्रीरामचंद्रन	एसयूएस/एसएलएस
28	विनीत ठाकुर	एसयूएस/एसएलएस
29	सामिया वासा	एसएचएस
30	स्वाति वेंकट	एसडिज

31	नेहा वाधवा	एसडीएस
32	गरिमा यादव	एसयूएस/एसएलएस

'पर्यावरण एवं विकास (ई एवं डी)

क्र.	शैक्षिक फेलो (शिक्षावृत्तिभोगी)	विद्यालय
1	अपराजिता भरगढ़	सीईसीईडी
2	कोपल चौबे	एसएचई
3	मोणिशिता हाजरा पांडे	एसयूएस
4	जूही ऋतुपर्णा	एसयूएस
5	आनंद सौरभ	एसएलएस
6	नूपुर सैम्युएल	एसयूएस

परिशिष्ट 4 शिक्षकेतर कर्मचारी

कुलपति कार्यालय

1	बोडापाटला मलेशा *	सहायक कुल सचिव
2	ममता असवाल	सहायक
3	रुद्रेश सिंह नेगी	कार्यालय परिचर
4	संदीप	कार्यालय परिचर

प्रति कुलपति कार्यालय

5	सर्मिष्ठा रॉय	उप कुल सचिव
6	सुनीता त्यागी	सहायक कुल सचिव

कुल सचिव कार्यालय

7	नीलिमा घिल्डियाल	सहायक (पीआर)

मानव संसाधन विभाग

8	सतपाल	सहायक कुल सचिव
9	महेश कुमार	सहायक
10	भूपेंद्र सिंह	सहायक
11	नीरू शर्मा	सहायक
12	तेजेश्वर सिंह	सहायक
13	सुशीला देवी	कार्यालय परिचर

प्रशासन

14	मनीष कुमार	उप कुल सचिव
15	नरेंद्र मिश्रा	सहायक कुल सचिव
16	एमआर कपूर	सलाहकार
17	सुभाष *	कनिष्ठ कार्यकारी
18	रीतिका कटरमल	सहायक
19	सौरभ	सहायक
20	नवीन कुमार	कार्यालय परिचर

परिसर विकास विभाग

21	एनके वर्मा	सह–निदेशक (तकनीकी)
22	पी मणि	सहायक कुल सचिव
23	के युधिष्ठिर	कनिष्ठ अभियंता
24	भूपेंद्र सिंह चौहान	सहायक

संपत्ति (भूसंपत्ति) विभाग

25	राजीव कुमार	सहायक कुल सचिव
26	सीता राम शर्मा	प्रभारी
27	यतींदर सिंह	प्रभारी
28	दीपक	इलेक्ट्रिशियन
29	मेवा लाल	इलेक्ट्रिशियन
30	दया चंद	उद्यान सर्वेक्षक
31	राज कुमार मौर्य	माली
32	रिजवान	माली
33	रंजीत भुइमाली	माली
34	फिदा हुसैन	माली
35	नरेश कुमार	माली

वित्त विभाग

36	अरुण कुमार अहूजा	उप कुल सचिव
37	आशीष पाटिदार	सहायक कुल सचिव
38	हरीश गुरनानी	सहायक कुल सचिव
39	अजय कुमार ठाकुर *	कनिष्ठ कार्यकारी
40	सना खान	कनिष्ठ कार्यकारी
41	मोहन सिंह यादव	कनिष्ठ कार्यकारी
42	प्रभात कुमार	कनिष्ठ कार्यकारी
43	ब्रजेश कुमार गुप्ता *	सहायक
44	मोहित जगोता	सहायक
45	अंजना कुमारी	सहायक
46	सुमन नेगी	सहायक
47	केशव ठाकुर	कार्यालय परिचर

सूचना तकनीकी विभाग

48	दीपक बिशला	कनिष्ठ सिस्टेम प्रशासक
49	मुकेश सिंह डाँगी	तकनीकी सहायक
50	रमीज काजमी	तकनीकी सहायक
51	मानस रंजन दकुआ	तकनीकी सहायक
52	शंभु शरण सिंह	तकनीकी सहायक
53	आशु मान	कार्यालय परिचर
54	अजय कुमार	कार्यालय परिचर
55	अजय सिंह डाँगी	कार्यालय परिचर

पुस्तकालय

56	देबल कार	पुस्तकाध्यक्ष
57	अलका राय	सहायक पुस्तकाध्यक्ष
58	दिनेश कुमार	सहायक पुस्तकाध्यक्ष
59	रविंदर रावत	व्यावसायिक सहायक
60	मंजू	व्यावसायिक सहायक
61	ओम प्रकाश मिश्रा	पुस्तकालय प्रशिक्षु
62	मीनाक्षी	पुस्तकालय प्रशिक्षु
63	संजय सिंह रावत	कार्यालय परिचर
64	नेक्सन	कार्यालय परिचर
65	पिंकी	कार्यालय परिचर

योजना विभाग

66	पुनीत गोयल	सहायक कुल सचिव
67	समीर खान	कनिष्ठ कार्यकारी
68	शिव चरण	कार्यालय परिचर

शैक्षिक सेवाएँ

69	पीके कटरमल	उप कुल सचिव
70	सीपी सिंह	सहायक कुल सचिव
71	यूसुफ रजा नक़वी	सहायक
72	अशोक कुमार–1	कार्यालय परिचर

छात्र सेवाएँ

73	बिंदु नायर	सहायक कुल सचिव
74	मनमोहन असवाल	सहायक
75	अरुणिमा शुक्ला	सहायक
76	नितिन चौधरी	सहायक
77	सुमित सोलंकी	कार्यालय सहायक

अध्ययनशाला एवं केंद्र

स्नातक अध्ययनशाला

78	हर्ष कपूर *	सहायक कुल सचिव
79	प्रियंका अलघ	कनिष्ठ कार्यकारी
80	आशा देवी डी	सहायक
81	संदीप कुमार–2	कार्यालय सहायक

ललित अध्ययनशाला

82	पूनम पेटवाल	सहायक
81	अशोक कुमार–2	कार्यालय परिचर

मानव अध्ययनशाला

82	संतोष थॉमस	कनिष्ठ कार्यकारी
83	मीनाक्षी सिंह जुगरान	सहायक
84	संदीप कुमार–1	कार्यालय परिचर

विकास अध्ययनशाला

85	संगीता	सहायक
86	शफ़ीक़ अहमद	कार्यालय परिचर

मानव पारिस्थितिकी अध्ययनशाला

87	राजकुमार	सहायक

व्यवसाय लोक नीति एवं सामाजिक उद्यमिता अध्ययनशाला

88	दीपक कुमार	सहायक
89	शिवम कौशिक	सहायक

संस्कृति एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययनशाला

90	रमणजीत कौर *	कनिष्ठ कार्यकारी

शैक्षणिक अध्ययनशाला

91	गीता चोपड़ा *	सहायक

डिजाइन अध्ययनशाला

92	निशांत मैस्सी	सहायक
93	रुद्र पाल	कार्यालय परिचर

आरम्भिक बाल शिक्षा और विकास केंद्र

94	अनिल सिंह रावत	सहायक

* (प्रतिनियुक्ति)

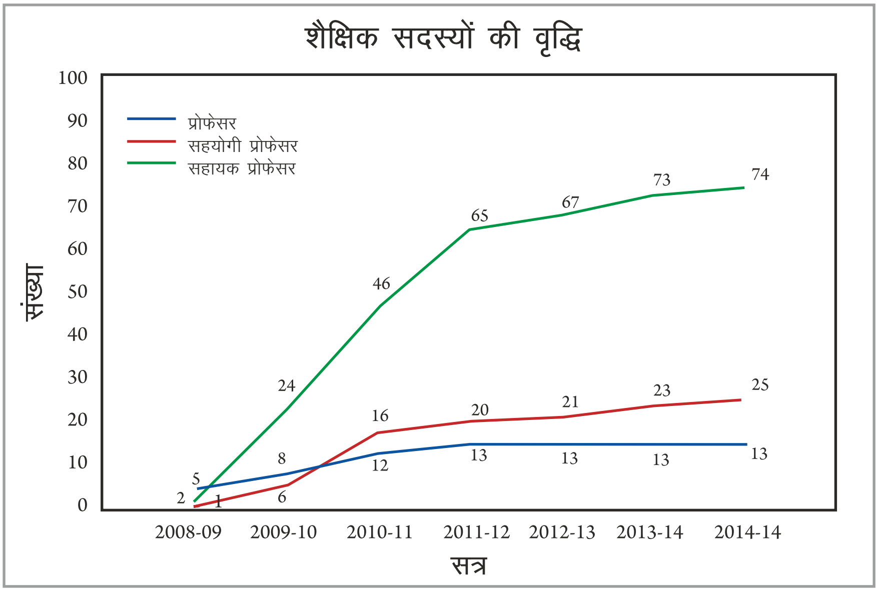

शैक्षिक सदस्यों की वृद्धि
100
90
80
70
60
50
40
30
20
10
0
संख्या
प्रोफेसर
सहयोगी प्रोफेसर
सहायक प्रोफेसर
2
1
24
46
65
67
73
74
5
8
12
13
13
13
13
6
16
20
21
23
25
2008-09
2009-10
2010-11
2011-12
2012-13
2013-14
2014-14
सत्र

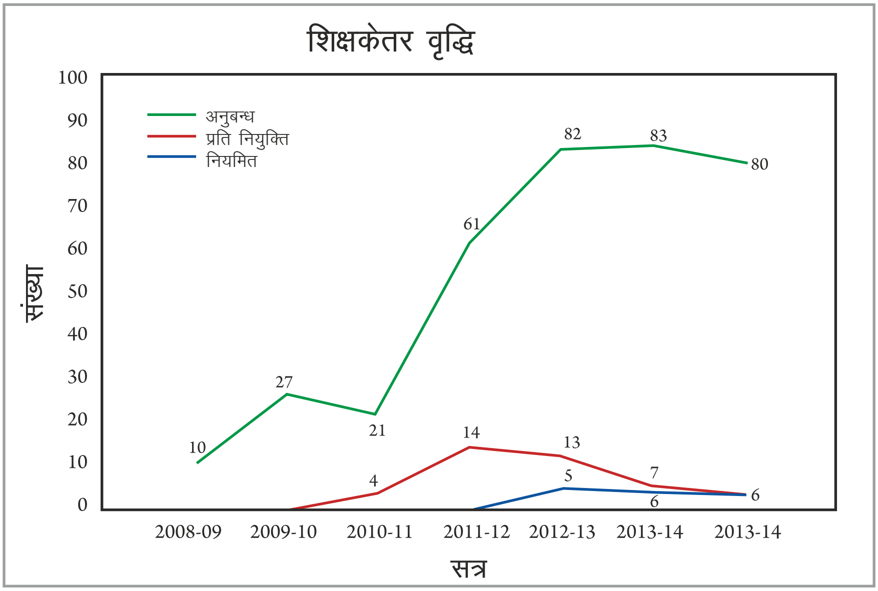

शिक्षकेतर वृद्धि
100
90
80
70
60
50
40
30
20
10
0
संख्या
अनुबन्ध
प्रति नियुक्ति
नियमित
10
27
21
61
82
83
80
4
14
13
7
6
5
6
2008-09
2009-10
2010-11
2011-12
2012-13
2013-14
2013-14
सत्र

परिशिष्ट 5 आय एवं व्यय खाता

आय	सूचीपत्र	चालू वर्ष	पिछला वर्ष (राशि रुपये)
आय मुक्त शुल्क	8	40,259,414	45,131,835
अनुदान – राज्य	9	388,566,090	250,000,000
अनुदान		–	28,000,000
– विश्वविद्यालय अनुदान			
आयोग विकास कोष *		–	493,768
निवेश से आय			
(निवेश पर आय। स्थायी/निर्धारित निधि से			
कोष को प्रेषित कोष *			
अन्य आय	10	4,545,245	5,520,113
ब्याज आय			
बचत बैंक खाता		2,736,301	2,246,013
एफडीआर		7,327,623	3,603,937
योग (अ)		**443,434,673**	**334,995,666**
व्यय			
शैक्षिक व्यय	11	20,818,020	17,343,800
प्रशासनिक व्यय	12	52,964,513	71,837,119
कर्मचारी वेतन		161,789,542	143,965,184
अनुदान, सहायता राशि पर व्यय		–	8,445,161
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग *			
अचल परिसंपत्ति			
जीआइए		22,550,554	11,526,078
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग विकास कोष		–	3,533,753
कुल (बी)		**258,122,629**	**256,651,095**

व्यय पर अधिक आय का शेष (ए–बी)		185,312,045	78,344,571
विशिष्ट संचित निधि को प्रेषित		–	–
(प्रत्येक को विनिर्दिष्ट करें)			
संचित निधि को/से प्रेषित		–	–
प्रारंभिक रोकड़ आगे ले जाया गया		–	80,244,504
शेश (अधिशेष/घाटा) संग्रह/पूँजी में ले जाया गया		**185,312,045**	**158,589,075**
अर्थपूर्ण लेखा नीतियाँ	13		

* चालू वर्ष से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के लिए पृथक परियोजना खाता चालू रखा गया है और इसका विवरण अलग तालिका सं. 3 में उपलब्ध है

कृते अंबेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली

चंदन मुखर्जी
(प्रति कुलपति एवं वित्त नियंत्रक)

कृते कैलाश चंद जैन एंड कं.
चार्टर्ड एकाउंटेंट

अभिषेक जैन
साझेदार

तिथि : 04/07/2015
स्थान : दिल्ली

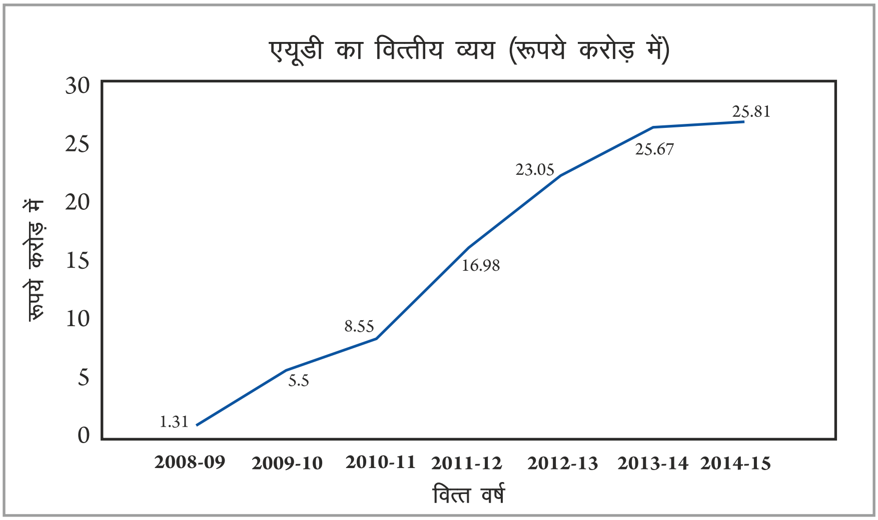
एयूडी का वित्तीय व्यय (रूपये करोड़ में)
रूपये करोड़ में
30
25
20
15
10
5
0
1.31
5.5
8.55
16.98
23.05
25.67
25.81
2008-09
2009-10
2010-11
2011-12
2012-13
2013-14
2014-15
वित्त वर्ष